कुरुक्षेत्र

ग्रामीण विकास को समर्पित

वर्ष 65 अंक : 6 पृष्ठ : 52 अप्रैल 2019 मूल्य : ₹22

ग्रामीण पर्यटन

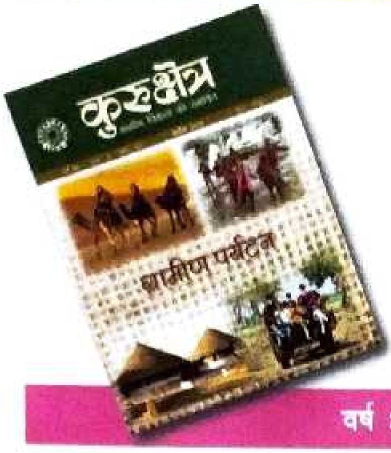

कुरुक्षेत्र

ग्रामीण विकास मंत्रालय की प्रमुख मासिक पत्रिका

वर्ष : 65★ मासिक अंक : 6★ पृष्ठ : 52 ★ चैत्र–वैशाख 1941★ अप्रैल 2019

प्रधान संपादक
शमीमा सिद्दीकी
वरिष्ठ संपादक
ललिता खुराना

संपादकीय पत्र–व्यवहार
संपादक
कमरा नं. 655, प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
सूचना भवन, सी.जी.ओ. काम्पलेक्स,
लोधी रोड, नई दिल्ली–110 0 03
दूरभाष : 011–24365925
वेबसाइट : publicationsdivision.nic.in
ई–मेल : kuru.hindi@gmail.com

संयुक्त निदेशक (उत्पादन)
विनोद कुमार मीना

व्यापार प्रबंधक

दूरभाष : 011–24367453
ई–मेल : pdjucir@gmail.com

आवरण
शिशिर कुमार दत्ता
सज्जा
मनोज कुमार

मूल्य एक प्रति	:	22 रुपये
विशेषांक	:	30 रुपये
वार्षिक शुल्क	:	230 रुपये
द्विवार्षिक	:	430 रुपये
त्रिवार्षिक	:	610 रुपये

इस अंक में

समृद्ध ग्रामीण धरोहर का परिचायक ग्रामीण पर्यटन — विकास रुस्तगी — 5

ग्रामीण पर्यटन: स्थानीय कला, संस्कृति एवं रोजगार को बढ़ाने में सहायक — डॉ. नीलेश कुमार तिवारी, डॉ. तुलिका शर्मा — 8

ग्रामीण पर्यटन का ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर प्रभाव — जसपाल सिंह, तनिमा दत्ता, अनुपमा रावत — 12

कृषि पर्यटन : अनुकूल दशाएं, अपार संभावनाएं — डॉ. जगदीप सक्सेना — 15

ग्रामीण भारत में इको पर्यटन — डॉ. के. एन. तिवारी — 19

अतुल्य नदी : अतुल्य गांव — अरुण तिवारी — 29

ग्रामीण पर्यटन का अर्थशास्त्र — शिशिर सिन्हा — 33

ग्रामीण क्षेत्रों में विकसित होता पर्यटन उद्योग — डॉ. नरेन्द्रपाल सिंह — 36

पूर्वोत्तर भारत में ग्रामीण पर्यटन की संभावनाएं — डॉ. मुकेश कुमार श्रीवास्तव — 39

ग्रामीण पर्यटन के विकास हेतु आधारभूत ढांचा — डॉ. सुरभि गौड़ — 45

ग्रामीण विरासत के विविध रंग — नवीन कुमार, पवन कुमार — 48

CHAHAL ACADEMY PVT. LTD.

कुरुक्षेत्र की एजेंसी लेने, ग्राहक बनने और अंक न मिलने की शिकायत के बारे में व्यापार प्रबंधक, (वितरण एवं विज्ञापन) प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, कमरा नं. 48–53, सूचना भवन, सी.जी.ओ. काम्पलेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली – 110003 से पत्र–व्यवहार करें। विज्ञापनों के लिए विज्ञापन प्रभाग, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, कमरा नं. 48–53, सूचना भवन, सी.जी.ओ. काम्पलेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली – 110003 से संपर्क करें।
दूरभाष : 011–24367453

कुरुक्षेत्र में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। यह आवश्यक नहीं कि सरकारी दृष्टिकोण भी वही हो। पाठकों से आग्रह है कि कैरियर मार्गदर्शक किताबों/संस्थानों के बारे में विज्ञापनों में किए गए दावों की जांच कर लें। पत्रिका में प्रकाशित विज्ञापनों की विषय–वस्तु के लिए 'कुरुक्षेत्र' उत्तरदायी नहीं है।

संपादकीय

भारत पर्यटन की दृष्टि से एक 'आदर्श' गंतव्य स्थल है। दुनिया में शायद ही कोई देश हो जहां इतनी भौगोलिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विविधता देखने को मिले। हरे-भरे खेत, बर्फ से ढकी हिमालय की चोटियां, घने जंगल, सुनहरे तट, रेतीले मरूस्थल भारत को सही मायने में 'अतुल्य' गंतव्य बनाते हैं।

हमारे गांव, देश की संस्कृति और परंपराओं का खज़ाना हैं। महानगरों की गहमा-गहमी से दूर गांवों में जीवन को सहज रूप से जीने का अवसर मिलता है जो किसी के भी मन में नई स्फूर्ति का संचार करता है। हमारी अनोखी कलाओं और शिल्प के सिद्धहस्त कलाकार और दस्तकार गांवों में ही निवास करते हैं। पर्यटन एक विस्तृत क्षेत्र है जिसमें कई तरह का पर्यटन शामिल होता है। मोटे तौर पर गांवों में इसके तहत दो तरह की गतिविधियां प्रमुख हैं। पहली, कृषि पर्यटन यानी वह सेटअप जिसमें पर्यटकों को खेती के तौर-तरीकों का अनुभव कराया जाता है और दूसरा, ग्रामीण पर्यटन जिसमें पर्यटकों को ग्रामीण जन-जीवन को महसूस करने का अवसर मिलता हैं।

ग्रामीण पर्यटन के विकास से ग्रामीण जन समुदाय अपने जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने में सक्षम हो सकता है। साथ ही, आजीविका के अधिक विकल्प, ग्रामीण समुदाय की आमदनी बढ़ाने और लुप्त होती जा रही ग्रामीण कला-विधाओं के संरक्षण में भी ग्रामीण पर्यटन मददगार है तथा ग्रामीण पर्यटन से गांव के लोग मेहमानों की संस्कृति के संपर्क में आते हैं जिससे उनकी जानकारियों का दायरा बढ़ता है। इस तरह, संस्कृति और परंपराओं के आदान-प्रदान में भी ग्रामीण पर्यटन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

पर्यटकों को नए तरह के अनुभव दिलाने में ग्रामीण पर्यटन बेहद उपयोगी है। यही नहीं, ग्रामीण पर्यटन स्थानीय उत्पादों के विपणन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है; गांव में ही रोजगार के नए अवसरों के सृजन से शहरों की ओर पलायन में कमी आती है और सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक धरोहरों का आर्थिक महत्व समझ आने पर उनका संरक्षण करने के प्रति जागरूकता भी बढ़ती है।

ग्रामीण भारत के पास लोगों को देने के लिए बहुत कुछ है। इन क्षेत्रों की पहचान करने और इस क्षेत्र में पर्यटन की संभावनाओं को खोजने के लिए केंद्र और राज्य सरकारों को एकजुट प्रयास करना होगा। इस क्षेत्र में सार्वजनिक-निजी भागीदारी के मॉडल पर आधारित कुछ सफल परियोजनाओं का भी अनुसरण किया जा सकता है। ग्रामीण पर्यटन को विकसित करने के लिए ग्रामीण युवक/युवतियों को 'आतिथ्य' के क्षेत्र में प्रशिक्षित करना होगा जिससे वे पर्यटकों से प्रभावी संवाद कर सकें। पर्यटकों के गांव में बिताए उनके पलों को 'यादगार' बनाने के हर संभव उपाय करने होंगे ताकि वह न केवल खुद बार-बार आएं बल्कि औरों को भी साथ लाएं।

ग्रामीण पर्यटन में निवेश केवल रोजगार एवं आमदनी बढ़ाने के तौर पर ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक विकास का भी एक प्रभावी माध्यम हो सकता है। हमारे देश में हर राज्य, क्षेत्र और गांव की अपनी भाषा, संस्कृति, परंपराएं, रीति-रिवाज़, वेशभूषा और खान-पान के तौर-तरीके हैं। गांवों का प्राकृतिक परिवेश और सहज-सरल जीवन पर्यटकों को आत्मिक आनंद देता है और उसे अपनी जड़ों से जुड़ने का एहसास होता है। यही अनुभव ग्रामीण पर्यटन को असीम संभावनाओं का क्षेत्र बनाता है। जरूरत है तो इन संभावनाओं को तलाशने और तराशने की।

समृद्ध ग्रामीण धरोहर का परिचायक ग्रामीण पर्यटन

–विकास रुस्तगी

भारत अपनी अनूठी सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रसिद्ध है, जिसमें उसकी शक्ति समाहित है। भारत पर्यटन और अपनी सांस्कृतिक संपदाओं के बीच के बुनियादी रिश्ते को अच्छी तरह समझता है। भारत में विभिन्न राज्यों में विभिन्न प्रकार के कला एवं शिल्प मिलते हैं। इन कलाओं एवं शिल्प को आधार बनाकर क्षेत्रों के संरक्षण, सुरक्षा और एकीकृत विकास से भारत में ग्रामीण तथा विरासत पर्यटन के विकास एवं प्रसार के अतिरिक्त मौके ही नहीं मिलेंगे बल्कि उन स्थानों पर जाने वाले देसी–विदेशी पर्यटकों को बेहतर अनुभव भी मिलेगा। पर्यटकों को नए सांस्कृतिक अनुभव प्रदान करने के लिए इन स्थानों को विकसित किया जा सकता है।

विचारों और धारणाओं के लिहाज से दुनिया भर का पर्यटन उद्योग तेजी से बदल रहा है। क्रयशक्ति में जबर्दस्त वृद्धि होने और यातायात के तेज तथा सस्ते साधन तैयार होने के कारण आज ज्यादा से ज्यादा लोग यात्रा कर रहे हैं। यात्रा का उद्देश्य अब आराम करने के साथ ही नई चीजों के बारे में जानना और संस्कृतियों, खानपान, परंपराओं आदि का अनुभव करना होता है। ऐसी यात्रा को 'अनुभवात्मक यात्रा या भ्रमण' कहते हैं।

समझदार पर्यटक अनूठा अनुभव हासिल करने के लिए और अपनी रूचि के हिसाब से आज दूरदराज तक और अनजाने स्थानों तक जाने के लिए तैयार हैं। पर्यटक जिम्मेदार यात्री बनने का, समुदाय को कुछ वापस देने का और मेजबान समुदाय के साथ संवाद बढ़ाने का प्रयास भी कर रहा है ताकि क्षेत्र के विकास में उसकी भी स्पष्ट हिस्सेदारी रहे।

हम जानते हैं कि भारत में पर्यटन के आकर्षण बहुत अधिक और विविधता भरे हैं। सबको समाहित करने वाली हमारी प्राचीन संस्कृति हमारा सबसे बड़ा आकर्षण है। शाश्वत प्रेम के प्रतीक ताजमहल से लेकर दक्षिण भारत के विशाल मंदिर, राजस्थान के शानदार किले, बर्फ से ढकी चोटियां, सुनहरे समुद्र तट, घने जंगल और विशाल रेगिस्तान मिलकर भारत को 'अद्‌भुत' स्थान बनाते हैं। किसी खास दिलचस्पी के साथ यात्रा करने वालों के लिए भी भारत में ढेरों उत्पाद हैं। चाहे चिकित्सा एवं आरोग्य पर्यटन हो, गोल्फ कोर्स हों या साहसिक खेल हों, भारत में सब कुछ है।

भारत अपनी अनूठी सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रसिद्ध है, जिसमें उसकी शक्ति समाहित है। भारत पर्यटन और अपनी सांस्कृतिक संपदाओं के बीच के बुनियादी रिश्ते को अच्छी तरह समझता है। भारत में विभिन्न राज्यों में विभिन्न प्रकार के कला एवं शिल्प मिलते हैं। इन कलाओं एवं शिल्प को आधार बनाकर क्षेत्रों के संरक्षण, सुरक्षा और एकीकृत विकास से भारत में ग्रामीण तथा विरासत पर्यटन के विकास एवं प्रसार के अतिरिक्त मौके ही नहीं मिलेंगे बल्कि उन स्थानों पर जाने वाले देसी–विदेशी पर्यटकों को बेहतर अनुभव भी मिलेगा। जो विरासत नजर आती है, वह तो भारत में पर्यटन विकास की मुख्यधारा में पहले से है, लेकिन जो

विरासत सामने नहीं दिखती, वह अमूर्त विरासत या धरोहर दुनिया भर के पर्यटकों के लिए ही नहीं बल्कि अपने नागरिकों के लिए भी पर्यटन के आकर्षणों में बहुत कुछ नया जोड़ सकती है। ऐसी अमूर्त धरोहर में लोककथाएं, व्यंजन, पारंपरिक प्रथाएं आदि आती हैं। भारत के कमोबेश सभी जिलों में ऐसी अमूर्त धरोहर पाई जाती हैं, जिन्हें पहचाना जा सकता है और पर्यटकों को नए सांस्कृतिक अनुभव प्रदान करने के लिए विकसित किया जा सकता है।

'असली भारत' के दर्शन आपको ग्रामीण जीवन में ही होते हैं। गांव देश की संस्कृति और परंपरा के भंडार भी हैं। बड़े शहरों की अफरा–तफरी से दूर गांव के धीमी रफ्तार वाले जीवन का अनुभव अनूठा होता है, जो किसी को भी नई स्फूर्ति से भर सकता है। गांवों और ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं में ऐसे अनूठे कलाकार और शिल्पकार भी होते हैं, जो शहरों में मुश्किल से मिल पाते हैं। लेकिन यह तो पता ही है कि ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकतर खेती करने वाले समुदाय ही होते हैं और कई बार वहां शहरों जितनी अच्छी आय भी नहीं होती है। अधिकतर गांवों में रोजगार के पर्याप्त मौके नहीं होते हैं और बेहतर अवसरों की तलाश में ढेरों युवक–युवतियां शहर की ओर पलायन कर रहे हैं। इसके कारण ग्रामीण समुदायों में मौजूद कई पारंपरिक कला–शिल्प धीरे–धीरे खत्म हो गए हैं।

ग्रामीण पर्यटन इन सभी प्रश्नों का उत्तर दे सकता है। ग्रामीण पर्यटन में इस बात पर जोर दिया जाता है कि पर्यटक ग्रामीण जीवनशैली में सक्रिय रूप से हिस्सा लें। पर्यटक किसी ग्रामीण स्थल पर पहुंचता है और गांव की रोजमर्रा की गतिविधियों में हिस्सा लेते हुए वहां के जीवन को महसूस करता है। पर्यटक को उस क्षेत्र की परंपराएं और संस्कृति अपनाने का मौका भी मिलता है। रात भर ठहरना भी ग्रामीण पर्यटन में शामिल हो सकता है, जिसमें यात्री को गांव की अनूठी जीवनशैली को करीब से जानने का मौका मिलता है। स्थानीय समुदाय को भी इसका फायदा मिलता है क्योंकि प्रायः खेती और मामूली कामकाज पर निर्भर लोगों को अपनी आय बढ़ाने का जरिया भी इससे मिलता है। वे पर्यटकों की संस्कृति को समझ भी सकते हैं और इस तरह अपने अनुभव तथा दायरे को बढ़ा सकते हैं। ग्रामीण पर्यटन में कई बार 'वॉलंटूरिज्म' भी शामिल होता है, जिसमें पर्यटक अपनी इच्छा से उस समुदाय के लिए कुछ करते हैं, जिसमें स्थानीय स्कूलों में पढ़ाना, कृषि गतिविधियों में हाथ बंटाना आदि शामिल हैं।

भारत की राष्ट्रीय पर्यटन नीति कहती है कि ग्रामीण पर्यटन तथा कम बसावट वाले उन इलाकों में पर्यटन पर विशेष जोर देना चाहिए, जहां अच्छी–खासी सांस्कृतिक तथा प्राकृतिक संपदा मौजूद हो। परिभाषा के अनुसार 'पर्यटन का जो रूप ग्रामीण जीवन, कला, संस्कृति और ग्रामीण स्थानों पर विरासत की झांकी दिखाता है, स्थानीय समुदाय को आर्थिक एवं सामाजिक लाभ प्रदान करता है तथा पर्यटन के अधिक समृद्ध अनुभव के लिए पर्यटकों एवं स्थानीय लोगों के बीच संवाद को बढ़ावा देता है, उसे 'ग्रामीण पर्यटन' कहते हैं।' ग्रामीण पर्यटन का यह विचार निश्चित रूप से भारत जैसे देश के लिए उपयोगी और महत्त्वपूर्ण है, जहां लगभग 74 प्रतिशत जनसंख्या करीब सात लाख गांवों में बसती है।

जागरूकता का बढ़ता–स्तर, विरासत एवं संस्कृति में बढ़ती दिलचस्पी, बेहतर पहुंच और पर्यावरण के प्रति समझ के कारण ग्रामीण पर्यटन के प्रति रुझान बढ़ता जा रहा है। विकसित देशों में इसके कारण पर्यटन की नई शैली ने जन्म लिया है, जिसमें तनावमुक्त और स्वस्थ जीवनशैली का अनुभव करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों की यात्रा की जाती है। ग्रामीण पर्यटन का विचार इसी से पनपा है। ग्रामीण पर्यटन को अनुभवात्मक पर्यटन का मौका मुहैया कराने तथा पर्यटन में विविधता लाने और ग्रामीण समुदायों के आय का स्तर बढ़ाकर उनकी मदद करने एवं कला के खत्म होते स्वरूपों को बचाने का प्रभावी रूप माना गया है।

देश में ग्रामीण पर्यटन की संभावना को पहचानते हुए ग्रामीण परिपथ (सर्किट) को 13 विषय–आधारित सर्किटों में चुना है, जिनके जरिए देश की यात्रा करने वाले यात्रियों को अनूठा अनुभव प्रदान किया जाता है और देश के सुदूर इलाकों में स्थित कम

मशहूर स्थानों का विकास किया जाता है। बिहार में भितिहरवा, चंद्रहिया और तुरकौलिया एवं केरल में मालानाड, मालाबार क्रूज का विकास ग्रामीण सर्किट थीम के तहत किया जा रहा है। इससे स्थानीय समुदायों की सक्रिय सहभागिता के जरिए रोजगार के सृजन एवं समुदाय आधारित विकास तथा गरीब–केंद्रित पर्यटन को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी।

अब ग्रामीण पर्यटन मॉडल की सफलता की कई कहानियां हैं और परियोजनाएं आर्थिक रूप से व्यावहारिक हो गई हैं, जिनमें गुजरात के होडका गांव में शाम–ए–सरहद परियोजना शामिल है। शाम–ए–सरहद पर्यटक शिविर है, जो होडका समुदाय द्वारा बनाया गया है, उसी के अधीन है और वही उसका प्रबंधन भी करता है। पर्यटन आजीविका के और भी विकल्प तैयार कर समुदाय को अपना जीवन–स्तर बेहतर बनाने में मदद करता है और उन्हें अपनी अनूठी संस्कृति को बचाने तथा और विकसित करने का मौका भी प्रदान करता है।

इस विचार को अब कई राज्यों ने अपना लिया है। ग्रामीण पर्यटन का मॉडल विकसित करने और जिम्मेदारी भरे पर्यटन (रिस्पॉन्सिबल टूरिज्म) के अंतर्गत उसे तैयार करने में केरल सबसे आगे रहा है। कुमारकोम, वायनाड और अन्य स्थानों पर केरल की रिस्पॉन्सिबल टूरिज्म परियोजना को पुरस्कार मिले हैं। इनमें स्थानीय समुदायों को साथ रखा जाता है और पर्यटकों को गांव के जीवन का अनुभव दिलाने के लिए स्थानीय साझेदार ही किस्सागो का काम करते हैं। इससे उन ग्रामीणों में गर्व की भावना बढ़ती है, जो पारंपरिक जीवनशैली को छोड़कर शहर का रुख कर चुके थे।

सफलता की ऐसी ही कहानी सिक्किम में भी है, जिसने कई ग्रामीण समुदायों को होम स्टे (जिसमें पर्यटक स्थानीय निवासियों के घरों में ही ठहरते हैं) समेत पर्यटन के ऐसे अनुभव विकसित करने में मदद की है, जिनसे पर्यटन पारंपरिक स्थानों तक सीमित नहीं रहता बल्कि पूरे राज्य में फैलता है। इससे पर्यटन उत्पादों की क्षमता बढ़ाने में भी मदद मिलती है। सिक्किम भारत का पहला जैविक राज्य है और यह विशेषता भी उसकी ग्रामीण पर्यटन योजनाओं को बढ़ावा दे रही है। विकास के ऐसे मॉडल में समुदाय एकदम जमीनी–स्तर से ही जुड़े रहते हैं और समूची प्रक्रिया में हर किसी की बराबर की हिस्सेदारी होती है।

राजस्थान में समोद और मांडवा जैसी परियोजनाएं सार्वजनिक–निजी मॉडल पर चल रही हैं। महाराष्ट्र में गोवर्धन पर्यावरण ग्राम ऐसी ही योजना है, जिसे नवाचार के लिए यूएनडब्ल्यूटीओ यूलिसिस अवार्ड भी प्राप्त हुआ। संस्था ने गांव को ऐसे समुदाय में विकसित कर दिया है, जिसका यात्रियों के साथ सहजीवी संबंध है और जिसने समुदाय की सहभागिता भी बढ़ाई है तथा किसी समय पिछड़ा कहलाने वाले इस क्षेत्र में आय का स्तर एवं शिक्षा बढ़ाने में भी मदद की है।

इसलिए देश भर में ग्रामीण पर्यटन तथा ग्रामीण जीवन अनुभव के विचार के लिए विकास की असीम संभावना है। लेकिन कुछ चुनौतियां अब भी बाकी हैं। उनमें से प्रमुख चुनौती मार्केटिंग की है। समुदायों के पास अपने उत्पादों की मार्केटिंग राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय–स्तर पर करने के जरिए बहुत कम हैं। मार्केटिंग के पर्याप्त बुनियादी ढांचे की कमी के कारण ऐसी परियोजनाएं बहुत अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सकी हैं, जो पारंपरिक पर्यटन सर्किटों से अच्छी तरह नहीं जुड़ी हैं। प्रचार गतिविधियों के अंतर्गत प्रदर्शनियों में हिस्सा लेकर तथा रोड शो आयोजित कर व्यापार एवं उपभोक्ताओं के बीच ग्रामीण पर्यटन समेत विभिन्न उत्पादों एवं स्थानों के बारे में जागरूकता उत्पन्न की जा सकती है।

भारत की समृद्ध, ऐतिहासिक, धार्मिक एवं प्राकृतिक धरोहर देश के भीतर पर्यटन के विकास एवं रोजगार सृजन की अकूत संभावनाएं प्रदान करती हैं तथा ऐसे में महात्मा गांधी की यह बात एकदम सटीक बैठती है कि "यदि भारत के गांव नष्ट होते हैं तो भारत भी नष्ट हो जाएगा"। इसलिए गांवों को बढ़ावा देना तथा अपनी भावी पीढ़ियों के लिए सरल जीवनशैली संजोकर रखना हमारे लिए जरूरी है। ग्रामीण पर्यटन उस परंपरा को जीवित रखने में बड़ी भूमिका निभाता है।

(लेखक भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय में संयुक्त महानिदेशक हैं।)
ई–मेल : rastogi@nic.in

ग्रामीण पर्यटन: स्थानीय कला, संस्कृति एवं रोजगार को बढ़ाने में सहायक

–डॉ. नीलेश कुमार तिवारी, डॉ. तुलिका शर्मा

पर्यटन का देश के सामाजिक–आर्थिक विकास के साथ गहरा संबंध है। पर्यटन क्षेत्र में राजस्व–पूंजी का अनुपात अत्याधिक है। पर्यटन क्षेत्र में प्रत्येक दस लाख रुपये के निवेश से प्रत्यक्ष रूप से 47 नौकरियों व परोक्ष रूप से 11 नौकरियों का सृजन होता है। एक शोध अध्ययन से यह पता चलता है कि भारत में पर्यटन क्षेत्र का गुणक–प्रभाव (मल्टीप्लायर इफेक्ट) 3.2 है। अर्थात पर्यटन क्षेत्र में प्रत्येक एक रुपये के निवेश से तीन गुना से अधिक राजस्व अर्जित हो सकता है।

भारत में पर्यटन को ग्रामीण जीवन, कला, एवं सांस्कृतिक विरासत से जोड़कर देखा जाता रहा है जिससे किसी भी स्थान के स्थानीय लोगों व समुदायों को आर्थिक और सामाजिक लाभ हो सके। वहीं दूसरी तरफ, पर्यटकों एवं स्थानीय लोगों के बीच परस्पर सौहार्दपूर्ण अनुभव व मित्रवत संबंध विकसित होकर सकारात्मक एवं आनंददायक वातावरण निर्माण को भी पर्यटन के अभिन्न अंग के रूप में देखा जाता रहा है। यूं कहें तो भारतवर्ष की 'अतिथि देवो भवः' की लोकमान्यता जिसमें अतिथियों– देश व विदेश, दोनों ही को, भगवान के रूप में माना जाता रहा है जिससे अतिथियों के पर्यटन का अनुभव बेहतर हो सके।

आज की तेज रफ्तार सूचना प्रौद्योगिकी वाली दुनिया में प्रतिस्पर्धात्मक एवं उच्च–महत्वाकांक्षी गुणवत्तापूर्ण जीवन की लालसा के बीच में पर्यटन एक बहुत ही महत्वपूर्ण क्षेत्र बनता जा रहा है। पर्यटन न केवल राष्ट्रीय एकता और भाईचारे को बढ़ावा देता है अपितु अंतर्राष्ट्रीय संबंधों एवं कूटनीति के साथ–साथ किसी भी देश या राज्य की सॉफ्ट पॉवर (विनम्रता शक्ति) को भी प्रभावशाली बनाता है।

पर्यटन सामान्य एवं विशेष, दोनों ही प्रकार के व्यक्तियों, वस्तुओं, स्थलों एवं विभिन्न गतिविधियों को जीवंत रूप से जानने और समझाने का एक बेहतरीन माध्यम है। वहीं दूसरी ओर, जब हम ग्रामीण पर्यटन के बारे मे सोचते हैं तो 131 करोड़ जनसंख्या वाले विशालकाय भारत जैसे देश की 'अनेकता में एकता' वाली तस्वीर साफ नजर आती है। साथ ही, कहावत यह भी है कि वास्तविक भारत गांवों में बसता है, जहां विभिन्न प्रकार की लोककलाएं संस्कृतियां धरोहर के रूप में पाई जाती हैं; चाहे वह बोलचाल या रहन–सहन या खान–पान या फिर पहनावे–ओढ़ने इत्यादि से

आरेख–1: उद्देश्य व प्रकृति के अनुसार पर्यटन

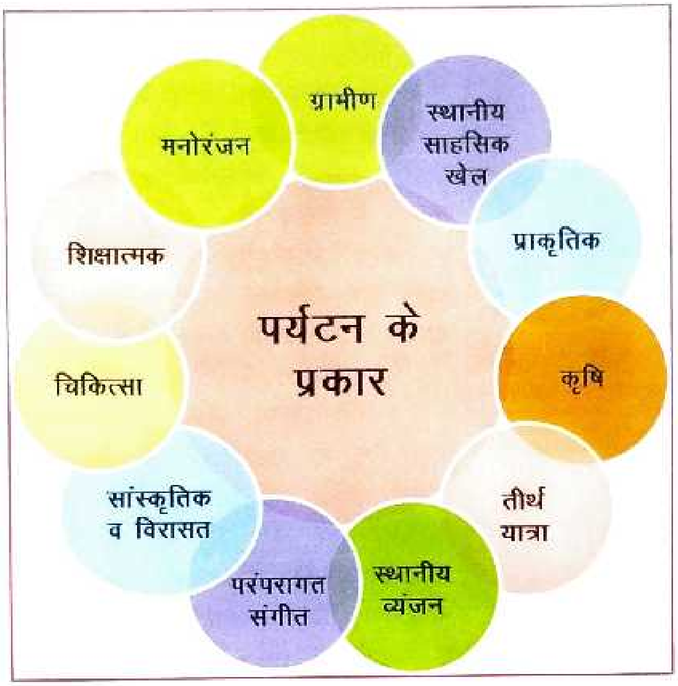
पर्यटन के प्रकार
ग्रामीण
स्थानीय साहसिक खेल
प्राकृतिक
कृषि
तीर्थ यात्रा
स्थानीय व्यंजन
परंपरागत संगीत
सांस्कृतिक व विरासत
चिकित्सा
शिक्षात्मक
मनोरंजन

संबंधित हों। अतः पर्यटन विशेषकर ग्रामीण पर्यटन जनमानस के साथ–साथ देश, काल, कला एवं संस्कृतियों को एक–दूसरे से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

पर्यटकों में ग्रामीण पर्यटन के प्रति आकर्षण के प्रमुख उत्प्रेरक

- प्रतिस्पर्धात्मक आधुनिक शहरी जीवनशैली एवं मानसिक तनाव।
- प्राकृतिक वातावरण, शुद्ध हवा, पानी एवं रसायनरहित कृषि भोजन उत्पाद।
- लोककला एवं संस्कृति के प्रति आकर्षण।
- उद्यमिता, रोजगार, स्वरोजगार एवं आजीविका के नए अवसरों का सृजन।
- ग्रामीण कला और शिल्प का संरक्षण एवं विकास।
- गरीबी उन्मूलन, सामुदायिक विविधिकरण एवं सामाजिक भाईचारा।
- युवाओं को आजीविका के नए अवसर।

पर्यटन के उद्देश्यानुसार वर्गीकरण

पर्यटन की प्रकृति एवं उद्देश्य के अनुसार पर्यटन के कई आयाम है जिन्हें आरेख–1 के माध्यम से समझा जा सकता है। यहां महत्वपूर्ण विषय यह है कि पर्यटन हमेशा एक निश्चित उद्देश्य से प्रेरित होता है। वहीं दूसरी ओर, ग्रामीण पर्यटन भांति–भांति के व्यक्तियों, वस्तुओं, कलाओं एवं संस्कृतियों के परस्पर आदान–प्रदान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जबकि सांस्कृतिक पर्यटन जनमानस की ऐतिहासिक रीतियों–रिवाजों और परंपराओं को पर्यटकों के समक्ष मनमोहक रूप मे अभिव्यक्ति का कार्य करते हैं। वहीं संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (यूएनडब्ल्यूटीओ) के अनुसार, सांस्कृतिक पर्यटन का वृहद् दायरा लिया गया है। इसके अंतर्गत व्यक्तियों का विभिन्न सांस्कृतिक लालसाओं की पूर्ति करने जैसे प्रदर्शन कला व त्यौहारों के बारे में जानकारी, सांस्कृतिक कार्यक्रम, स्थलों और स्मारकों की यात्राएं, प्रकृति, लोककथाओं व तीर्थयात्राओं का अध्ययन करने की यात्रा शामिल है।

'अनेकता में एकता वाले' भारत देश के विभिन्न गांवों में विविध प्रकार की लोककलाओं एवं सांस्कृतिक धरोहरों को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। वहीं दूसरी ओर, वैश्वीकरण, आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग ने ग्रामीण पर्यटन में समरसता, रोमांचकता एवं उत्सुकता को बढ़ाने का कार्य किया है।

भारत में पर्यटन प्रोत्साहन एवं प्रबंधन

आज़ादी के बाद से ही भारत में पर्यटन को प्रोत्साहन देने के लिए विभिन्न नीतिगत उपाय किए गए जिनके अंतर्गत समग्र सामाजिक–आर्थिक विकास पर जोर दिया गया। इसके साथ ही यह भी सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया कि पर्यटन के माध्यम से ग्रामीण पिछड़े क्षेत्रों में सामाजिक परिवर्तन हो सके।

भारत के विभिन्न राज्यों में पर्यटन विशेषकर ग्रामीण पर्यटन को प्रोत्साहन देने एवं उनके समग्र बेहतर प्रबंधन के द्वारा पर्यटन क्षेत्र को नई दिशा एवं दशा देने हेतु नीतिगत कदम उठाए गए हैं। ग्रामीण पर्यटन का सामाजिक–आर्थिक एवं पर्यावरणीय रूप से समग्र विकास में योगदान को आरेख–2 के माध्यम से समझा जा सकता है।

पर्यटन धूम्ररहित उद्योग होने के कारण स्थानीय रचनात्मक

आरेख–2: ग्रामीण पर्यटन का योगदान

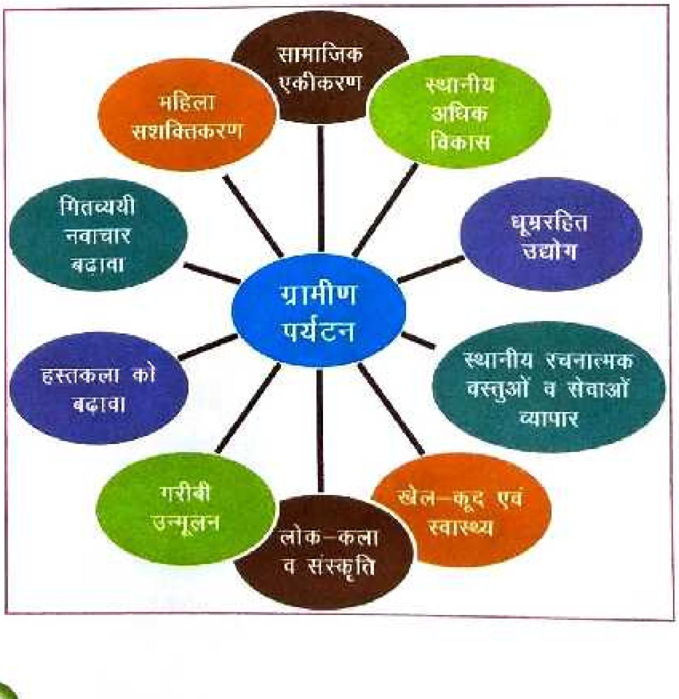
ग्रामीण पर्यटन
सामाजिक एकीकरण
स्थानीय अधिक विकास
धूम्ररहित उद्योग
स्थानीय रचनात्मक वस्तुओं व सेवाओं व्यापार
खेल–कूद एवं स्वास्थ्य
लोक–कला व संस्कृति
गरीबी उन्मूलन
हस्तकला को बढ़ावा
मितव्ययी नवाचार बढ़ावा
महिला सशक्तिकरण

तालिका–1: भारत एवं विश्व में पर्यटन की प्रवृत्ति

वर्ष	विदेशी पर्यटक आगमन (दस लाख में)		विदेशी मुद्रा आय, (यू०एस० मिलियन डॉलर में)	भारत में पर्यटन से विदेशी मुद्रा आय (रु करोड़)	भारत से प्रस्थान	घरेलू पर्यटक दौरा
	विश्व में	भारत में				
2000	683.3	2.65	3460	15626	4.42	220.11
2001	683.4	2.54	3198	15083	4.56	236.47
2002	703.2	2.38	3103	15064	4.94	269.6
2003	691	2.73	4463	20729	5.35	309.04
2004	762	3.46	6170	27944	6.21	366.27
2005	803.4	3.92	7493	33123	7.18	392.04
2006	846	4.45	8634	39025	8.34	462.44
2007	894	5.08	10729	44362	9.78	526.7
2008	917	5.28	11832	51294	10.87	563.03
2009	883	5.17	11136	53754	11.07	668.8
2010	948	5.78	14490	66172	12.99	747.7
2011	994	6.31	17707	83036	13.99	864.53
2012	1039	6.58	17971	95607	14.92	1045.05
2013	1087	6.97	18397	107563	16.63	1142.53
2014	1137	7.68	19700	120367	18.33	1282.8
2015	1195	8.03	21013	134844	20.38	1431.97
2016	1239	8.80	22923	154146	21.87	1615.39
2017	1323	10.04	27310	177874	23.94	1652.49
चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (2000–17) (प्रतिशत में)	9.90	20.96	34.33	41.55	27.30	33.37

स्रोत: भारत पर्यटन सांख्यिकी–2018, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

वस्तुओं जैसे विभिन्न हस्तकला के उत्पादों एवं सेवाओं के साथ–साथ लोककला एवं मितव्ययी नवाचार को भी बढ़ावा देता है। इसके साथ पर्यटन ग्रामीण क्षेत्रों में, विशेषकर महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण के अलावा सामाजिक एकीकरण व गरीबी उन्मूलन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यहां ग्रामीण पर्यटन का एक बहुत ही रोमांचक और महत्वपूर्ण पहलू हैं। स्थानीय खेलकूद एवं गतिविधियां, जो पर्यटकों की शारीरिक एवं मानसिक मनोदशा को झकझोर कर पुनः उन्हें उन स्थलों को अत्यधिक अन्वेषण हेतु प्रेरित करती है।

ग्रामीण पर्यटन: स्थानीय कला एवं सांस्कृतिक विरासत

ग्रामीण पर्यटन स्थानीय कला एवं सांस्कृतिक धरोहर को वैश्विक–स्तर तक पहचान बनाने यानी 'लोकल टू ग्लोबल' प्रक्रिया में अत्यंत सहायक होता है। इसके साथ–साथ ग्रामीण पर्यटन राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय एकीकरण, विचारों, अनुभवों, लोकनृत्य एवं कलाओं के आदान–प्रदान का महत्वपूर्ण साधन बनते हैं। ग्रामीण भारत के विभिन्न क्षेत्रों की कलाओं को तालिका–2 के माध्यम से समझा जा सकता है।

ग्रामीण भारत के विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त सांस्कृतिक विरासत को तालिका–3 के माध्यम से समझा जा सकता है।

ग्रामीण पर्यटन एवं आजीविका

पर्यटन, मुख्य रूप से न केवल सेवा क्षेत्र में आजीविका के अवसर का सृजन पैदा करने में सहायक होता है अपितु यह कृषि एवं संबंधित क्षेत्र के साथ–साथ विनिर्माण क्षेत्र के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पर्यटन का देश के सामाजिक–आर्थिक विकास के साथ गहरा संबंध है। पर्यटन क्षेत्र में राजस्व–पूंजी का अनुपात अत्याधिक है। पर्यटन क्षेत्र में प्रत्येक दस लाख रुपये के निवेश से प्रत्यक्ष रूप से 47 नौकरियों व परोक्ष रूप से 11 नौकरियों का सृजन होता है। एक शोध अध्ययन से यह पता चलता है कि भारत में पर्यटन क्षेत्र का गुणक–प्रभाव (मल्टीप्लायर इफेक्ट) 3.2 है (शर्मा, 2014)। अर्थात पर्यटन क्षेत्र में प्रत्येक एक रुपये के निवेश से तीन गुना से अधिक राजस्व अर्जित हो सकते हैं। वहीं दूसरी तरफ, ग्रामीण पर्यटन विदेशी मुद्रा विनिमय, आय अर्जन, व्यापार संतुलन और क्षेत्रीय असमानता को मिटाने व सामाजिक–आर्थिक विकास में सहायक होता है।

पर्यटन पूंजी–प्रधान तो है ही परंतु अधिक श्रम–प्रधान क्षेत्र होने के कारण, भारत जैसे विकासशील देशों में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से बड़े पैमाने पर रोजगार उत्पन्न करने की क्षमता रखता है। यह रोजगार, स्वरोजगार, उद्यमिता को बढ़ावा देकर लगभग सभी क्षेत्रों में जैसे परिवहन, होटल एवं आतिथ्य, खुदरा व्यापार, कृषि, वित्तीय सेवाओं एवं अन्य सेवाओं के माध्यम से आजीविका के नए अवसर का सृजन करने में सहायक होता है। पर्यटन किसी भी देश के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में एक इंजन की भूमिका निभाने वाले स्रोत के रूप में कार्य करता है जिससे रोजगार, स्वरोजगार, उद्यमिता और विदेशी मुद्रा से आय होती है।

ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु सुझाव

- ग्राम पंचायतों को पर्यटन से संबंधित विषयों पर जानकारी प्रदान कर ग्राम पंचायत विकास योजनाओं (जीपीडीपी) के माध्यम से पर्यटन को प्रोत्साहन।
- पर्यटन स्थल की उनकी विशेषतानुसार ब्रांडिंग (अलग पहचान), विशेषतानुसार चित्रण (पोजिशनिंग) और लक्ष्यीकरण (टार्गेटिंग) पर जोर।
- सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से स्थानीय लोगों एवं युवाओं के पर्यटन संबंधी कौशल उन्नयन पर विशेष जोर।

तालिका–2: ग्रामीण पर्यटन स्थल एवं प्रसिद्ध कला/कलाकारी

क्र. सं.	कला/कलाकारी	ग्रामीण क्षेत्र
1	पोचमपल्ली साड़ी या इकत (सूती व रेशम)	यदाद्री भुवनगिरी जिला, तेलंगाना
2	हस्तशिल्प–बांस की बेंत इत्यादि	रेंगो पूर्वी सियांग, अरुणाचल प्रदेश
3	दर्पण (शीशा) कार्य/डाई	होडका, कच्छ, गुजरात
4	टोपी और शॉल बुनाई	नग्गर, कुल्लू, हिमाचल प्रदेश
5	पत्थर की मशीनरी, लकड़ी पर नक्काशी और संगीत वाद्ययंत्र	बनवासी, उत्तरी कन्नड़, कर्नाटक
6	फाइबर शिल्प– फल केले से संबंधित	अनीगुंडी (पहले किष्किंधा नाम से प्रसिद्ध, कोप्पल जिला, कर्नाटक)
7	लैंटना शिल्प	चौगन, मंडला, मध्य प्रदेश
8	चंदेरी साड़ी	प्राणपुर, अशोकनगर, मध्य प्रदेश
9	लकड़ी और पत्थर का शिल्प	सोंधा, दतिया, मध्य प्रदेश
10	शाल बुनाई	मोकोकचुंग, नगालैंड
11	पाषाण शिल्प और पट्टचरित्र	रघुराजपुर, पुरी, ओड़िशा
9	कालीन	लाचेन, उत्तरी सिक्किम
10	शाल बुनाई	मोकोकचुंग, नगालैंड
11	पाषाण शिल्प और पट्टचरित्र	रघुराजपुर, पूरी, ओड़िशा
12	साड़ी बुनाई	मुकुटमणिपुर, बांकुरा, पश्चिम बंगाल

स्रोत: पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

तालिका–3: ग्रामीण पर्यटन एवं सांस्कृतिक विरासत

क्र. सं.	सांस्कृतिक स्थल/विशेषता	क्षेत्र
1	'ईश्वर की अपनी रचना' नाम से प्रसिद्ध– कोनसीमा गोदावरी नदी डेल्टा क्षेत्र (तटीय पारिस्थितिकी पर्यटन)	पूर्वी गोदावरी, आंध्र प्रदेश
2	पुट्टपर्ती– आध्यात्मिक	अनंतपुर, आंध्र प्रदेश
3	देहिंग पटकाई क्षेत्र– संस्कृति और पर्यावरण पर्यटन	तिनसुकिया, असम
4	बाबा बरोह– गुरुकुल संस्कृति	कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश
5	मोराची चिंचोली– सूफी परंपरा और संस्कृति	पुणे, महाराष्ट्र
6	लोक नृत्य– मुखराई, मथुरा	उत्तर प्रदेश

स्रोत: पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

- निजी क्षेत्र को स्थानीय प्रशासन के साथ मिलकर 'कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी' (सीएसआर) के अंतर्गत पर्यटन प्रोत्साहन संबंधी विभिन्न पहलों जैसे साहसिक खेल–कूद, व्यापार मेला, संगीत, कला, भोजन महोत्सव (फूड फेस्टिवल) इत्यादि के आयोजन हेतु प्रेरित करना।
- गांवों को शहरों से जोड़ती मूलभूत बुनियादी अधोसंरचनाएं विकसित करने पर जोर।
- जनजातीय क्षेत्रों में पर्यटन को प्रोत्साहित करने हेतु सभी हितग्राहियों का एकीकृत रूप से प्रयास।
- रोजगार, स्वरोजगार एवं उद्यमिता को बढ़ावा देने हेतु निवेश आकर्षित करने पर जोर।
- पर्यटन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले व्यक्तियों, संस्थाओं एवं अन्य को प्रोत्साहित करने हेतु उत्कृष्टता पुरस्कार प्रदान करना।
- पर्यटकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के प्रयास।
- पर्यटन क्षेत्र में सूचना–संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) को बढ़ावा।
- पर्यटकों के अनुभव को समझकर सेवाओं व सुविधाओं की गुणवत्ता में सुधार करना।
- स्थानीय गतिविधियों जैसे साहसिक खेलकूद, प्रकृति पर्यटन, मेलों और त्यौहारों के माध्यम से पर्यटन को बढ़ावा।
- छोटे और मध्यम स्तर के उद्यमों को पर्यटकों को आकर्षित करने वाले उत्पाद व सेवाएं प्रदान करने हेतु प्रेरित करना।
- स्थानीय नौकरी और आय सृजन पर जोर, महिलाओं और युवाओं के लिए विशेष विचार (पर्यावरण संरक्षण आदि)

(लेखक बस्तर विश्वविद्यालय (छत्तीसगढ़) में सहायक प्रोफेसर हैं।)

ई–मेल: **nileshtiwariprsu@gmail.com**

ग्रामीण पर्यटन का ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

–जसपाल सिंह, तनिमा दत्ता, अनुपमा रावत

ग्रामीण पर्यटन का प्रारंभ केवल पर्यटन और रोजगार को बढ़ावा देने के लिए नहीं किया गया। अपितु गांव को स्वावलंबी बनाने हेतु और धारणीय विकास के लिए किया गया। अधिकांश ग्रामीण पर्यटन स्थल यूएनडीपी के एनडोजेनस टूरिज्म प्रोजेक्ट के अंतर्गत लिए गए जिससे बड़े पैमाने पर निवेश आया है। इस परियोजना से स्थानीय विरासत और संस्कृति को बल मिला है और साथ ही ग्रामीण लोगों का अपनी सभ्यता और संस्कृति से पुर्नपरिचय भी हुआ है।

महात्मा गांधी जी ने कहा था कि भारत गांवों में बसता है। उनका मानना था कि अर्थव्यवस्था गांव–उन्मुखी होनी चाहिए। परंतु उनके इस विचार का विरोधाभास यह है कि किसी भी राष्ट्र के विकास का एक मानक शहरीकरण होता है। विगत कई दशकों से शहरीकरण को बढ़ावा दिया जा रहा है और बड़ी संख्या में लोगों का गांव से शहर की ओर पलायन हो रहा है। शहरीकरण अपने साथ कई प्रगति के आयाम लाता है जैसे बेहतर जीवन–स्तर और अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर में सुधार, परंतु इन लाभों के साथ कई दोष भी उत्पन्न होते हैं जो अब भारतीय अर्थव्यवस्था में स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगे हैं। एक महत्वपूर्ण दुष्प्रभाव यह है कि वर्तमान समय में लोगों का तनाव बढ़ गया है और प्रतिदिन वे तनाव–मुक्त होने के लिए नए रास्ते खोज रहे हैं। तनाव–मुक्त होने के लिए पर्यटन या छुट्टियां उन्हें एक सटीक अवसर प्रदान करते हैं। पर्यटन का एक मानवीय पहलू है, परंतु इसके आर्थिक प्रभाव को अनदेखा नहीं किया जा सकता है।

प्रारंभिक दौर में जिन स्थानों का ऐतिहासिक महत्व था, वे पर्यटन–स्थल के रूप में विकसित हुए और परिणामस्वरूप आर्थिक रूप से भी विकसित हो गए। जैसेकि गोवा, राजस्थान, केरल, जम्मू और कश्मीर और हिमाचल प्रदेश जैसे राज्य आर्थिक रूप से मुख्यतः पर्यटन पर निर्भर हैं। प्रशासन ने भी इस बात को समझ लिया है इसलिए ऐसी नीतियां बना रहे हैं जो पर्यटन को बढ़ावा दे सकें। ग्रामीण पर्यटन एक नीतिगत निर्णय है जहां ग्रामीण क्षेत्रों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाएगा। भारत के लिए यह एक नया विचार है, परंतु विश्व–स्तर पर यह अवधारणा सत्तर के दशक में ही आ गई थी। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है, क्योंकि कृषि पर अत्यधिक निर्भरता है जिस कारण कई नई समस्याएं जन्म ले रही हैं। ऐसी अवस्था में ग्रामीण पर्यटन महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में ग्रामीण पर्यटन के प्रभाव का विश्लेषण करने से पूर्व 'ग्रामीण' और 'ग्रामीण पर्यटन' शब्दों को परिभाषित करना महत्वपूर्ण है। विभिन्न देशों के लिए ग्रामीण शब्द का अर्थ अलग है और इसको लेकर सामंजस्य नहीं बन पाया है। व्यापक

रूप से वह स्थान गांव हैं जहां जनसंख्या घनत्व कम है, बडे–खुले खेत हैं, प्रदूषण का स्तर कम है और तकनीकी हस्तक्षेप कम है। भारत में 2011 की जनगणना के अनुसार, वह क्षेत्र ग्रामीण है जहां की जनसंख्या 10,000 से कम है। इस सर्वे के अनुसार भारत में 7 लाख गांव हैं जहां 74 प्रतिशत आबादी रहती है। साथ ही, जनसंख्या का 62 प्रतिशत कृषि पर आधारित है।

'ग्रामीण पर्यटन' वह पर्यटन है जो ग्रामीण जीवनशैली, वहां की संस्कृति, परंपरा, लोक साहित्य, हस्तशिल्प और विरासत को दर्शाता है। इसके अंतर्गत कृषि पर्यटन, पर्यावरणीय पर्यटन, एडवेंचर स्पोर्ट्स और सांस्कृतिक पर्यटन शामिल हैं। इसका मुख्य उद्देश्य लोगों का ग्रामीण जीवन से परिचय कराना और विभिन्न आयाम बताना है। यह उन लोगों के लिए महत्वपूर्ण है जो पीढियों से शहर में रह रहे हैं और जड़ों से जुड़ना चाहते हैं। कम प्रदूषण, कम आबादी, प्राकृतिक वस्तुएं, कम तकनीकी आदि कुछ ऐसी विशेषताएं हैं जो लोगों को ग्रामीण पर्यटन की ओर आकर्षित करती हैं।

अर्थव्यवस्था और पर्यटन

2017 में पर्यटन का सकल घरेलू उत्पाद में 3.7 प्रतिशत प्रत्यक्ष योगदान था जो 2018 में 7.6 प्रतिशत की दर से बढ़ा और वर्ष 2020 तक यह संभावना है कि यह सकल घरेलू उत्पाद का 3.9 प्रतिशत हो जाएगा। यदि पूर्ण योगदान की बात की जाए तो यह 2017 में 9.4 प्रतिशत था जो 2018 में 7.5 प्रतिशत की दर से बढा (अनुमानित) और 2028 में सकल घरेलू उत्पाद का 6.9 प्रतिशत होने की संभावना है। रोजगार के दृष्टिकोण से देखा जाए तो 5 प्रतिशत रोजगार केवल पर्यटन से आया है जो 2018 में 2.8 प्रतिशत की दर से बढ़ा है और 2028 तक यह 2.1 प्रतिशत की दर से बढेगा। इस क्षेत्र की क्षमता का पता इस बात से चलता है कि 2017 में 1.08 करोड़ विदेशी यात्री भारत आए जो 2016 की तुलना में 15.6 प्रतिशत अधिक हैं। 2016 में घरेलू पर्यटकों की संख्या 161.36 करोड़ थी। 2017 में कुल मुद्रा आय 1,80,379 करोड़ थी जो 2016 की तुलना में 17 प्रतिशत आधिक थी।

राजस्थान और केरल ग्रामीण पर्यटन केंद्रों के विकास में अग्रणी रहे हैं। विभिन्न राज्यों में उन गांवों को ग्रामीण पर्यटन केंद्र बनाने हेतु चुना गया जहां का खान–पान, कला, पर्यावरण महत्वपूर्ण अथवा आकर्षक थे; साथ ही, ऐतिहासिक स्थल तथा वे गांव जहां एडवेंचर स्पोर्ट्स की क्षमता थी। जम्मू और कश्मीर में सर्वाधिक 26 गांवों को ग्रामीण पर्यटन विकास हेतु चुना गया। आर्थिक रूप से यह गाव विकसित थे क्योंकि इनके पास पृथक कला और संस्कृति थी परंतु पर्यटन के कारण यह गांव विश्व के मानचित्र में आ गए हैं जिस कारण इन गांवों में तेजी से आर्थिक उन्नति हुई है। इन गांवों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने हेतु यहां की आधारभूत संरचना जैसे ऊर्जा, सड़क, स्वास्थ्य, साफ–सफाई आदि को भी विकसित किया गया जिनके परिणाम दूरगामी हैं। किसी भी गांव का पर्यटन–स्थल के रूप में विकास होने पर वहां से पलायन में भी कमी आती है।

जिन राज्यों में पारंपरिक पर्यटन स्थल अधिक हैं वहां ग्रामीण पर्यटन स्थल कम हैं जैसे– राजस्थान और महाराष्ट्र। उत्तर–पूर्व के राज्यों में ग्रामीण पर्यटन स्थलों की संख्या अधिक है जिनका चुनाव पर्यावरणीय सुंदरता और हस्तशिल्प के आधार पर किया गया है। यह राज्य मुख्यतः महिला प्रधान हैं अतः पर्यटन स्थलों से इन महिलाओं की आमदनी में वृद्धि होती है।

1987 में ब्रंडलैंड रिपोर्ट में पहली बार धारणीय विकास पर चर्चा की गई और तब से संपूर्ण विश्व में सभी नीतियों का आधार बन गई। वर्तमान समय में चक्रवर्ती अर्थव्यवस्था पर चल रही चर्चा भी इसी बात पर है और ग्रामीण पर्यटन इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए एक साधन है। सभी स्थानों पर ग्रामीण पर्यटन में स्थानीय साधन, चाहे भौतिक हो अथवा मानवीय, के उपयोग पर जोर दिया जाता है। आधारभूत संरचना का तैयार होना बेहद आवश्यक है, खासकर भारत जैसे देशों में जहां आज भी सरकार सड़क, ऊर्जा, पेयजल आदि की बात कर रही है। जब किसी गांव का पर्यटन–स्थल हेतु चयन होता है तो प्रशासन इन सब सुविधाओं को मुहैया करवाने के लिए कटिबद्ध होता है। साथ ही, यह स्थानीय लोगों का अपने विरासत के प्रति ध्यान आकर्षित करती है जिसे विश्व–पटल पर दिखाया जा सकता है। तीसरा, इन स्थानों पर क्षमता निर्माण होता है चाहे वह पाक कला हो, संप्रेषण कला हो या अन्य जो अप्रत्यक्ष रोजगार उपलब्ध कराता है। चौथा, स्थानीय व्यवसाय को भी प्रोत्साहन मिलता है क्योंकि उपभोक्ताओं की संख्या बढ जाती है और उन्हें अपने व्यवसाय का विस्तार करने का भी मौका मिलता है। पांचवा, रोजगार में वृद्धि होती है चाहे वह अस्थायी ही रहे परंतु इस कारण से कृषि पर निर्भरता कम होती है जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए अच्छा है। साथ ही, बड़े पैमाने पर किए गए निवेश का लाभ साथ के गांवों को भी मिलता है जिस कारण से आर्थिक स्वास्थ्य में सुधार आता है।

इस बात को स्पष्ट करना आवश्यक है कि ग्रामीण पर्यटन के बहुत से लाभ हैं परंतु इसकी कुछ कमियां भी हैं जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था को हानि पहुंचाती हैं। शहरी लोग अपने साथ तकनीक लेकर आते हैं जो गांव की शांति और स्थिरता को भंग करती है। जिस पर्यावरण के साफ और प्रदूषण–मुक्त होने के कारण लोग गांव की ओर आकर्षित होते हैं, वे इसे प्रदूषित कर जाते हैं जिसका दुष्परिणाम गांव के लोगों की सेहत पर होता है। कई बार स्थानीय साधन, स्थानीय लोगों की पहुंच से बाहर हो जाते हैं क्योंकि इन्हें पर्यटकों को आकर्षित करने का साधन मान लिया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों की कार्यप्रणाली में परिवर्तन आ जाता है क्योंकि यह काम अस्थायी होता है, अतः कार्य लोकाचार को बिगाड़ देता है। लोग अपने कार्य हेतु कृषि से पर्यटन में अस्थायी रूप से आते हैं परंतु इस स्थानांतरण में मूल व्यवसाय कृषि नकारात्मक रूप से छोड़ दी जाती है जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए सही नहीं है। मूल से

ब्याज पर अधिक ध्यान दिया जाता है। साथ ही, स्थानीय बाजार में मुद्रास्फीति होती है जो स्थानीय मांग को प्रभावित करती है जिसके दुष्परिणाम दूरगामी हैं।

महिलाओं पर ग्रामीण पर्यटन के प्रभाव को देखना भी आवश्यक है। महिलाएं कार्यशक्ति का वह भाग हैं जो सामान्यतः सबसे अधिक कार्य करता है और जिसका भुगतान पृथक नहीं किया जा सकता। अधिकांश केस स्टडी में यह पाया गया है कि महिलाएं अपने घर का काम पूरा करते हुए व्यवसाय में योगदान देती हैं जो उनके ऊपर कार्यभार को बढ़ा देता है। यह सभी पर्यटन-स्थल स्थानीय समुदाय द्वारा चलाए जाते हैं जो स्थानीय अर्थव्यवस्था के लिए सकारात्मक हैं पर महिलाओं पर भार में वृद्धि होती है।

केस स्टडी

शाम-ए-सरहद, होडका : गुजरात, होडका स्थान का नाम इस क्षेत्र में बहने वाली एक झील से पड़ा है जो 300 वर्ष पूर्व यहां बहती थी। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम के तहत एन्डोजनस टूरिज्म प्रोजेक्ट के तहत 2004 में इस गांव को चुना गया। यह गांव अपने हस्तशिल्प और कढ़ाई के लिए प्रसिद्ध है। इस स्थान को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने के पीछे मुख्य उद्देश्य था कि लोगों को ग्रामीण जीवन का अनुभव देना जिसके लिए स्थानीय लोगों ने मिट्टी के घर बनाए, जो वहां के लैंडस्केप के अनुकूल थे। इन मिट्टी के घरों को वहां की कलाकृतियों से सजाया गया, जिसने स्थानीय कारीगरों को रोजगार दिया। वार्षिक आय एक लाख से बढ़कर 45 लाख हो गई है जिसका उपयोग क्षेत्र के विकास के लिए किया जा रहा है। होडका एक ऐसी उपलब्धि है जिसने बन्नी समुदाय के प्रजनक समुदाय को औपचारिक स्वरूप दिया जिस कारण से बन्नी भैंस को भारत की ग्यारहवीं भैंस प्रजाति की पहचान मिली।

नग्गर, हिमाचल प्रदेश : हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिले के नग्गर को संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम के एंडोजेनस टूरिज्म प्रोजेक्ट के तहत ग्रामीण पर्यटन के विरासत-स्थल के रूप में विकसित करने हेतु चुना गया। इस परियोजना के अंतर्गत कुल पांच गांवों का चयन किया गया। प्रसिद्ध रूसी चित्रकार निकोलस रोयरिक ने इस गांव को अपना घर बना लिया जिसने इस गांव को और ख्याति दी। नग्गर की बुनाई प्रसिद्ध है और पर्यटकों के लिए आकर्षण का बड़ा केंद्र है। यह गांव कुल्लू और मनाली के बीच है, इसलिए यहां पहुंचना सरल है। स्थानीय लोग इस स्थल को चला रहे हैं और महिलाओं को अतिरिक्त आय प्राप्त हो रही है। स्थानीय युवा को गाइड के रूप में प्रशिक्षण दिया गया है जिसने इनके पलायन पर रोक लगाई है।

निष्कर्ष

ग्रामीण पर्यटन का प्रारंभ केवल पर्यटन और रोजगार को बढ़ावा देने के लिए नहीं किया गया अपितु गांव को स्वावलंबी बनाने हेतु और सतत विकास के लिए किया गया। अधिकांश ग्रामीण पर्यटन स्थल यूएनडीपी के एनडोजेनस टूरिज्म प्रोजेक्ट के अंतर्गत शामिल किए गए जिससे बड़े पैमाने पर निवेश आया है। इस परियोजना से स्थानीय विरासत और संस्कृति को बल मिला है। साथ ही, ग्रामीण लोगों का अपनी सभ्यता और संस्कृति से पुर्नपरिचय भी हुआ है। लाभ के साथ कई नकारात्मक तत्व भी आए हैं परंतु लागत-लाभ विश्लेषण से पता चलता है कि लोगों के जीवनयापन के स्तर में सुधार आया है। यह सभी स्थल स्थानीय लोगों द्वारा चलाए जाते हैं जिस कारण यहां के युवाओं को अपनापन लगता है और वे अपनी आय को बढ़ाने के नए रास्ते ढूंढ रहे हैं। गांधी जी ने लिखा था 'उत्पादन का चरित्र सामाजिक आवश्यकता से निर्धारित होगा न कि लोगों के लालच से' और यह बात सभी ग्रामीण पर्यटन स्थलों के लिए सही है।

(जसपाल सिंह, नीति आयोग, नई दिल्ली में सलाहकार हैं; तनिमा दत्ता, मित्तल स्कूल ऑफ बिजनेस, लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, फगवाड़ा, पंजाब में सह-प्राध्यापक हैं; और अनुपमा रावत, प्रवक्ता और विभागाध्यक्ष, डॉ.बी.आर. अंबेडकर विश्वविद्यालय, महु, मध्य प्रदेश, एवं कृषि एवं ग्रामीण विकास विभाग की डीन हैं।)

ई-मेल : punjabimatti82@gmail.com

कृषि पर्यटन : अनुकूल दशाएं, अपार संभावनाएं

–डॉ. जगदीप सक्सेना

हमारे देश में अपार संभावनाओं के बावजूद आज भी कृषि पर्यटन अपेक्षाकृत धुंधला क्षेत्र है। महाराष्ट्र में इसे अच्छी कामयाबी मिली है, परंतु अन्य राज्यों में अभी भी संगठित प्रयासों की आवश्यकता है। कृषि पर्यटन को लोकप्रिय बनाने के पहले कदम के रूप में किसानों को इसके प्रति जागरूक बनाना होगा। इसके लिए कृषि प्रसार की सेवाओं का उपयोग किया जा सकता है। प्रसारकर्मी इसे भी एक कृषि उद्यम के रूप में किसानों के बीच ले जाएं और इसकी बारीकियों तथा लाभों को समझाएं।

भारत में कृषि केवल आजीविका का साधन नहीं, बल्कि जनमानस में रची–बसी एक पुरातन संस्कृति है। 'उत्तम खेती, मध्यम बान, निषिद चाकरी, भीख निदान' की परंपरा वाले हमारे देश में कृषक को 'अन्नदाता' और 'धरतीपुत्र' कह कर सम्मानित किया गया। परंतु औद्योगीकरण, शहरीकरण और आधुनिकीकरण के वर्तमान दौर में कृषि क्षेत्र और जोत आकार संकुचित होने से कृषकों के आर्थिक–स्तर पर चोट पड़ी। अपेक्षाकृत कम लाभदायकता के कारण कृषक परिवारों में पुश्तैनी खेती से विमुख होने का सिलसिला शुरू हो गया। मुख्य रूप से कृषि पर टिकी हमारी अर्थव्यवस्था के लिए यह एक बुरा संकेत है, जो भविष्य में हमारे लिए अनेक सामाजिक–आर्थिक विपदाओं का कारण बन सकता है। इसलिए कृषि और कृषकों के आर्थिक उद्धार के मकसद से अनेक मंचों पर विमर्श प्रारंभ हुआ। कृषि और कृषि उद्यमों से इतर भी सोचा–विचारा गया, लीक से हटकर कुछ नए अवसर तलाश करने की कोशिश की गई। और इन्हीं प्रयासों का परिणाम है 'कृषि पर्यटन', जिसे 'एग्री–टूरिज्म', 'एग्रो–टूरिज्म' या 'फार्म टूरिज्म' भी कहा जाता है। कुछ देशों में इसे 'एग्रीटेंमेंट' का नाम दिया गया है।

गांव–गांव पर्यटन

जैसाकि नाम से स्पष्ट है 'कृषि पर्यटन' एक ऐसा उद्यम है, जिसमें कृषि और पर्यटन के बीच एक विवेकपूर्ण और संतुलित सामंजस्य स्थापित करके पर्यटकों के मनोरंजन एवं विश्राम की व्यवस्था की जाती है। इस विषय पर चर्चा से पूर्व आवश्यक है कि इन दोनों क्षेत्रों की यथास्थिति पर एक नजर डाली जाए। भारत में कृषि आधी से अधिक जनसंख्या के लिए रोजगार और आजीविका का साधन है, परंतु सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में इसका योगदान लगभग 17–18 प्रतिशत आंका गया है। कृषि की महत्ता इस तथ्य से भी आंकी जा सकती है कि देश के कुल भौगोलिक क्षेत्र के लगभग 43 प्रतिशत क्षेत्र पर बुआई कर खेती की जाती है। सन् 2011 की जनगणना के अनुसार देश में किसानों की संख्या लगभग 11.9 करोड़ है, जबकि लगभग 14.4 करोड़ कृषि श्रमिक इस कार्य में सीधे जुड़े हैं। भारत में विश्व की लगभग सभी प्रकार

की जलवायु और मिट्टी पाई जाती है, जिससे यहां अनूठी और अतुलनीय जैव-विविधता मौजूद है। यह प्राकृतिक वरदान भारतीय कृषि को अपार संभावनाओं वाला क्षेत्र बनाता है। दूसरी ओर, पर्यटन हमारे देश का उभरता हुआ व्यवसाय है, जिसने सन् 2018 में देश के जीडीपी में 9.2 प्रतिशत और रोजगार में 8.1 प्रतिशत का योगदान किया। पर्यटन क्षेत्र में 6.9 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर देखी जा रही है। सन् 2016 में देश में कुल 88.9 लाख विदेशी पर्यटक आए थे, जिनकी संख्या सन् 2017 में बढ़कर लगभग एक करोड़ हो गई, जो 15.6 प्रतिशत की वृद्धि है। पर्यटन की दृष्टि से विश्व के 136 देशों में भारत का 40वां स्थान है, परन्तु पर्यटन की प्रतिस्पर्धी कीमतों के नजरिए से 10वां स्थान है। इस विवेचन से स्पष्ट है कि भारत में कृषि और पर्यटन, दोनों ही क्षेत्रों में विकास तथा विस्तार की संभावनाएं मौजूद हैं, जिनका लाभ 'कृषि पर्यटन' के उभरते उद्यम को मिल सकता है।

भारतीय पर्यटन उद्योग में कृषि पर्यटन एक नए अवसर के रूप में सामने आया है, जिसका मुख्य कारण सामाजिक दशाओं में हो रहा बदलाव है। आजकल शहरी जीवन आपा-धापी से भरपूर और जटिल हो गया है, आमदनी बढ़ी है, लेकिन साथ में तनाव भी लाई है। शहरी व्यस्तता के कारण लोग अपनी जड़ों यानी गांवों से दूर होते जा रहे हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार लगभग 35 प्रतिशत शहर निवासियों का गांव में अब कोई संबंधी नहीं रह गया है और 43 प्रतिशत कभी गांव नहीं गए हैं। इसका सबसे बुरा प्रभाव बच्चों पर पड़ रहा है। बड़े और आधुनिक स्कूल उन्हें किताबी ज्ञान तो दे रहे हैं, परंतु वे प्रकृति से दूर होते जा रहे हैं। उन्हें नहीं पता कि उनकी थाली में आने वाली रोटी किस तरह खेत से यात्रा शुरू करके उनकी रसोई तक पहुंचती है, गाय-भैंस से दूध कैसे निकलता है। खेत-खलिहानों, ताल-तलैयों और पशु-पक्षियों से उनका संबंध टूट गया है या कमजोर पड़ गया है। इस कारण शहर के निवासी अब अपना कुछ समय गांव में बिताना चाहते हैं, भले ही पर्यटक के रूप में। लगभग इन्हीं कारणों से विदेशी पर्यटक भी हमारे गांवों में आकर अपनी छुट्टियां बिताना चाहते हैं।

नया स्वरूप, नया आयाम

कृषि पर्यटन वास्तव में पर्यटन का नया स्वरूप है, एक ऐसा स्वरूप, जिसमें देश की माटी की महक है और यह वह सब कुछ उपलब्ध कराता है, जिसकी एक पर्यटक उम्मीद रखता है; जैसे वह आराम से और सुकून से रह सके, वहां उसे कुछ नया और रोमांचक देखने को मिले, कुछ ऐसा हो जो वो कर सके और कुछ खरीदने का अवसर भी हो। और इन सबके साथ मनोरंजन भी हो।

आइए, देखते हैं कृषि पर्यटन इन कसौटियों पर कितना खरा उतरता है। जहां तक रहने की बात है, कृषि पर्यटन में 'होम स्टे' की तर्ज पर 'फार्म स्टे' की व्यवस्था की जाती है। इसके लिए खेत-खलिहानों के आसपास परंपरागत रूप से कच्चे या पक्के आवास बनाए जाते हैं, जिनमें साफ-सफाई की उपयुक्त व्यवस्था रहती है और मौसम तथा भौगोलिक दशा के अनुसार गर्म पानी भी उपलब्ध कराया जाता है। कुल मिलाकर 'फार्म स्टे' सुविधाजनक, आरामदायक और अपेक्षाकृत कम खर्चीले भी होते हैं। जहां तक देखने की बात है, ग्रामीण परिवेश अपने प्राकृतिक स्वरूप में, अपनी पारिस्थितिकी के अनुसार, बहुत कुछ नया और अनदेखा उपलब्ध कराते हैं। जैसे पर्यटक गेहूं, धान, मक्का आदि फसलों के खेत और फलों के बाग-बगीचे देख सकते हैं, वहां घूम सकते हैं और किसानों के साथ बातचीत करके यह जान भी सकते हैं कि इन फसलों को कैसे उगाया जाता है। यदि उपयुक्त मौसम हुआ तो पर्यटक फसलों की कटाई, गहाई और इनके भंडारण या प्रसंस्करण को भी अपनी आंखों के सामने देख सकते हैं।

कृषि पर्यटन बाग से सीधे फलों को तोड़ने और खाने का अवसर भी देता है। फूलों के बाग-बगीचे में टहलना और ग्रीनहाउस में सब्जियों की खेती देखना, शहरी आबादी के लिए एक अलग तरह का रोमांच है। इसी तरह गाय-भैंस के तबेले, बकरियों के रेवड़ या भेड़ों और ऊंट के झुंड को देखना भी रोमांचक होता है, और यह रोमांच तब और भी बढ़ जाता है, जब उन्हें अपने हाथों से दूध दुहने का मौका मिलता है। खेतों में फसलों की बुआई, रोपाई और सिंचाई को देखना भी एक नए कार्य को देखने का अनुभव है। भारत के गांवों में या इनके आसपास स्थित प्राचीन धार्मिक स्थल या दर्शनीय स्थल भी सहज ही कृषि पर्यटन का हिस्सा बन जाते हैं।

पहाड़ी गांवों में नदियां, झरने और ट्रैकिंग भी पर्यटक को आनंदित करते हैं। कृषि पर्यटन में पर्यटकों को बहुत कुछ करके रोमांचित होने का अवसर भी मिलता है, जैसे आप ट्रैक्टर या कोई अन्य कृषि यंत्र/उपकरण अपने हाथों से चला सकते हैं, बैलगाड़ी का सफर कर सकते हैं और इसे चला भी सकते हैं, घोड़े या ऊंट की सवारी का आनंद उठा सकते हैं, तालाबों या नदियों में मछली पकड़ सकते हैं, नौकायन कर सकते हैं। गांव के परंपरागत व्यंजन बनाना सीख सकते हैं और खुद भी बना सकते हैं, और गांव की परंपरागत दस्तकारी का अनुभव भी कर सकते हैं। ये सभी कार्य मनोरंजन का माध्यम भी बन जाते हैं। आम धारणा के विपरीत गांवों में कुछ नया खरीदने का अवसर भी रहता है। कृषि पर्यटन का आनंद उठाने वाले अपने साथ ताजे बने अचार, मुरब्बे, पापड़, बड़ी आदि सस्ते दामों पर खरीदकर ले जाते हैं। इसके अलावा, गांवों के परंपरागत दस्तकारी उत्पाद भी कम कीमत पर मिल जाते हैं। परंपरागत साड़ियां, चादरें और हैंडलूम के सामान भी कृषि पर्यटकों को लुभाते हैं।

अब आती है मनोरंजन की बारी। गांवों में मल्टीप्लेक्स और मॉल भले ही ना हों, लेकिन स्थानीय नृत्य, गीत-संगीत, कठपुतली का खेल, स्थानीय खेलों का आयोजन, त्यौहार आदि पर्यटकों को खूब भाते हैं। रात में 'कैम्प फायर' का आयोजन करके पर्यटकों के मनोरंजन की व्यवस्था की जाती है। पर्यटन के इन सभी घटकों को शामिल करके कुछ दिनों का 'टूर पैकेज' बनाया जाता है, जिसे आजकल काफी पसंद किया जा रहा है। हाल में कुछ बड़ी 'ट्रैवल्स एंड टूर' कंपनियों ने इसकी शुरुआत कर दी है। कृषि

सफलता की गाथा

महाराष्ट्र में कृषि पर्यटन से कृषि समृद्धि

महाराष्ट्र देश का पहला और अकेला राज्य है, जहां कृषि पर्यटन लोकप्रिय है, संगठित है और व्यावसायिक रूप से सफल है। यहां विकसित कृषि पर्यटन केंद्र देश–विदेश से कृषि पर्यटकों को आकर्षित कर रहे हैं। इसका श्रेय यहां के किसानों की जागरूकता, उनकी कुछ नया करने की इच्छा और 'एग्री टूरिज्म डेवलपमेंट कार्पोरेशन' यानी एटीडीसी के गठन को जाता है। सन् 2005 में इसकी स्थापना का मुख्य उद्देश्य कृषि पर्यटन के माध्यम से कृषकों की आमदनी बढ़ाना और ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर सृजित करना था और इसके लिए कृषकों में जागरूकता बढ़ाना, उन्हें प्रशिक्षण, मार्गदर्शन तथा सहायता प्रदान करना इसकी मुख्य गतिविधियां तय की गई। इसके अंतर्गत पायलट प्रोजेक्ट के रूप में पुणे से लगभग 70 किलोमीटर दूर बारामती तालुका के पालशीवाडी में पहला कृषि पर्यटन केंद्र खोला गया। लगभग 28 एकड़ में फैला यह केंद्र एक आदर्श केंद्र के रूप में कार्यरत है, जिसे देखकर इच्छुक किसान काफी कुछ जानते–समझते और सीखते हैं। इसे प्रशिक्षण केंद्र के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है। महाराष्ट्र के लगभग 30 जिलों में 328 कृषि पर्यटन केंद्र किसानों की समृद्धि का माध्यम बन गए हैं। एटीडीसी के सर्वेक्षण के अनुसार वर्ष 2014, 2015 और 2016 में इन केंद्रों में क्रमशः 0.40 मिलियन, 0.53 मिलियन और 0.70 मिलियन पर्यटकों ने भ्रमण किया, जिससे किसान परिवारों को कुल 35.79 मिलियन रुपये प्राप्त हुए। इसके अलावा, बड़ी संख्या में स्थानीय महिलाओं और युवाओं को रोजगार भी मिला। इस सफलता के कारण राज्य में कृषि पर्यटन के अंतर्गत छात्रों को कृषि पर्यटन केंद्रों में भ्रमण के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है और छोटे किसानों को इसके लिए 'नाबार्ड' के माध्यम से वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने का प्रावधान किया गया है।

एटीडीसी मुख्य संगठन या मंच की तरह काम करते हुए विभिन्न कृषि पर्यटन केंद्रों के लिए पर्यटकों की बुकिंग करता है। वैसे कृषि पर्यटन केंद्र स्वतंत्र रूप से भी बुकिंग कर सकते हैं, एटीडीसी केवल एक सहायक की भूमिका का निर्वाह करता है। इन प्रयासों से महाराष्ट्र में कृषि पर्यटन एक लोकप्रिय कृषि व्यवसाय के रूप में स्थापित हो गया है। आवश्यकता है कि इस सफल मॉडल को देश के अन्य राज्यों में दोहराया जाए।

पर्यटन की ऊपर बताई गई गतिविधियां केवल सांकेतिक हैं, इनका विस्तार और व्यापकता कहीं ज्यादा है। अन्य पर्यटनों की तरह 'कृषि पर्यटन' भी ज्ञान को बढ़ाकर दृष्टि को व्यापकता प्रदान करता है। पर्यटक को क्षेत्र विशेष की कृषि, कला, संस्कृति और परिवेश की जानकारी मिलती है। यदि कोई व्यक्ति वर्ष में केवल एक बार कृषि पर्यटन करता है, तो भी जल्दी ही देश के विभिन्न भागों के बारे में उसका ज्ञान समृद्ध हो जाता है। छात्रों के लिए कृषि पर्यटन विशेष रूप से लाभकारी है, क्योंकि इससे उन्हें कृषि और कृषि कार्यों की सटीक जानकारी प्राप्त होती है। उनके मन में कृषि के प्रति दिलचस्पी बढ़ती है, जो उन्हें भविष्य में कृषि वैज्ञानिक, कृषि इंजीनियर, कृषि उद्यमी या कृषि संबंधी अन्य व्यवसाय अपनाने के लिए प्रेरित करती है। इस प्रकार अनेक चुनौतियों से जूझ रही भारतीय कृषि को कृषि पर्यटन से एक नया संबल मिलने की संभावना दिखाई दे रही है।

कुछ सुझाव

कृषि पर्यटन को व्यापक और व्यावसायिक आधार देने के लिए आवश्यक है कि इसे सुनियोजित तरीके से प्रारंभ किया जाए। सबसे पहले यह देखना चाहिए कि चुने गए स्थान या फार्म की देश के या कम से कम राज्य के विभिन्न भागों से अच्छी कनेक्टिविटी हो। वह स्थान रेल या सड़क मार्ग से जुड़ा हो, यदि लगभग 100 किलोमीटर के दायरे में हवाई अड्डा हो तो अधिक बेहतर होगा।

आरामदायक और सुविधाजनक ठहराव की व्यवस्था होना दूसरी बड़ी प्राथमिकता है। परंपरागत रूप से सजे–संवरे कमरे पर्यटकों को आकर्षित करते हैं, परंतु कम से कम एक–दो हॉल भी अवश्य होने चाहिए, ताकि 'पर्यटक समूह' एक साथ ठहर सकें। यदि कमरे से संलग्न शौचालय की व्यवस्था हो सके तो बेहतर है, अन्यथा कुछ कमरों के ब्लॉक में शौचालय की व्यवस्था की जा सकती है। परंतु साफ–सफाई को सर्वोच्च प्राथमिकता देना जरूरी है। छत पर सोलर पैनल लगाकर गर्म पानी और रोशनी की व्यवस्था की जा सकती है। इसमें लंबे समय में खर्च कम पड़ता है और ये पर्यटकों को भाते भी हैं।

चूंकि 'फार्म स्टे' के आसपास होटल–रेस्तरां नहीं होते, इसलिए सुबह के नाश्ते से लेकर रात्रि के भोजन तक की व्यवस्था करना आवश्यक और कृषि पर्यटन का अभिन्न अंग है। 'मेन्यू' तय करते समय परंपरागत भोजन को प्राथमिकता दें, परंतु कुछ आधुनिक खान–पान भी शामिल करना चाहिए, क्योंकि परिवारों में बच्चे भी होते हैं, जो आमतौर पर 'फास्ट फूड' पसंद करते हैं। कृषि पर्यटन में 'ओपन किचन' यानी खुली रसोई की व्यवस्था करना बेहतर है, ताकि पर्यटक साफ–सफाई को देख सकें और चाहे तो पारंपरिक व्यंजन खुद पकाने में अपने हाथ भी आजमा सकें। भोजन की व्यवस्था को एक 'एक्टिविटी' के रूप में भी बदला जा सकता है। पर्यटकों को सब्जियों, फलों आदि के खेत में ले जाकर, उनसे स्वयं सब्जियां छांटकर तोड़ने के लिए, फिर रसोई में पकाने का विकल्प भी होना चाहिए। मनोरंजन के लिए इसे एक प्रतियोगिता के रूप में भी आयोजित किया जा सकता है। साथ ही, यह भी आवश्यक है कि पर्यटक को 'टूर पैकेज' के अंतर्गत प्रत्येक दिन की गतिविधि की जानकारी टूर बुक करते समय ही दे दी जाए और इसमें किसी अपरिहार्य कारण के बिना कोई बदलाव ना किया जाए। प्रत्येक

सफलता की गाथा

महाराष्ट्र में कृषि पर्यटन से कृषि समृद्धि

महाराष्ट्र देश का पहला और अकेला राज्य है, जहां कृषि पर्यटन लोकप्रिय है, संगठित है और व्यावसायिक रूप से सफल है। यहां विकसित कृषि पर्यटन केंद्र देश–विदेश से कृषि पर्यटकों को आकर्षित कर रहे हैं। इसका श्रेय यहां के किसानों की जागरूकता, उनकी कुछ नया करने की इच्छा और 'एग्री टूरिज्म डेवलपमेंट कार्पोरेशन' यानी एटीडीसी के गठन को जाता है। सन् 2005 में इसकी स्थापना का मुख्य उदेश्य कृषि पर्यटन के माध्यम से कृषकों की आमदनी बढाना और ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर सृजित करना था और इसके लिए कृषकों में जागरूकता बढाना, उन्हें प्रशिक्षण, मार्गदर्शन तथा सहायता प्रदान करना इसकी मुख्य गतिविधियां तय की गई। इसके अंतर्गत पायलट प्रोजेक्ट के रूप में पुणे से लगभग 70 किलोमीटर दूर बारामती तालुका के पालशीवाडी में पहला कृषि पर्यटन केंद्र खोला गया। लगभग 28 एकड में फैला यह केंद्र एक आदर्श केंद्र के रूप में कार्यरत है, जिसे देखकर इच्छुक किसान काफी कुछ जानते–समझते और सीखते हैं। इसे प्रशिक्षण केंद्र के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है। महाराष्ट्र के लगभग 30 जिलों में 328 कृषि पर्यटन केंद्र किसानों की समृद्धि का माध्यम बन गए हैं। एटीडीसी के सर्वेक्षण के अनुसार वर्ष 2014, 2015 और 2016 में इन केंद्रों में क्रमशः 0.40 मिलियन, 0.53 मिलियन और 0.70 मिलियन पर्यटकों ने भ्रमण किया, जिससे किसान परिवारों को कुल 35.79 मिलियन रुपये प्राप्त हुए। इसके अलावा, बडी संख्या में स्थानीय महिलाओं और युवाओं को रोजगार भी मिला। इस सफलता के कारण राज्य में कृषि पर्यटन के अंतर्गत छात्रों को कृषि पर्यटन केंद्रों में भ्रमण के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है और छोटे किसानों को इसके लिए 'नाबार्ड' के माध्यम से वितीय सहायता उपलब्ध कराने का प्रावधान किया गया है।

एटीडीसी मुख्य संगठन या मंच की तरह काम करते हुए विभिन्न कृषि पर्यटन केंद्रों के लिए पर्यटकों की बुकिंग करता है। वैसे कृषि पर्यटन केंद्र स्वतंत्र रूप से भी बुकिंग कर सकते हैं, एटीडीसी केवल एक सहायक की भूमिका का निर्वाह करता है। इन प्रयासों से महाराष्ट्र में कृषि पर्यटन एक लोकप्रिय कृषि व्यवसाय के रूप में स्थापित हो गया है। आवश्यकता है कि इस सफल मॉडल को देश के अन्य राज्यों में दोहराया जाए।

पर्यटन की ऊपर बताई गई गतिविधियां केवल सांकेतिक हैं, इनका विस्तार और व्यापकता कहीं ज्यादा है। अन्य पर्यटनों की तरह 'कृषि पर्यटन' भी ज्ञान को बढाकर दृष्टि को व्यापकता प्रदान करता है। पर्यटक को क्षेत्र विशेष की कृषि, कला, संस्कृति और परिवेश की जानकारी मिलती है। यदि कोई व्यक्ति वर्ष में केवल एक बार कृषि पर्यटन करता है, तो भी जल्दी ही देश के विभिन्न भागों के बारे में उसका ज्ञान समृद्ध हो जाता है। छात्रों के लिए कृषि पर्यटन विशेष रूप से लाभकारी है, क्योंकि इससे उन्हें कृषि और कृषि कार्यों की सटीक जानकारी प्राप्त होती है। उनके मन में कृषि के प्रति दिलचस्पी बढती है, जो उन्हें भविष्य में कृषि वैज्ञानिक, कृषि इंजीनियर, कृषि उद्यमी या कृषि संबंधी अन्य व्यवसाय अपनाने के लिए प्रेरित करती है। इस प्रकार अनेक चुनौतियों से जूझ रही भारतीय कृषि को कृषि पर्यटन से एक नया संबल मिलने की संभावना दिखाई दे रही है।

कुछ सुझाव

कृषि पर्यटन को व्यापक और व्यावसायिक आधार देने के लिए आवश्यक है कि इसे सुनियोजित तरीके से प्रारंभ किया जाए। सबसे पहले यह देखना चाहिए कि चुने गए स्थान या फार्म की देश के या कम से कम राज्य के विभिन्न भागों से अच्छी कनेक्टिविटी हो। वह स्थान रेल या सडक मार्ग से जुड़ा हो, यदि लगभग 100 किलोमीटर के दायरे में हवाई अड्डा हो तो अधिक बेहतर होगा।

आरामदायक और सुविधाजनक ठहराव की व्यवस्था होना दूसरी बडी प्राथमिकता है। परंपरागत रूप से सजे–संवरे कमरे पर्यटकों को आकर्षित करते हैं, परंतु कम से कम एक–दो हॉल भी अवश्य होने चाहिए, ताकि 'पर्यटक समूह' एक साथ ठहर सकें। यदि कमरे से संलग्न शौचालय की व्यवस्था हो सके तो बेहतर है, अन्यथा कुछ कमरों के ब्लॉक में शौचालय की व्यवस्था की जा सकती है। परंतु साफ–सफाई को सर्वोच्च प्राथमिकता देना जरूरी है। छत पर सोलर पैनल लगाकर गर्म पानी और रोशनी की व्यवस्था की जा सकती है। इसमें लंबे समय में खर्च कम पड़ता है और ये पर्यटकों को भाते भी हैं।

चूंकि 'फार्म स्टे' के आसपास होटल–रेस्तरां नहीं होते, इसलिए सुबह के नाश्ते से लेकर रात्रि के भोजन तक की व्यवस्था करना आवश्यक और कृषि पर्यटन का अभिन्न अंग है। 'मेन्यू' तय करते समय परंपरागत भोजन को प्राथमिकता दें, परंतु कुछ आधुनिक खान–पान भी शामिल करना चाहिए, क्योंकि परिवारों में बच्चे भी होते हैं, जो आमतौर पर 'फास्ट फूड' पसंद करते हैं। कृषि पर्यटन में 'ओपन किचन' यानी खुली रसोई की व्यवस्था करना बेहतर है, ताकि पर्यटक साफ–सफाई को देख सकें और चाहे तो पारंपरिक व्यंजन खुद पकाने में अपने हाथ भी आजमा सकें। भोजन की व्यवस्था को एक 'एक्टिविटी' के रूप में भी बदला जा सकता है। पर्यटकों को सब्जियों, फलों आदि के खेत में ले जाकर, उनसे स्वयं सब्जियां छांटकर तोड़ने के लिए, फिर रसोई में पकाने का विकल्प भी होना चाहिए। मनोरंजन के लिए इसे एक प्रतियोगिता के रूप में भी आयोजित किया जा सकता है। साथ ही, यह भी आवश्यक है कि पर्यटक को 'टूर पैकेज' के अंतर्गत प्रत्येक दिन की गतिविधि की जानकारी टूर बुक करते समय ही दे दी जाए और इसमें किसी अपरिहार्य कारण के बिना कोई बदलाव ना किया जाए। प्रत्येक

गतिविधि के लिए समय और अवधि अवश्य निर्धारित होनी चाहिए तथा प्रयास होना चाहिए कि पर्यटकों के बीच आपसी सामंजस्य द्वारा गतिविधियों को सामूहिक रूप से संपन्न किया जाए। इससे आनंद कई गुना बढ़ जाता है। भ्रमण के लिए स्थानीय और जानकार व्यक्ति को गाइड की भूमिका में साथ होना चाहिए। इस तरह पर्यटकों का ज्ञान और जानकारी बढ़ती है, जो कृषि पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है। सामूहिक फोटोग्राफी और विडियोग्राफी की व्यवस्था भी पर्यटकों को पसंद आती है।

आनंद और मनोरंजन के अलावा यह भी आवश्यक है कि पर्यटक अपनी सुरक्षा के प्रति आश्वस्त हों। इसके लिए आवास की व्यवस्था वाले पूरे परिसर की कांटे वाले तारों से घेराबंदी होनी चाहिए और गेट पर सुरक्षाकर्मी तैनात हों। परिसर के भीतर भी चौबीस घंटे चौकीदारों की तैनाती करनी चाहिए। बेहतर तो यह होगा कि परिसर में सीसीटीवी द्वारा निगरानी की व्यवस्था हो। परिसर में प्राथमिक चिकित्सा की व्यवस्था हो और आवश्यकता पड़ने पर चिकित्सक को बुलाया जा सके या अस्पताल ले जाने की सुविधा हो। पर्यटकों के लिए उनकी यात्रा को अविस्मरणीय बनाने का हर संभव प्रयास होना चाहिए, इसी से कृषि पर्यटन की सफलता सुनिश्चित होगी।

प्रचार और प्रोत्साहन

हमारे देश में अपार संभावनाओं के बावजूद आज भी कृषि पर्यटन अपेक्षाकृत धुंधला क्षेत्र है। महाराष्ट्र में इसे अच्छी कामयाबी मिली है, परंतु अन्य राज्यों में अभी भी संगठित प्रयासों की आवश्यकता है। कृषि पर्यटन को लोकप्रिय बनाने के पहले कदम के रूप में किसानों को इसके प्रति जागरूक बनाना होगा। इसके लिए कृषि प्रसार की सेवाओं का उपयोग किया जा सकता है। प्रसारकर्मी इसे भी एक कृषि उद्यम के रूप में किसानों के बीच ले जाएं और इसकी बारीकियों तथा लाभों को समझाएं। पहले से स्थापित और लोकप्रिय कृषि पर्यटन केंद्रों में इच्छुक किसानों के प्रशिक्षण की व्यवस्था की जा सकती है। 'फार्म स्टे' की व्यवस्था करने में पेशेवरों की सलाह का लाभ उठाकर योजना बनानी चाहिए और निवेश की व्यवस्था करनी चाहिए। वर्तमान प्रारंभिक दौर में कृषि पर्यटन केंद्रों को प्रचार–प्रसार की बड़ी आवश्यकता है। इसके लिए एनजीओ, निजी क्षेत्र की पर्यटन एजेंसियों और सरकार के अंतर्गत कार्य कर रहे पर्यटन निगमों से संपर्क किया जा सकता है। गांव के पास के नगरों में बिल बोर्ड, होर्डिंग, बैनर आदि के द्वारा भी प्रचार किया जा सकता है। यदि पास के शहरों के निवासी आने लगेंगे तो निश्चित रूप से प्रचार जोर पकड़ेगा और दूर के शहरों के पर्यटक भी आकर्षित होंगे। आजकल इंटरनेट और सोशल मीडिया पर प्रचार भी प्रभावी सिद्ध होता है। इसका उपयोग करके देश–विदेश के पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता है।

कृषि पर्यटन को सफल बनाने के लिए यह भी आवश्यक है कि भारत सरकार के कृषि मंत्रालय, ग्रामीण विकास मंत्रालय और पर्यटन मंत्रालय द्वारा इसे मान्यता प्रदान की जाए और इसके प्रोत्साहन के लिए योजनाएं शुरू की जाएं। इस क्षेत्र को फिलहाल वित्तीय प्रोत्साहन की आवश्यकता भी है। विशेषज्ञों ने कृषि पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 'भारतीय कृषि पर्यटन परिषद' की स्थापना की सिफारिश की है, जिसके अंतर्गत नियम–विनियम बनाकर कृषि पर्यटन को एक विशेष उद्यम के रूप में विकसित तथा स्थापित किया जाए। इसी के अंतर्गत अपेक्षित गुणवत्ता के मानक भी निर्धारित किए जा सकते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि भारत में कृषि पर्यटन के विकास के लिए अनुकूल दशाएं मौजूद हैं। इनका लाभ उठाते हुए कृषकों के आर्थिक उद्धार का रास्ता अपनाने की आवश्यकता है।

(लेखक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में प्रधान संपादक (हिंदी) रह चुके हैं।)

ईमेल : jgdsaxena@gmail.com

ग्रामीण भारत में इको पर्यटन

–डॉ. के. एन. तिवारी

ग्रामीण भारत में पर्यटन का सबसे बडा लाभ गांवों में सुविधाओं के निर्माण एवं सुधार से जुड़ी गतिविधियां चलने से ग्रामीण इलाकों में रोजगार के सृजन के रूप में हो रहा है। गांवो में धन आने रो लोगों का जीवन–स्तर बेहतर बन रहा है। पंचायतों का राजस्व बढ़ रहा है जिससे स्कूल, स्वास्थ्य–केंद्र, समुदाय भवन, खेल के मैदान जैसी सुविधाओं के निर्माण के लिए अधिक धन उपलब्ध हो रहा है। ग्रामीण पर्यटन वास्तव में ग्रामीण विकास की महत्वपूर्ण कुंजी साबित हो रहा है।

महात्मा गांधी ने कहा था कि भारत गांवों में बसता है। भारत का ग्राम्य जीवन असली भारत की तस्वीर प्रस्तुत करता है। हमारे गांव देश की संस्कृति और परंपराओं का खजाना हैं। महानगरों की गहमा–गहमी से दूर गांवों में जीवन को अपेक्षाकृत सहज गति से जीने का अनुभव मन में नई स्फूर्ति का संचार करता है। हमारी अनोखी कलाओं और शिल्प के सिद्धहस्त कलाकार और दस्तकार गांवों में ही निवास करते हैं और कलाओं व शिल्प को अपने मूल रूप में अब तक सहेज कर रखे हुए हैं। गांव प्राकृतिक सौंदर्य और सांस्कृतिक वैभव दोनों ही दृष्टि से संपन्न हैं। ग्रामीण जन धार्मिक और परंपरागत अनुष्ठानों में विशेष रूचि लेते हैं। साथ ही, गांवों में वर्षभर लहलहाती फसलें, फलदार पेड़, विविध रंग वाले फूल व औषधीय व सगंध फसलें और वनस्पतियां प्रकृति को मनोहारी बना देती हैं।

ग्रामीण पर्यटन की अवधारणा

कोई भी ऐसा पर्यटन जो ग्रामीण जीवन, कला, संस्कृति और ग्रामीण स्थलों की धरोहर को दर्शाता हो, जिससे स्थानीय समुदाय को आर्थिक व सामाजिक लाभ पहुंचता हो, साथ ही पर्यटकों और स्थानीय लोगों के बीच संवाद से पर्यटन अनुभव के अधिक समृद्ध बनने की संभावना हो, उसे 'ग्रामीण पर्यटन' कहा जाता है। ग्रामीण पर्यटन अनिवार्यतः एक ऐसी गतिविधि है, जो देश के ग्रामीण इलाकों में संचालित होती है। यह बहु–आयामी है, जिसमें खेतीबाड़ी, संस्कृति, प्रकृति, साहस, पर्यावरण आदि का समुचित तालमेल होता है। गांवों में पुरातत्व कला, ऐतिहासिक और पौराणिक स्थलों, कवियों, समाज सुधारकों, कलाकारों, तीर्थ स्थानों, स्वतंत्रता सेनानियों और अन्य प्रकार के समाज और संस्कृति उन्नायकों के जन्म व कर्मस्थलों को विकसित करके उन्हें पर्यटक–स्थल के रूप में विकसित किया जा रहा है।

'ग्रामीण पर्यटन' की अवधारणा हमारे देश में अपेक्षाकृत नई है। ग्रामीण पर्यटन से अभिप्राय यह है कि सैलानी ऐतिहासिक स्थलों या शहरों में भव्य स्मारकों व अन्य इमारतों, समुद्र तटों व नदियों

के किनारे बसे मनोरम स्थलों, पर्वतीय स्थानों, और वनाच्छादित प्राकृतिक क्षेत्रों के साथ–साथ देश के ग्रामीण अंचलों में बिखरी पड़ी अनछुई प्राकृतिक छटा, सांस्कृतिक संपदा और वहां के जनजीवन के प्रदूषण–मुक्त वातावरण में आनंद ले सकते हैं। ग्रामीण पर्यटन की दिशा में हो रही प्रगति से समूचे पर्यटन उद्योग में एक तरह ताजगी और आत्मीयता का संचार होता दिखाई दे रहा है।

इको पर्यटन की अवधारणा

इको पर्यटन का अर्थ है पर्यटन और प्रकृति संरक्षण का प्रबंध इस ढंग से करना कि एक तरफ पर्यटन और पारिस्थितिकी की आवश्यकताएं पूरी हो और दूसरी तरफ स्थानीय समुदायों के लिए रोजगार, नए कौशल, आय और महिलाओं के लिए बेहतर–स्तर सुनिश्चित किया जा सके। अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण पर्यटन वर्ष हमें विश्व–स्तर पर इको पर्यटन की समीक्षा का अवसर प्रदान करता है ताकि भविष्य में इसका स्थायी विकास सुनिश्चित करने के लिए उपयुक्त साधनों और संस्थागत ढांचे को मजबूत किया जा सके। इसका अर्थ है कि इको पर्यटन की खामियां और नकारात्मक प्रभाव दूर करते हुए इससे अधिकतम आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक लाभ प्राप्त किया जा सके। इको पर्यटन प्राकृतिक क्षेत्रों की वह दायित्वपूर्ण यात्रा है जिससे पर्यावरण–संरक्षण होता है और स्थानीय लोगों की खुशहाली बढती है। स्पष्टतः इन परिभाषाओं में तीन पहलुओं को रेखांकित किया गया है– प्रकृति, पर्यटन और स्थानीय समुदाय। पर्यावरण–अनुकूल गतिविधि होने के कारण इको पर्यटन का लक्ष्य पर्यावरण मूल्यों और शिष्टाचार को प्रोत्साहित करना तथा निर्बाध रूप में प्रकृति का संरक्षण करना है। इस तरह, यह पारिस्थितिकी विषयक अखंडता में योगदान करके वन्य जीवों और प्रकृति को लाभ पहुंचाता है। स्थानीय लोगों की भागीदारी उनके लिए आर्थिक लाभ सुनिश्चित करती है जो आगे चलकर उन्हें बेहतर–स्तर और आसान जीवन उपलब्ध कराती है। पर्यटन आज दुनिया का सबसे बड़ा उद्योग है और इको पर्यटन इस उद्योग का सबसे तेजी से बढ़ने वाला हिस्सा है। उष्ण–कटिबंधीय क्षेत्रों में संरक्षित क्षेत्र प्रबंधकों और स्थानीय समुदायों के बीच संतुलन कायम करने में पर्यावरण पर्यटन का विशेष महत्व है। सुनियोजित पर्यावरण पर्यटन से संरक्षित क्षेत्रों और उनके आसपास रहने वाले समुदायों को लाभ पहुंचाया जा सकता है। इसके लिए दीर्घावधि जैव विविधिता संरक्षण उपायों और स्थानीय सामाजिक तथा आर्थिक विकास के बीच संबंध कायम करना होगा।

ग्रामीण भारत में इको पर्यटन का विकास

पर्यटन एक इतना शक्तिशाली औजार है जो देशों के भविष्य को बदलने की क्षमता रखता है। अतः यह आवश्यक है कि हम पर्यटन एवं पर्यावरण के मध्य घटित होने वाले अनेकानेक कार्यकलापों का सही आकलन करें और तदानुसार अपने कार्यकलापों में सुधार करें।

इको पर्यटन के विकास को संचालित करने के लिए कुछ विशेष कारकों का होना आवश्यक माना जाता है। इसमें हवाई परिवहन के साथ ही साथ ऑनलाइन ट्रेवल पोर्टल के विकास के अतिरिक्त अंतर–क्षेत्रीय सहयोग को आगे बढ़ाने और उसे अधिक असरकारक बनाकर सार्वजनिक–निजी भागीदारी को मजबूत करना है। गांवो में इसकी अधिक आवश्यकता है। गांवों में देशी–विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए मुख्य मार्ग से पहुंच मार्ग तक जोड़ने और उन्हें पर्यटन मानचित्र पर दर्शाने की आवश्यकता है। केंद्र सरकार राज्य सरकारों की सहायता से यह काम कर सकती है। आवश्यकता है योजना बनाकर उन्हें कार्यान्वित करने की। साथ ही मूलभूत सुविधाओं, पानी, बिजली, विश्रामगृह, भोजन और वाहन की सुविधा को उपलब्ध कराने की। उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पंजाब, दिल्ली, गुजरात, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश सहित अनेक ऐसे प्रांत हैं, जहां के अनेक गांवों में पुरातत्व पौराणिक, ऐतिहासिक और धार्मिक स्थल हैं, जो उपेक्षित पड़े हैं।

ग्रामीण इको पर्यटन के उत्कृष्ट मॉडल

ग्रामीण पर्यटन के मॉडल के विकास में केरल हमेशा अग्रणी रहा है और राज्य में उत्तरदायी पर्यटन के बृहत्तर दायरे में ग्रामीण पर्यटन का विकास किया गया है। केरल में कुमार कोम वायनाड और अन्य स्थानों पर उत्तरदायी परियोजनाएं एक अनोखे मॉडल के रूप में उभर कर सामने आई हैं। इनमें पर्यटकों को ग्रामीण जीवन का आनंद लेने का मौका मिलता है और पर्यटन से जुड़े लोग कथा सुनाने वाले सूत्रधार की भूमिका में रहते हैं। ग्रामीण जन अपने तौर–तरीकों के बारे में गौरवान्वित होते हैं, जो उन्हें शहरी जीवनशैली की नकल करने से रोकती है।

सिक्किम एक ऐसा राज्य है, जहां कई ग्रामीण समुदायों को सशक्त बनाकर होम–स्टे यानी पर्यटकों को घर में ठहराने के कार्यक्रमों के जरिए पर्यटक उत्पादों का परंपरागत पर्यटन स्थलों से हटकर अन्य स्थानों पर भी समान रूप से विस्तार करने का प्रयास किया गया है। इससे पर्यटन उत्पादों की क्षमता बढ़ाने में मदद मिली है। भारत के पहले आर्गेनिक राज्य के रूप में ख्याति अर्जित करने के बाद सिक्किम अपनी ग्रामीण पर्यटन क्षमताओं का भी भरपूर फायदा उठा रहा है। विकास के इस तरह के मॉडलों में समाज के सबसे निचले स्तर पर सामुदायिक भागीदारी होती है और हर एक व्यक्ति को समूची प्रक्रिया में बराबरी का अवसर मिलता है।

आजकल लोगों की रूचि परंपरागत पर्यटन से हटकर ग्रामीण पर्यटन की ओर बढ़ रही है क्योंकि इसमें प्राकृतिक वातावरण की प्रमुखता होती है। ग्रामीण पर्यटन महानगरों की गहमा–गहमी से दूर गांवों में जीवन को अपेक्षाकृत सहज गति से जीने का अनुभव मन में नई स्फूर्ति का संचार करता है। गांव प्राकृतिक सौंदर्य और सांस्कृतिक वैभव दोनों ही दृष्टि से संपन्न हैं। गांवो में वर्ष भर लहलहाती फसलें, फलदार पेड़, विविध रंग वाले फूल व औषधीय व सुगंध फसलें और वनस्पतियां प्रकृति को मनोहारी बना देती हैं। ग्रामीण जन धार्मिक और परंपरागत अनुष्ठानों में विशेष रूचि लेते

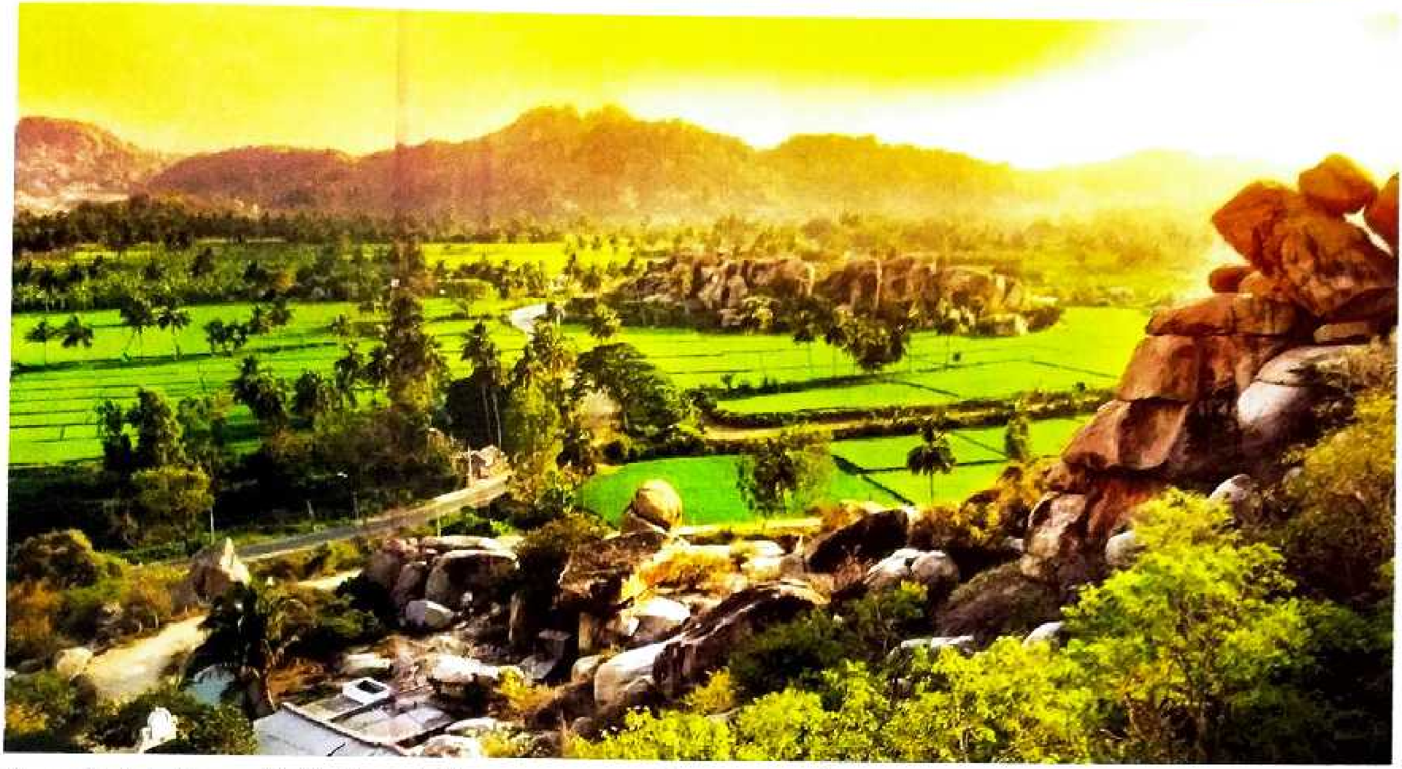

हैं। हमारी अनोखी कलाओं और शिल्प के सिद्धहस्त कलाकार और दस्तकार गांवों में ही निवास करते हैं। ग्रामीण पर्यटन के विकास से ग्रामीण समाज को अपनी आमदनी बढ़ाने का अवसर मिलता है। इससे स्थानीय समुदाय को अपनी अनोखी संस्कृति के विकास और संरक्षण का अवसर मिलता है।

ग्रामीण पर्यटन विकास में निजी क्षेत्र की तरफ से भी कुछ उल्लेखनीय पहल की गई है। उदाहरण के लिए राजस्थान में सार्वजनिक–निजी भागीदारी के मॉडल पर आधारित समोद और मंडावा सहित कुछ अन्य परियोजनाएं सामने आई हैं। इसी तरह महाराष्ट्र में गोवर्धन इको–विलेज भी उल्लेखनीय है जिसने नवसृजन के लिए संयुक्त राष्ट्र के विश्व पर्यटन संगठन का यूलीसीज पुरस्कार जीता। इसने सामुदायिक भागीदारी को बढ़ाया है और एक जमाने में पिछड़े हुए इस इलाके के लोगों की आमदनी और शिक्षा के स्तर को उन्नत बनाने में मदद की है। स्पष्ट है कि ग्रामीण पर्यटन और ग्राम्य जीवन के अनुभव की अवधारणा के विकास के लिए पर्याप्त गुंजाइश है।

कुछ राज्य सरकारों ने अपने स्तर पर भी ग्रामीण पर्यटन को लोकप्रिय बनाने के कार्यक्रम शुरू किए हैं। हरियाणा पर्यटन विकास के क्षेत्र में अग्रणी रहा है। ग्रामीण पर्यटन को लोकप्रिय बनाने में भी उसने अनेक प्रयोग किए हैं। राज्य के झज्जर जिले में विशुद्ध ग्रामीण वातावरण में अपनी तरह का एक अभिनव पर्यटन केंद्र विकसित किया गया है, जहां देशी–विदेशी पर्यटक निश्चित शुल्क देकर पूरा दिन रहकर ग्राम–सुलभ सुविधाओं, रहन–सहन, खान–पान, गीत–नृत्य के सांस्कृतिक कार्यक्रमों और ताजे फल व सब्जियों का आनंद ले सकते हैं। कुछ निजी फार्म हाउसों को लाइसेंस दिए गए हैं, जहां हरियाणा की ग्रामीण संस्कृति के अनुरूप सुविधाएं विकसित की गई हैं। यहां आकर सैलानी ग्रामीण जीवन की भीनी–भीनी सुगंध के बीच आरामदेह परिस्थितियों में अपना समय बिता सकते हैं। कुछ स्थानों पर ग्रामीण पर्यावरण के अनुरूप झोपड़ीनुमा आवास भी बनाए गए हैं, जहां कुछ दिन रहकर पर्यटक अपना तनाव और थकान मिटा सकते हैं। ग्रामीण रहन–सहन और खान–पान के साथ–साथ इन केंद्रों में मालिश, तैराकी, घुड़सवारी, हाथी की सवारी, साइक्लिंग, प्राकृतिक उपचार जैसी तन–मन को तरोताजा करने वाली सुविधाओं की व्यवस्था रहती है। ऐसे ग्रामीण पर्यटन केंद्रों की एक खूबी यह है कि इनमें जुटाई जाने वाली सुविधाओं के सृजन में स्थानीय संसाधनों, वस्तुओं और कलाशिल्प का इस्तेमाल किया जाता है। ये केंद्र स्वरूप तथा वातावरण की दृष्टि से भारतीय ग्रामीण जीवन के सच्चे प्रतिरूप लगते हैं।

राजस्थान में जयपुर के धानी रिसोर्ट में एकदम गांव जैसा अनुभव होता है। जयपुर का पांच सितारा विलेज होटल चोखी धानी पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है। दुनिया भर के लोग इसकी खूबसूरती देखने आते हैं। चोखी धानी में आपको परंपरागत गांव के अनुभव से लेकर स्वादिष्ट खाना तक एक ही छत के नीचे मिल जाएगा। यह जगह एयरपोर्ट के बहुत पास है। इसे लगभग 18 एकड़ क्षेत्र के दो भागों में बांटा गया है– चोखी धानी विलेज और चोखी धानी विलेज रिसोर्ट। इस जगह का वातावरण बिल्कुल गांव जैसा लगता है। हर दिन यहां पर पर्यटकों के लिए नई–नई तरह के मनोरंजन कार्यक्रम प्रस्तुत कराए जाते हैं ताकि लोगों का मन

लगा रहे। शाम होते ही तरह–तरह के कार्यक्रम दिखाए जाते हैं जैसे डांस, हाथी, ऊंट की सवारी आदि।

गांवों में देशी–विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए हवाई परिवहन के साथ–ही–साथ ऑनलाइन ट्रेवेल पोर्टल के विकास के अतिरिक्त अंतरक्षेत्रीय सहयोग को आगे बढ़ाने और उसे अधिक असरकारक बनाकर सार्वजनिक निजी भागीदारी को मजबूत करने की आवश्यकता है। मुख्य मार्ग से पहुंच मार्ग तक जोड़ने और उन्हें पर्यटन मानचित्र पर दर्शाना आवश्यक माना जाता है।

नए पर्यटन क्षेत्रों को चिन्हित करके उसे अंतर्राष्ट्रीय–स्तर पर स्थापित करना और इसे स्थायित्व देना भी आवश्यक है। उदाहरण के तौर पर, दिल्ली के गांवों में भी अनेक पर्यटक स्थल बनाए गए हैं, जैसे लोकनायक जय प्रकाश पर्यटन स्थल, पश्चिमी बंगाल में नेताजी सुभाष पर्यटन स्थल आदि। हरियाणा के झज्जर जनपद का प्रतापगढ़ गांव, राजस्थान का नीमराना, उत्तर प्रदेश के लमही गांव, इलाहाबाद का शंकरगढ़ गांव भी महत्व के हैं। गांवों में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए जिस नई नीति पर भारत चल रहा है, वह कई मायने में बेहतर है। इसमें शिल्प–वस्त्र, कला, हथकरघा और मूलभूत प्राकृतिक पर्यावरण से सुसज्जित गांवों में ग्रामीण संस्कृति, कला, लोक–कलाओं, लोक–संस्कृति, लोकशिल्प, लोक–व्यवहार और लोक जीवनशैली को आधुनिक बनाकर और ऐसे ग्रामीण पर्यटन स्थलों को चिन्हित करके इन्हें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय–स्तर पर लाना है।

इको पर्यटन का संतुलित विकास जरूरी

इको पर्यटन के सतत विकास के लिए पर्यटन एवं पर्यावरण के आपसी संबंधों को पूरी गंभीरता से समझना होगा और पारिस्थितिकी तथा पारिस्थितिकी तंत्रों को समुन्नत करने हेतु विशिष्ट योजना के तहत इनका समुचित प्रबंधन सुनिश्चित किया जाना चाहिए। पारिस्थितिकी पर्यावरण विकास का मूलमंत्र है कि प्राकृतिक संसाधनों पर इसका हानिकारक प्रभाव न पड़े तथा उस क्षेत्र के समाज, अर्थव्यवस्था एवं संस्कृति को प्रभावित न करे। इको पर्यटन के विकास के लिए पर्यावरण का समेकित अनुरक्षण नितांत आवश्यक है। इस कार्य के लिए स्थानीय समुदाय की भागीदारी विशेष महत्वपूर्ण है ताकि क्षेत्र का समग्र आर्थिक विकास संभव हो सके। इको पर्यटन के विकास हेतु हमें प्राकृतिक संसाधनों (भूमि, जल और जैव विविधता) का दोहन करने के बजाय उनका विवेकपूर्ण न्यायोचित उपयोग एवं उपभोग करना चाहिए ताकि स्थानीय निवासियों की आजीविका तथा प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग के बीच उत्पन्न होने वाली संघर्ष की स्थिति से बचा जा सके।

विश्व में वनस्पति–विविधता के आधार पर भारत दसवें, क्षेत्र सीमित (इंडेमिक) प्रजातियों के आधार पर 11वें तथा फसलों के उद्भव एवं विकास और विविधता केंद्र के आधार पर छठे स्थान पर है। ज्ञातव्य है कि 5000 पुष्प–पौधों की उत्पत्ति भारत में हुई है। पौधों की 47,000 प्रजातियों में से 7000 केवल भारत में पाई जाती है। हाथियों की 50 प्रतिशत संख्या भारत में पाई जाती है। एक सींग वाले गैंडे, घड़ियाल, सबसे बड़ा उड़ने वाला पक्षी ग्रेट इटालियन स्टर्ड, कस्तूरी मृग, काले मृग, रेड पाण्डा, बंदरों व लंगूरों की अनेक प्रजातियां (जैसे हूलांक शिवान, शेर पूंछ बंदर, नीलगिरी लंगूर, टोपी वाला लंगूर, सुनहरा बंदर), स्नालेपर्ड व धामिन मृग, मीठे पानी की डाल्फिन (सोंस या गंगा की डाल्फिन), सर्पों की अनेकों प्रजातियां तथा सलामंडर की कई प्रजातियां, छिपकलियों की 50 प्रतिशत प्रजातियां, दुनिया का सबसे जहरीला सर्प किंग कोबरा, अनेक प्रकार के देशी एवं प्रवासी पशु–पक्षी, साइबेरियन क्रेन, चित्तीदार पेलिकन जैसे पक्षी, अमेरिकन समुद्री कछुवें भारत में प्रवास करते हैं। स्पष्टतः भारत में पर्यावरण, पारिस्थितिकी एवं पारिस्थितिकी–तंत्र आधारित पारिस्थितिकी पर्यटन के समुचित विकास की अपार संभावनाएं हैं।

इको पर्यटन के विकास की पद्धति ऐसी हो जिसका स्थानीय समुदाय की संस्कृति और सामाजिक खूबियों पर कुठाराघात न हो। यह विधा स्थानीय समुदाय की सांस्कृतिक व सामाजिक अवधारणाओं के अनुरूप होनी चाहिए। इसका नियोजन एवं क्रियान्वयन समग्र क्षेत्र विकास के सिद्धांतों पर आधारित होना चाहिए। विश्व पर्यटन संगठन द्वारा दी गई परिभाषा के अनुसार इको पर्यटन के अंतर्गत अपेक्षाकृत अबाधित प्राकृतिक क्षेत्रों की ऐसी यात्रा शामिल है, जिसका निर्दिष्ट लक्ष्य प्रकृति का अध्ययन और समादर करना तथा वनस्पति और जीव–जंतुओं के दर्शन का लाभ उठाना एवं साथ ही इन क्षेत्रों से संबद्ध सांस्कृतिक पहलुओं (अतीत और वर्तमान दोनों) का अध्ययन करना है।

इको पर्यटन के सतत विकास के लिए हरित भवनों का निर्माण

पर्यावरण अनुकूल पर्यटन के लिए ऐसे हरित भवनों का निर्माण आवश्यक है जो 20 प्रतिशत कम ऊर्जा का उपयोग करते हैं। जल–संरक्षण और रिसाइक्लिंग सिद्धांतों को घर के निर्माण और इसके दैनिक कार्यों के लिए लागू किया गया है। हरित भवनों में अपशिष्ट घटाना, स्थानीय और नवीकरणीय सामग्री का उपयोग, अक्षय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग और आवास के बेहतर तरीकों के कार्यान्वयन को प्रोत्साहित करना। ऐसे घरों के निर्माण के लिए ईटों के स्थान पर क्ले और कीचड़ के ब्लॉक का इस्तेमाल किया जाए तो बेहतर होगा। हरित भवनों में पी.वी.सी. या बिनाइल जैसी हानिकारक सामग्री का उपयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे कैंसर प्रतिरक्षा प्रणाली की क्षति और हार्मोंस के व्यवधान जैसी गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं की आशंका रहती है। पर्यावरण–अनुकूल ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए हरित भवनों का निर्माण ऐसे किया जाए जिसमें सीमेंट का कम से कम उपयोग हो। साथ ही, पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों से तैयार किए विद्युत का कम से कम उपयोग हो। सौर ऊर्जा एक अच्छा विकल्प साबित होगा।

जिन स्थानों पर वायु की गति 15 कि.मी. प्रति घंटे से ज्यादा हो, वहां पवन चक्कियों का इस्तेमाल हो। अपशिष्टों का समुचित निस्तारण सुनिश्चित किया जाना चाहिए। जिसके लिए गीले एवं सूखे तथा जैविक एवं अजैविक में विभाजित किया जा सकता है। पर्यावरण–अनुकूल हरित भवनों में सामान्य तौर पर अजैविक अपशिष्ट उत्पादित नहीं होते हैं। जैविक अपशिष्टों का उपयोग कंपोस्ट तैयार करने तथा बायोगैस प्लांट में बखूबी किया जा सकता है। इससे बेहतरीन खाद तैयार होती है। हमें प्लास्टिक के उपयोग से भी बचना चाहिए। जल–संरक्षण जिसमें वर्षा जल के संचयन से लेकर भूरे जल के पुनः उपयोग तक की व्यवस्थाएं विकसित करनी चाहिए। पर्यावरण–अनुकूल हरित भवनों की मांग बढ़ने के कारण इनके निर्माण के लिए नई तकनीकों का विकास भी किया जा रहा है। साथ ही, पहले से उपलब्ध तकनीकों में भी सुधार हो रहा है। इन तकनीकों में पवन टरबाइन से सौर पैनलों तक उच्च दक्षता वाली प्रकाश व्यवस्था, अति कुशल इंसुलेशन, ग्लेजिंग, जल–संरक्षण, रिसाइक्लिंग और बहुत कुछ शामिल है।

पर्यटन से न हो प्राकृतिक संसाधनों का स्थायी ह्रास

पर्यावरणीय पर्यटन या पारिस्थितिकी पर्यटन प्रकृति पर आधारित पर्यटन है जो प्रकृति के अवलोकन से मिलने वाले आनंद से संबंधित हैं। अतः ध्यान रहे कि इस आनंद के प्रतिफल में प्राकृतिक पर्यावरण में किसी भी प्रकार का विकार न आने पाए अर्थात पर्यटन प्राकृतिक संसाधनों के स्थायी ह्रास का साधन न बनने पाए। इसे हम इस प्रकार समझा सकते हैं। कई बार ऐसा देखा जाता है कि शिक्षण संस्थाओं द्वारा छात्रों के ज्ञानवर्धन हेतु आयोजित पर्यटन यात्राएं पर्यावरण ह्रास का कारक साबित होती हैं। पर्यटक छात्रों द्वारा पौधों को उखाड़ कर अध्ययन करने की उत्सुकता तथा चलते–चलते पौधों को अनजाने में कुचल देने से जैव–विविधता को क्षति पहुंचती है। पर्यटकों द्वारा वन्य जीवन के अवलोकन के दरम्यान उनके दैनिक कार्यकलापों विशेषकर उनके चारण एवं प्रजनन में बाधा पहुंचाता है। यही नहीं, प्राकृतिक संसाधन (जल, जंगल, जमीन) पर्यटकों के बढ़ते दबाव के कारण कुप्रभावित होते हैं। नदी तथा समुद्र के किनारे स्थित पर्यटक–स्थलों का मल–जल इन जल–स्रोतों को प्रदूषित करता है जिससे जलीय जीव, तटीय क्षेत्र और निकट आबादी पर बुरा असर पड़ता है। पर्यटक स्थलों पर कचरे और अपशिष्टों का निस्तारण भी एक कठिन कार्य है। सही ढंग से इनका निस्तारण न करने की दशा में न केवल पर्यावरण प्रदूषण की विकट समस्या उत्पन्न हो जाती है, बल्कि ऐसे स्थलों का स्वरूप ही भद्दा हो जाता है, जिससे पर्यटकों का आकर्षण कम होने लगता है, और पर्यटन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। पर्यटन के सतत विकास के लिए पर्यटन एवं पर्यावरण के आपसी संबंधों को पूरी गंभीरता से समझना होगा और पारिस्थितिकी तथा पारिस्थितिकी–तंत्रों को समुन्नत करने हेतु विशिष्ट योजना के तहत इनका समुचित प्रबंधन सुनिश्चित किया जाना चाहिए। पारिस्थितिकी पर्यावरण विकास का मूलमंत्र है कि प्राकृतिक संसाधनों पर इसका हानिकारक प्रभाव न पड़े तथा उस क्षेत्र के समाज, अर्थव्यवस्था एवं संस्कृति को प्रभावित न करे।

ग्रामीण भारत में इको पर्यटन की संभावनाएं

इको पर्यटन प्राकृतिक क्षेत्रों की वह दायित्वपूर्ण यात्रा है जिससे पर्यावरण संरक्षण होता है और स्थानीय लोगों की खुशहाली बढ़ती है। ग्रामीण भारत में इको पर्यटन की दिशा में हो रही प्रगति से समूचे पर्यटन उद्योग में एक तरह की ताजगी और आत्मीयता का संचार होता दिखाई दे रहा है। इको पर्यटन पूरे विश्व में एक बहुत बड़े उद्योग के रूप में विकसित हो रहा है जिससे राष्ट्र के साथ ही, सामान्य जनों की स्थिति में सुधार के अवसर बढ़ रहे हैं।

इको पर्यटन से अर्जित आय का उपयोग प्रकृति तथा वन्य प्राणियों की सुरक्षा के अतिरिक्त राष्ट्र के विकास में मददगार साबित होगा। जैव–विविधता को बनाए रखने हेतु हमें पर्यावरण–पारिस्थितिकी एवं पारिस्थितिकी–तंत्र के ह्रास पर अनिवार्यतः लगाम लगानी होगी ताकि जैव विविधता का मनोहारी सौंदर्य पर्यटकों को आकर्षित करता रहे और पर्यटन को सतत् बढ़ावा मिलता रहे।

भारत दुनिया भर में गांवों की धरती के रूप में विख्यात है। इसकी असली तस्वीर गांवों में ही दिखाई देती है। लिहाजा सिर्फ विदेशी पर्यटक ही नहीं, बल्कि देशी सैलानी भी देश के अलग–अलग प्रांतो के गांवों में बिखरी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत को नजदीक से देखने में दिलचस्पी रखते हैं। इससे ग्रामीणों की आमदनी में बढ़ोत्तरी और जीवन–स्तर में सुधार आता है। मगर दुर्भाग्य से अब तक सैलानियों का आना–जाना भी शहरों और उनके आस–पास के ग्रामीण पर्यटन स्थलों तक ही सीमित रहा है। देशभर के दूरदराज के क्षेत्रों में भी सांस्कृतिक, हस्तशिल्प, कला और विरासत के लिहाज से बेमिसाल गांव फैले हैं। मगर जानकारी और ढांचागत सुविधाओं के अभाव में पर्यटक वहां तक पहुंच ही नहीं पाते।

जैसाकि हम जानते हैं कि ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोग ज्यादातर कृषक हैं, जिनकी आमदनी शहरों में रहने वालों की तुलना में कम होती है। इसका मुख्य कारण गांवों में रोजगार के अवसरों की कमी है। गांवों से युवक–युवतियों का रोजगार की तलाश में शहरों की ओर पलायन का सिलसिला जारी है। फलस्वरूप, गांवों की परंपरागत कलाएं और शिल्प धीरे–धीरे विलुप्त होते जा रहे हैं। ग्रामीण पर्यटन के विकास से ग्रामीण समाज को अपनी आमदनी बढ़ाने का अवसर मिलता है। इससे स्थानीय समुदाय को अपनी अनोखी संस्कृति के विकास और संरक्षण का अवसर मिलता है। ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा दिए जाने से गांवों में होटल, रिसॉर्ट, रेस्तोरां, परिवहन और अन्य संबंधित क्षेत्रों का विकास होगा तथा युवाओं को अपने घर के नजदीक ही रोजगार मिल सकेगा। इससे गांवों में हस्तशिल्प और हथकरघा उद्योगों को भी बढ़ावा मिलेगा; चूंकि भारतीय बाजार सस्ते विदेशी सामान के प्रवेश से प्रभावित हुए हैं। परिणामस्वरूप ग्रामीण इलाकों से शहरों की ओर पलायन में भी कमी आएगी।

दुनिया भर में पर्यटन से होने वाली आय में भारत की हिस्सेदारी मात्र 5.72 प्रतिशत है। दुनिया भर में पर्यटकों की आवाजाही में भारत की हिस्सेदारी मात्र 0.64 प्रतिशत है। एसोचैम द्वारा किए गए सर्वेक्षण के अनुसार वर्ष 2019 तक पर्यटन क्षेत्र की विकास दर 8.8 प्रतिशत हो जाएगी। इस विकास दर की बदौलत अगले 5 वर्षों में भारत पर्यटन के क्षेत्र में दूसरी सबसे बड़ी ताकत बन जाएगा।

सुनियोजित पर्यावरण पर्यटन से संरक्षित क्षेत्रों और उनके आसपास रहने वाले समुदायों को लाभ पहुंचाया जा सकता है। इसके लिए दीर्घावधि जैवविविधिता संरक्षण उपायों और स्थानीय सामाजिक तथा आर्थिक विकास के बीच संबंध कायम करना होगा। जैव–विविधता को बनाए रखने हेतु हमें पर्यावरण–पारिस्थितिकी एव पारिस्थितिकी–तंत्र के ह्रास पर अनिवार्यतः लगाम लगानी होगी ताकि जैव–विविधता का मनोहारी सौंदर्य पर्यटकों को आकर्षित करता रहे और पर्यटन को सतत् बढ़ावा मिलता रहे। पर्यटन से अर्जित आय का उपयोग प्रकृति तथा वन्य प्राणियों की सुरक्षा के अतिरिक्त राष्ट्र के विकास में मददगार साबित हो सकता हैं।

इको पर्यटन के विकास हेतु हमें प्राकृतिक संसाधनों (भूमि, जल और जैव विविधता) का दोहन करने के बजाय उनका विवेकपूर्ण न्यायोचित उपयोग एवं उपभोग करना चाहिए ताकि स्थानीय निवासियों की आजीविका तथा प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग के बीच उत्पन्न होने वाली संघर्ष की स्थिति से बचा जा सके। इको पर्यटन के विकास की पद्धति ऐसी हो जिसका स्थानीय समुदाय की संस्कृति और सामाजिक खूबियों पर कुठाराधात न हो। यह विधा स्थानीय समुदाय की सांस्कृतिक समाजिक अवधारणाओं के अनुरूप होनी चाहिए। इसका नियोजन एवं क्रियान्वयन समग्र क्षेत्र विकास के सिद्धांतों पर आधारित होना चाहिए।

(लेखक इंटरनेशनल प्लांट न्यूट्रीशन इंस्टीट्यूट, इंडिया प्रोग्राम में निदेशक रह चुके हैं।)

ई–मेल : kashinathtiwari730@gmail.com

लंदन पुस्तक मेला

लंदन पुस्तक मेला 2019 में सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार के भारतीय पैविलियन में महात्मा गांधी की 150वीं जयंती पर विशेष जोर रहा। लंदन पुस्तक मेला वैश्विक पुस्तक मेलों में अहम स्थान रखता है। इस मेले का आयोजन 12 से 14 मार्च, 2019 के दौरान हुआ। लंदन पुस्तक मेले में भारतीय पैविलियन का उद्घाटन 12 मार्च, 2019 को प्रकाशन विभाग की महानिदेशक और सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय में संयुक्त सचिव श्री विक्रम सहाय ने किया। भारतीय पैविलियन की प्रदर्शनी में महात्मा गांधी संपूर्ण वाङ्मय (सीडब्ल्यूएमजी) को प्रदर्शित किया गया। प्रकाशन विभाग गांधी साहित्य के सबसे बड़े प्रकाशकों में से एक है। 100 खंडों की यह शृंखला आज भी गांधी साहित्य पर प्रकाशित होने वाली ज्यादातर पुस्तकों का सत्व है। यह शृंखला 55,000 पृष्ठों से भी ज्यादा की है और गांधी जी के शब्दों (जो उन्होंने बोला और लिखा) का ऐतिहासिक दस्तावेज है। इस मूल शृंखला को तैयार करने में 38 साल (1956–94) लगे और प्रकाशन विभाग इसे सफलतापूर्वक डिजिटाइज भी कर चुका है। महात्मा गांधी संपूर्ण वाङ्मय के डिजिटल संस्करण को भी यहां प्रदर्शित किया गया।

गांधी जी पर मेले में प्रदर्शित कुछ अन्य गुणात्मक पुस्तकों में 'महात्मा' (8 खंडों में) और डी. जी. तेंदुलकर की पुस्तक 'गांधी इन चंपारण', 'रोमेन रोलैंड एंड गांधी कोरस्पॉन्डेंस', जोसेफ डोके की किताब 'एम. के. गांधी– एन इंडियन पैट्रियट इन साउथ अफ्रीका' और जे. बी. कृपलानी की किताब 'गांधी– हिज लाइफ एंड थॉट' शामिल रहीं।

इसके अलावा, भारत की संस्कृति, इतिहास और पौराणिक कथाओं पर आधारित कई किताबों को भी यहां प्रदर्शित किया गया। पैविलियन में महात्मा गांधी के जीवन और समय, स्टेच्यू ऑफ यूनिटी और भारत की अन्य उपलब्धियों पर डिजिटल मीडिया संवाद का भी आयोजन किया गया।

इस दौरान लंदन ओलंपिया में एक सेमिनार का आयोजन भी किया गया, जो लंदन पुस्तक मेले का ही हिस्सा था। सेमिनार का विषय था 'महात्मा गांधी संपूर्ण वाङ्मय के प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक संस्करणों का निर्माण'। सेमिनार के दौरान वैश्विक समुदाय के साथ महात्मा के नजरिए और कार्यों को साझा किया गया। सेमिनार में भाग लेने वालों को बताया गया कि सीडब्ल्यूएमजी की 100 खंडों की शृंखला संस्कृति मंत्रालय के गांधी पोर्टल पर सर्च फॉर्मेट में मुफ्त ब्राउजिंग के लिए उपलब्ध है। साथ ही, यह गांधी हैरिटेज पोर्टल पर भी उपलब्ध है, जिसका संचालन साबरमती आश्रम संरक्षण और स्मारक ट्रस्ट करता है।

THE LONDON BOOK FAIR

इस पहल को और आगे बढ़ाते हुए सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने भारतीय उच्चायोग, लंदन के साथ मिलकर इंडिया हाउस, लंदन में प्रमुख गांधीवादी प्रोफेसर सतीश कुमार के साथ एक वार्ता का भी आयोजन किया, जिसका विषय था, 'सतत विकास के लिए गांधीवादी मॉडल'। ❑

ग्रामीण पर्यटन के

गुजरात के कच्छ के रण में 'कच्छ एडवेंचर्स इंडिया' ग्रामीण पर्यटन का एक शानदार नमूना है। साल में लगभग साढे तीन महीने तक चलने वाले 'रण उत्सव' के नाम से विख्यात इस पर्यटन मेले में देश–विदेश से आने वाले पर्यटको को एक ही जगह गुजरात के तमाम कलाकारों की जीवंत कलात्मकता देखने को मिल जाती है। दूर–दूर तक फैले श्वेत मरुस्थल के एक कोने पर बसे मिट्टी के घरों में रहने और तारों से भरी रात में साफ आसमान के नीचे चारपाई पर सोने का अनुभव यहा आने वाले पर्यटकों के दिल में गुजरात को हमेशा जिंदा रखता है। खास बात यह है कि ये पूरा आयोजन होडका गांव की ग्राम पर्यटन समिति द्वारा ही किया जाता है।

हिमाचल प्रदेश में स्थित स्पीति घाटी– हिमाचल प्रदेश की यह घाटी अपने यहा आने वाले पर्यटकों को बौद्ध मठों, विलेज ट्रेकिंग, याक सफारी, विलेज होम स्टे और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शानदार सौगात देती है। यहा के पर्यटन कार्यक्रमों का आयोजन करने वाला इकोस्फेयर स्पीति सगठन यहां के स्थानीय समुदाय के साथ काफी गहराई से जुडा है और उनके साथ मिलकर ही सारी व्यवस्था करता है। इससे न केवल पर्यटकों को हिमाचल और लद्दाख की एक समन्वित संस्कृति का अनूठा अनुभव होता है, बल्कि स्थानीय समुदायों की आर्थिक–सामाजिक स्थिति में भी सकारात्मक बदलाव संभव हुआ है।

पश्चिम बंगाल में सुंदरबन– सुंदरबन को यूनेस्को ने अतरराष्ट्रीय विरासत वाली जगह घोषित किया है। यह दुनिया का सबसे बडा मैनग्रोव जगल है, जहा के बाघ अपने आकार और भव्यता के लिए खास जाने जाते हैं। सुंदरबन के भारतीय हिस्से में 102 द्वीप हैं, जिनमें से केवल आधे से कुछ ज्यादा ही आबाद हैं। यहा का ग्रामीण जीवन बहुत चुनौतीपूर्ण है क्योंकि यहा न तो पीने के पानी की उपलब्धता है, न बिजली, सडकें और गाड़ियां हैं। लोग मिट्टी और फूस के बने घरों में रहते हैं और निरतर बाघों के हमले के साये में जीते हैं। सुंदरबन के ऐसे जगलों में कई इको रिसॉर्ट हैं, जो स्थानीय समुदायों द्वारा चलाए जाते हैं। इस विशेष रिसॉर्ट में स्थानीय स्टाइल में बनी झोपडिया हैं, जो धान के खेतों से घिरी हैं। यहां रहने वाले पर्यटक ग्रामीण गतिविधियों में हिस्सा ले सकते हैं और देसी नावों में बैठकर पतले घुमावदार जलमार्गों में अद्भुत अनुभव ले सकते हैं।

कांगडा घाटी– ग्रामीण पर्यटन का किसी जगह की कला पर असर देखना हो, तो कांगड़ा घाटी के गुनेहर गांव में देखा जा सकता है। हिमाचल प्रदेश के इस गांव में जर्मन मूल के भारतीय कला प्रेमी फ्रैंक श्लिष्टमैन ने एक परियोजना की शुरुआत

कुछ प्रमुख आकर्षण

की थी, जिसने देखते–देखते हुए इस भूले–बिसरे गांव को एक प्रसिद्ध कला केंद्र में बदल दिया। इस गांव में आज एक आर्ट गैलरी, कारोबारियों के 70 पुराने घरों का जीर्णोद्धार कर बनाया गया इकोलॉजिकल बूटिक, गेस्टहाउस और एक फ्यूजन रेस्टोरेंट है। यहां अक्सर कला समारोह आयोजित किए जाते हैं। इस गांव में मूलतः गद्दी और बारा भंगाली जनजाति के लोग रहते हैं जो दरअसल भेड़ चराने वाली प्रजाति है। पर्यटकों को उनके बीच रहने और उनकी जीवनशैली देखने का मौका मिलता है।

राजस्थान का बिश्नोई गांव– जोधपुर से 40 मिनट की दूरी पर स्थित बिश्नोई गांव ग्रामीण राजस्थान का वो बेहतरीन अनुभव पर्यटकों को देता है, जो वैसे महसूस कर पाना नामुमकिन है। बिश्नोई समाज इस हद तक प्रकृति प्रेमी हैं कि हिंदू होने के बावूजद केवल पेड़ों के संरक्षण की दृष्टि से अपने मृतकों को जलाने की जगह दफनाना पसंद करता है। यहां पाश्चात्य जीवनशैली की सुविधाओं से युक्त पारंपरिक निवास हैं जहां पर्यटकों को बुनकर समाज के साथ रहने और उनके जीवन को निकट से देखने का मौका मिलता है। यहां आने वाले पर्यटकों को राजस्थान का विख्यात आतिथ्य और घर में बना हुआ शानदार भोजन मिलता है। लोकनृत्य से उनका स्वागत होता है, बिश्नोई गांव की जीप सफारी, ऊंट सफारी और विलेज ट्रेकिंग के अलावा पर्यटकों के लिए यहां खास उत्सव का भी आयोजन किया जाता है, जो यहां के ग्राम्य जीवन का सहज पारंपरिक हिस्सा है।

किला रायपुर खेल उत्सव– पंजाब में लुधियाना के निकट सालाना आयोजित होने वाला यह उत्सव पंजाबी लोक परंपराओं और लोक–संस्कृति को समझने–जीने का एक अद्भुत अवसर देता है। 1933 से चल रहे उत्सव में ग्राम्य जीवन में शारीरिक शक्ति का महत्व दर्शाने वाली कई प्रतियोगिताएं शामिल होती हैं, जैसे दांतों से मोटरसाइकिल उठाना, बालों से ट्रैक्टर खींचना इत्यादि। बैलगाड़ी की दौड़ यहां का एक प्रमुख आकर्षण होता है और भांगड़ा सहित लोकगीतों की महफिल के साथ पंजाबी थाली का स्वाद पर्यटकों को भारतीय संस्कृति के एक समृद्ध स्वरूप का दर्शन करा जाता है।

पुष्कर मेला– राजस्थान में अजमेर से लगभग 11 किमी दूरी पर पुष्कर में हर वर्ष पुष्कर मेले का आयोजन किया जाता है। यह मेला कार्तिक पूर्णिमा के दिन से लगता है और सात दिनों तक चलता है। पुष्कर मेले के नाम से प्रसिद्ध इस मेलें में देश–विदेश से हजारों की संख्या में पर्यटक आते हैं। पुष्कर एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थान माना जाता है। यह विशेष रूप से इसलिए भी प्रसिद्ध है क्योंकि यहां पर पूरी दुनिया में स्थित एकमात्र ब्रह्मा मंदिर है। पुष्कर में लगने वाला ऊंट मेला अपने आप में एक अनूठा मेला है। साथ ही, सबसे बड़े पशु मेलें के रूप में प्रसिद्ध है। मेले के समय यहां संस्कृति का अद्भुद मिलन दर्शनीय होता है। एक तरफ यहां पर बड़ी संख्या में विदेशी और देशी सैलानी पहुंचते हैं और दूसरी तरह राजस्थान और आसपास के आदिवासी और ग्रामीण लोग अपने पशुओं को लेकर मेलें में आते हैं। रेत के विशाल मैदान पर होने वाले मेलें में ऊंटो की संख्या अधिक रहती थी पर अब लोग इनके अलावा अन्य मवेशियों को लेकर भी मेलें में आते हैं।

अतुल्य नदी : अतुल्य गांव

–अरुण तिवारी

भारत में शायद ही कोई गांव हो, जिसका किसी न किसी नदी से सांस्कृतिक रिश्ता न हो। हर नदी के अपने कथानक हैं, गीत–संगीत हैं; लोकोत्साव हैं। नदी में डुबकी लगाते, राफ्टिंग–नौका विहार करते, मछलियों को अठखेलियां करते देखते हुए घंटों निहारते हमें जो अनुभूति होती है, वह एक ऐसा सहायक कारक है, जो किसी को भी नदियों की ओर आकर्षित करने के लिए पर्याप्त है। किंतु इस पूरे आकर्षण को नदी, गांव और नगर के बीच के सम्मानजनक रिश्ते की पर्यटक गतिविधि के रूप में विकसित करने के लिए कुछ कदम उठाने ज़रूरी होंगे।

दिलचस्प है कि हमारा घूमना–घुमाना, आज दुनिया के देशों को सबसे अधिक विदेशी मुद्रा कमाकर देने वाला उद्योग बन गया है। विश्व आर्थिक फोरम का निष्कर्ष है कि भारतीय पर्यटन उद्योग में भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 25 फीसदी तक योगदान करने की क्षमता है; वह भी गांवों के भरोसे। फोरम मानता है कि भारत के गांव विरासत, संस्कृति और अनुभवों के ऐसे महासागर हैं, जिन तक पर्यटकों की पहुंच अभी शेष है। गांव–आधारित प्रभावी पर्यटन को गति देकर, भारत वर्ष 2027 तक प्रति वर्ष 150 लाख अतिरिक्त पर्यटकों को आकर्षित करने की क्षमता हासिल कर सकता है। इस तरह वह 25 अरब अमेरिकी डॉलर की अतिरिक्त विदेशी मुद्रा अर्जित कर सकता है। इसके लिए भारत को अपने 60 हज़ार गांवों में कम से कम एक लाख उद्यमों को गतिशीलता प्रदान करनी होगी। यह भारत में ग्रामीण पर्यटन के विकास की पूर्णतया वाणिज्यिक दृष्टि है। भारतीय दृष्टि भिन्न है।

भ्रमण की भारतीय दृष्टि

भ्रमण तो कई जीव करते हैं, किंतु मानव ने अपने भ्रमण का उपयोग अपने अंतर्मन और अपने बाह्य जगत के विकास के लिए किया। बाह्य जगत का विकास यानी सभ्यता का विकास और अंतर्मन का विकास यानी सांस्कृतिक विकास। इसीलिए मानव अन्य जीवों की तुलना में अधिक जिज्ञासु, अधिक सांस्कृतिक, अधिक हुनरमंद और अधिक विचारवान हो सका; अपनी रचनाओं का विशाल संसार गढ़ सका। स्पष्ट है कि भ्रमण, मनुष्य के लिए मूल रूप से सभ्यता और संस्कृति दोनों को पुष्ट करने का माध्यम रहा है। भ्रमण की भारतीय दृष्टि का मूल यही है। इसी दृष्टि को सामने रखकर भारतीय मनीषियों ने भिन्न उद्देश्यों के आधार पर भ्रमण को पर्यटन, तीर्थाटन और देशाटन के रूप में वर्गीकृत किया है और तीनों को अलग–अलग वर्गों के लिए सीमित किया है। भ्रमण के इस वर्गीकरण तथा दृष्टि को यदि हम बचाकर रख सकें, तो बेहतर होगा; वरना हमारे गांवों के भ्रमण में जैसे ही पूर्णतया नई वाणिज्यिक दृष्टि का प्रवेश होगा, हमारा भ्रमण तात्कालिक आर्थिक लाभ का माध्यम तो बन जाएगा, किंतु भारतीय गांवों को लंबे समय तक गांवों के रूप–स्वरूप में बचा रखना असंभव हो जाएगा। भारतीय गांवों के बचे–खुचे रूप–स्वरूप के पूरी तरह लोप का मतलब होगा, भारत की सांस्कृतिक इकाइयों का लोप हो जाना। सोचिए कि क्या यह उचित होगा?

तीर्थ भाव से हो ग्राम्य पर्यटन का विकास

हमें नहीं भूलना चाहिए कि भारत के गांव महज सामाजिक इकाइयां न होकर, पूर्णतया सांस्कृतिक इकाइयां हैं। हमारे गांवों

की बुनियाद सुविधा नहीं, रिश्तों की नींव पर रखी गई है। भारतीय गांवों में मौजूद कला, शिल्प, मेले, पर्व आदि कोई उद्यम नहीं, बल्कि एक जीवनशैली हैं। बहुमत भारत आज भी गांवों में ही बसता है। इसीलिए आज भी कहा जाता है कि यदि भारत को जानना हो तो भारत के गांवों को जानना चाहिए। रिश्ते–नाते, संस्कृति, विरासत और अपनी प्राकृतिक धरोहरों को संजोकर रखने के कारण भारत के 60 हज़ार गांव अभी भी तीर्थ ही हैं। तीर्थाटन–तीर्थयात्रियों से सादगी, संयम, श्रृद्धा और अनुशासन की मांग करता है। तीर्थयात्री से लोभ–लालच, छल–कपट की अपेक्षा नहीं की जाती। भारतीय गांवों में पर्यटन और पर्यटकों के रुझान का विकास इसी भाव और अपेक्षा के साथ करना चाहिए। नदियां इस भाव को पुष्ट करने का सर्वाधिक सुलभ, सुगम्य और प्रेरक माध्यम हैं और आगे भी बनी रह सकती हैं। भारत की नदियां आज भी अपनी यात्रा की ज्यादातर दूरी ग्रामीण इलाकों से गुजरते हुए तय करती हैं; नदियां आज भी भारतीय संस्कृति व सभ्यता की सर्वप्रिय प्रवाह हैं।

नदी पर सवार संभावना

गौर कीजिए कि भारत नदियों का देश है। सिंधु, झेलम, चेनाब, रावी, सतलुज, ब्यास, मेघना, गंगा, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी, नर्मदा, ब्रह्मपुत्र, तुंगभद्रा, वैगई, महानदी, पेन्नर, पेरियार, कूवम, अडयार, माण्डवी, मूसी, मीठी, माही, वेदवती और सुवर्णमुखी; गिनती गिनते जाइए कि भारत में नदियां ही नदियां हैं। मरुभूमि होने के बावजूद राजस्थान 50 से अधिक नदियों का प्रदेश है। राजस्थान के चुरु और बीकानेर को छोड़कर, भारत में शायद ही कोई जिला ऐसा हो, जहां नदी न हो। भारत के हर प्रखंड के रिकॉर्ड में आपको कोई न कोई छोटी–बड़ी नदी लिखी मिल जाएगी। भारत में शायद ही कोई गांव हो, जिसका किसी न किसी नदी से सांस्कृतिक रिश्ता न हो। मुण्डन से लेकर मृत्यु तक; स्नान से लेकर पूजन, पान, दान तक; पर्व, परिक्रमा से लेकर मेले तक, सन्यास, शिष्यत्व से लेकर कल्पवास तक; सभी कुछ नदी के किनारे। हर नदी के अपने कथानक हैं; गीत–संगीत हैं; लोकोत्सव हैं। भैया दूज, गंगा दशहरा, छठ पूजा, मकर सक्रांति पूरी तरह नदी पर्व हैं। गंगा के किनारे वर्ष में 21 बार स्नान पर्व होता है। गंगा, शिप्रा और गोदावरी के किनारे लगने वाले कुंभ में बिना बुलाए करोड़ों जुटते आपने देखे ही होंगे। 14 देवताओं की सैयद नदी में स्नान कराने के कारण खारची पूजा (त्रिपुरा) तथा मूर्ति विसर्जन के कारण गणेश चतुर्थी, दुर्गा पूजा, विश्वकर्मा पूजा आदि पर्वों का नदियों से रिश्ता है। नदियां योग, ध्यान, तप, पूजन, चिंतन, मनन और आनंद की अनुभूति की केंद्र हैं ही। नदी में डुबकी लगाते, राफ्टिंग–नौका विहार करते, मछलियों की अठखेलियां करते देखते हुए घंटों निहारते हमें जो अनुभूति होती है, वह एक ऐसा सहायक कारक है, जो किसी को भी नदियों की ओर आकर्षित करने के लिए पर्याप्त है। किंतु इस पूरे आकर्षण को नदी, गांव और नगर के बीच के सम्मानजनक रिश्ते की पर्यटक गतिविधि के रूप में विकसित करने के लिए कुछ कदम उठाने जरूरी होंगे।

जरूरी कदम

- नदी केंद्रित ग्राम्य पर्यटन को विकसित करने के लिए नदियों को अविरल–निर्मल तथा गांवों को स्वच्छ–सुंदर बनाना सबसे पहली ज़रूरत होगी। एशिया के सबसे स्वच्छ गांव का दर्जा प्राप्त होने के कारण ही मेघालय का गांव मावलिन्नांग आज पर्यटन का नया केंद्र बन गया है।
- नदी–ग्राम्य पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए नदियों को उनकी विशेषताओं के साथ प्रस्तुत करना शुरु करना होगा, जैसे सबसे छोटा आबाद नदी द्वीप–उमानंद, भारत का सबसे पहला नदी द्वीप ज़िला– माजुली, स्वच्छ नदी– चम्बल, भारत का सबसे वेगवान प्रवाह– ब्रह्मपुत्र, सबसे पवित्र प्रवाह– गंगा, एक ऐसी नदी जिसकी परिक्रमा की जाती है – नर्मदा, ऐसी नदी घाटी जिसके नाम पर सभ्यता का नाम पड़ा– सिंधु नदी घाटी, नदियां जिन्हें स्थानीय समुदायों ने पुनर्जीवित किया– अरवरी, कालीबेई, गाडगंगा।
- सच पूछो तो भारत की प्रत्येक नदी की अपनी भू–सांस्कृतिक विविधता, भूमिका और उससे जुड़े लोक कथानक, आयोजन व उत्सव हैं। नुक्कड़ नाटक, नृत्य–नाट्य प्रस्तुति, नदी संवाद, नदी यात्राओं आदि के ज़रिए आगुंतकों को इन सभी से परिचित कराना चाहिए। गंगा, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, कावेरी, गोदावरी, नर्मदा छह मुख्य नदियों को लेकर इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र ने यह शुरुआत की है। इससे न सिर्फ नदियों के प्रति चेतना, जन–जुड़ाव व दायित्व बोध बढ़ेगा, बल्कि नदी–आधारित ग्रामीण पर्यटन को अधिक रुचिकर बनाने में भी मदद मिलेगी।
- नदी पर्यटन का वास्तविक लाभ गांवों को तभी मिलेगा, जब नदी पर्वों–मेलों के नियोजन, संचालन और प्रबंधन में स्थानीय ग्रामीण समुदाय की सहभागिता बढ़े। इसके लिए स्थानीय गांववासियों को ज़िम्मेदार भूमिका में आने के लिए प्रेरित, प्रशिक्षित और प्रोत्साहित करना ज़रूरी होगा।
- केरल ने ग्राम्य जीवन के अनुभवों से रूबरू कराने को अपनी पर्यटन गतिविधियों से जोड़ा है। नदी आयोजनों को भी स्थानीय ग्राम्य अनुभवों, कलाओं, आस्थाओं आदि से रूबरू कराने वाली गतिविधियों से जोड़ा जाना चाहिए। स्थानीय खेलकूद, लोकोत्सव तथा परंपरागत कला–कारीगरी–हुनर प्रतियोगिताओं के आयोजन तथा ग्रामीण खेत–खलिहानों, घरों के भ्रमण इसमें सहायक होंगे।
- उत्तर प्रदेश के जिला गाजीपुर में गंगा किनारे स्थित गांव गहमर एशिया का सबसे बड़ा गांव भी है और फौजियों का मशहूर गांव भी। फौज में भर्ती होना, यहां एक परंपरा जैसा है। नदियों किनारे बसे अनेकानेक गांव ऐसी अनेकानेक खासियत रखते हैं। नदी किनारे के ऐसे गांवों की खूबियों से

पर्यटन : एक पारिवारिक–सामाजिक–आर्थिक क्रिया

पर्यटन, संस्कृत भाषा के मूल शब्द 'अटन' से जुड़कर निकला शब्द है। 'अटन' यानी भ्रमण। पय + अटन = पर्यटन यानी आनंद और ज्ञान की प्राप्ति के लिए भ्रमण। देश + अटन = देशाटन यानी देश–विदेश में भ्रमण। तीर्थ + अटन = तीर्थाटन यानी तीर्थ क्षेत्रों का भ्रमण। अंग्रेजी भाषा में भ्रमण के लिए 'टूरिज्म' शब्द का प्रयोग किया गया है। 'टूरिज्म' शब्द, मूल रूप से लेटिन भाषा के शब्द 'टोमोस' तथा 'टोमोस' शब्द, यहूदी भाषा के 'तोरह' शब्द से निकला है। 'तोरह' शब्द का एक अर्थ है, शिक्षा की खोज। 'टोमोस' का शाब्दिक अर्थ है, वृत्त अथवा पहिए का घूमना।

पर्यटन की अंतर्राष्ट्रीय दृष्टि, सिद्धांत रूप से अपने मूल स्थान से निकलकर किसी भी अन्य देश अथवा स्थान पर 24 घंटे से अधिक ठहरने वाले को पर्यटक कहती है। यह दृष्टि रक्त–संबंध, ज्ञान–सांस्कृतिक विनिमय, साहसिक उद्देश्य, मनोविनोद, चिकित्सा, खोज, समुद्र–दर्शन आदि जैसे उद्देश्यों से की गई यात्रा को पर्यटन की श्रेणी में रखती है। अपने मूल स्थान से दूसरे स्थान पर नौकरी करने, किसी आवासीय विद्यालय में पढ़ने अथवा कहीं स्थायी आवास के लिए की गई यात्रा की श्रेणी में नहीं रखा जाता। पर्यटन की यह दृष्टि व्यापार, वाणिज्य, राजनीतिक परिस्थितियां और धार्मिक आस्था को तीन ऐसी मूल शक्तियां मानती है, जो किसी को पर्यटन हेतु प्रेरित करती है।

गौर कीजिए कि दुनिया में पर्यटन का विकास एकल अथवा पारिवारिक न होकर, सामूहिक क्रिया के रूप में हुआ। द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व पर्यटन के परिणाम चाहे जो रहे हों, लेकिन उसके पश्चात पर्यटन अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में क्रांति का वाहक सिद्ध हुआ। हालांकि पर्यटन में संस्थागत प्रवेश के लक्षण अब सामने आने लगे हैं, लेकिन वास्तव में पर्यटन आज भी एक पारिवारिक–सामाजिक–आर्थिक क्रिया ही अधिक है। पर्यटन, अज्ञान को दूर कर, ज्ञान की नई विधाओं की खिड़कियां खोलता है। पर्यटन, अध्यात्मिक विकास के अवसर देता है। पर्यटन सामाजिक सद्भाव तथा आर्थिक विकास की परिस्थितियां निर्मित करता है। पर्यटन सांस्कृतिक, शैक्षिक, भौतिक और आर्थिक विनिमय को सुलभ बनाता है। यह सुलभता रूढ़ियों से मुक्त होने की प्रेरणा देती है; धर्म, जाति, रंग, वर्ग और वर्ण विभेद की लकीरों को धुंधला करती है। यह सुलभता, कालखंड विशेष की समस्याओं के समाधान सुझाने में भी सहायक सिद्ध होती है।

बड़ा परिवार, महंगाई, समयाभाव, खराब सेहत, अरुचि, तनाव, सूचना का अभाव, खराब असुविधाजनक परिवहन तंत्र तथा पर्यटन–स्थल पर अशांति को पर्यटन के विकास में बाधक माना गया है। अशांति हो तो इंसान क्या, प्रवासी पक्षी भी उस स्थान पर जाना पसंद नहीं करते हैं। अवकाश की अधिक अवधि, औद्योगिक विकास, नगरीकरण, अधिक आय, सस्ता परिवहन, शिक्षा में विशिष्टीकरण, सांस्कृतिक अभिरूचि, प्रचार–तंत्र तथा राजकीय सहयोग को पर्यटन में सहायक माना गया है। जाहिर है कि यदि पर्यटन का विकास करना हो तो इन बाधाओं का निराकरण तथा सहायक पहलुओं का प्रोत्साहन होना ही चाहिए।

लोगों को रूबरू होना अपने आप में एक दिलचस्प अनुभव नहीं होगा? नदी–गांव पर्यटन विकास की दृष्टि से यह एक आकर्षक पर्यटन विषय हो सकता है। इसे नदी–गांव यात्रा के रूप में अंजाम दिया जा सकता है।

- भारत की अनेकानेक हस्तियों, विधाओं का जन्म गांवों में ही हुआ है। माउंट एवरेस्ट फतेह करने वाली प्रथम भारतीय पर्वतारोही बछेंद्रीपाल का गांव नाकुरी, मिसाइलमैन अब्दुल कलाम का गांव रामेश्वरम्, तुलसी–कबीर–रहीम–प्रेमचंद के गांव, कलारीपयट्टु युद्धकला का गांव, पहलवानों का गांव, प्राकृतिक खेती का गांव, मुक़दमामुक्त–सद्भावयुक्त गांव आदि। ऐसी खूबियों वाले गांवों के ग्राम्य पर्यटन विकास के प्रयास गांव–देश का हित ही करेंगे। 'अतुल्य नदी : अतुल्य गांव' के इस प्रस्तावित नारे के आधार पर भी पर्यटन विकास के बारे में विचार करना चाहिए। इसके ज़रिए नगरवासियों की गांवों के प्रति समझ भी बढ़ेगी, सम्मान भी और पर्यटन भी। ऐसे गांव प्रेरक भूमिका में आ जाएंगे; साथ ही, उनकी खूबियों का हमारे व्यक्तित्व व नागरिकता विकास में बेहतर योगदान हो सकेगा। हां, ऐसे गांवों को उनकी खूबियों के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए तैयार रखने की व्यवस्थापरक ज़िम्मेदारी स्थानीय पंचायती राज संस्थानों तथा प्रशासन को लेनी ही होगी। पर्यटन, संस्कृति तथा पंचायती राज विभाग मिलकर ऐसे गांवों के खूबी विशेष आधारित विकास के लिए विशेष आर्थिक प्रावधान करें तो काम आसान हो जाएगा। इसके बहुआयामी लाभ होंगे।
- नदी आयोजनों में होटल और बडी–बडी फैक्ट्रियों में बनी वस्तुओं से अटे पड़े बाज़ार की जगह स्थानीय मानव संसाधन, परिवहन, ग्रामीण आवास, स्थानीय परंपरागत खाद्य–व्यंजनों के उपयोग को प्राथमिकता देने की नीति व योजना पर काम करना चाहिए। इसके लिए जहां गांवों को इस तरह के उपयोग से जुड़ी सावधानियों के प्रति प्रशिक्षित करने की ज़रूरत होगी, वहीं बाहरी पर्यटकों में नैतिकता, अनुशासन, जिज्ञासु व तीर्थाटन भाव का विकास भी ज़रूरी होगा।
- कुंभ अपने मौलिक स्वरूप में सिर्फ स्नान पर्व न होकर, एक मंथन पर्व था। कुंभ एक ऐसा अवसर होता था, जब ऋषि,

ADVENTURE CONNECTION

अपने शोध, सिद्धांत व अविष्कारों को धर्मसमाज के समक्ष प्रस्तुत करते थे। धर्मसमाज उन पर मंथन करता था। समाज हितैषी शोध, सिद्धांत व अविष्कारों को अपनाने के लिए समाज को प्रेरित व शिक्षित करने का काम धर्मगुरुओं का था। राजसत्ता तथा कल्पवासियों के माध्यम से यह ज्ञान, समाज तक पहुंचता था। समाज अपनी पारिवारिक–सामुदायिक समस्याओं के हल भी कल्पवास के दौरान पाता था। एक कालखण्ड ऐसा भी आया कि जब कुंभ, समाज की अपनी कलात्मक विधाओं तथा कारीगरी के उत्कर्ष उत्पादों की प्रदर्शनी का अवसर बन गया। कुंभ को पुनः सामयिक मसलों पर राज–समाज–संतों के साझे मंथन तथा वैज्ञानिक खोजों, उत्कर्ष कारीगरी व पारंपरिक कलात्मक विधाओं के प्रदर्शन का अवसर बनाना चाहिए। इससे गांव–नदी पर्यटन के नज़रिए को ज्यादा संजीदा पर्यटक मिलना तो सुनिश्चित होगा ही; कुंभ देश–दुनिया को दिशा देने वाला एक ऐसा आयोजन बन जाएगा, जिसमें हर कोई आना चाहे।

- नदियों के उद्गम से लेकर संगम तक तीर्थ क्षेत्र, पूजास्थली, तपस्थली, वनस्थली, धर्मशाला और अध्ययनशालाओं के रूप में ढांचागत व्यवस्था पहले से मौजूद हैं। भारत में कितने ही गांव हैं, जहां कितने ही घर, कितनी ही हवेलियां वीरान पड़ी हैं। नदी–गांव पर्यटन में इनके उपयोग की संभावना तलाशना श्रेयस्कर होगा।
- हां, इतनी सावधानी अवश्य रखनी होगी कि नदी–गांव आधारित कोई भी पर्यटन गतिविधि, उपयोग किए गए संसाधन तथा प्रयोग किए गए तरीके सामाजिक सौहार्द, ग्रामीण खूबियों और पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाले न हों। सुनिश्चित करना होगा कि पर्यटन गांव व नदी संसाधनों की लूट का माध्यम न बनने पाएं। गांव–नदी पर्यटन को नगरीय पर्यटन की तुलना में कम खर्चीला बनाने की व्यवस्थात्मक पहल भी जरूरी होगी।

कहना न होगा कि चाहत चाहे तीर्थाटन की हो अथवा पर्यटन की; भारत की नदियों और गांवों में इनके उद्देश्यों की पूर्ति की अपार संभावना है। इस संभावना के विकास का सबसे बड़ा लाभ गांवों के गांव तथा नदियों के नदियां बने रहने के रूप में सामने आएगा। लोग जमीनी हकीकत से रूबरू हो सकेंगे। अपनी जड़ों को जानने की चाहत का विकास होगा। ग्रामीण भारत के प्रति सबसे पहले स्वयं हम भारतवासियों की समझ बेहतर होगी। इससे दूसरे देशों की तुलना में अपने देश को देखने का हमारा नज़रिया बदलेगा। दुनिया भी जान सकेगी कि भारत एक बेहतर सभ्यता और संस्कृति से युक्त देश है। इसी से भारत की विकास नीतियों में गांव और प्रकृति को बेहतर स्थान दे सकने वाली कुछ और गलियां खुल जाएंगी। नदियों के सुख–दुख के साथ जन–जुड़ाव का चुम्बक कुछ और प्रभावी होकर सामने आएगा। भारत के अलग–अलग भू–सांस्कृतिक इलाकों के लिए स्थानीय विकास के अलग–अलग मॉडल विकसित करने की सूत्रमाला भी इसी रास्ते से हाथ में लगेगी। कितना अच्छा होगा यह सब!

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं। ग्रामीण विकास और सामाजिक सरोकार के विषयों पर लिखते रहते हैं।)

ई–मेल : **amethiarun@gmail.com**

ग्रामीण पर्यटन का अर्थशास्त्र

–शिशिर सिन्हा

देश में ग्रामीण पर्यटन के प्रति ललक बढ़ी है और सैलानी गांव जा रहे हैं। देश के करीब सात लाख गांवों में से हर गांव के पास अपनी कहानी, विरासत व संस्कृति साझा करने के लिए है। 'इंपैक्ट टूरिज्म' का मॉडल 25 अरब डॉलर (यानी करीब पौने दो लाख करोड़ रुपये से कुछ ज्यादा) का कारोबार मुहैया करा सकता है जिसके तहत 1.5 करोड़ सैलानियों का सत्कार होगा और ग्रामीण–स्तर पर एक लाख से ज्यादा उद्यमी तैयार होंगे। इस तरह का मॉडल अफ्रीका में मसाई कबीले ने अपनाया। अपनी विरासत और संस्कृति में उन्हें आमदनी की संभावना दिखी और इस तरह वो शहर जाने के बजाए गांवों में ही टिके रह सके।

किसानों की आमदनी कैसे बढ़े और ग्रामीण अर्थव्यवस्था किस तरह से मजबूत हों। यहां एक विकल्प ये है कि किसानी के साथ–साथ अन्य गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाए और इस मामले में 'ग्रामीण पर्यटन' एक मजबूत माध्यम नजर आता है।

ग्रामीण पर्यटन को एक मजबूत माध्यम के रुप में पेश करने की वजह भी साफ है। वर्षों से सुनते आ रहे हैं कि भारत गांवों में बसता है तो फिर अलग–अलग देशों से इंडिया आने वालों को और इंडिया में रहने वालों को क्यों ना 'भारत' ले चला जाए, ताकि उनको 'भारत' को समझने में आसानी हो। साथ ही, 'भारत' में रहने वालों को अतिरिक्त कमाई का रास्ता खुल सके।

शहरी भागदौड़ से उब चुके लोग भी गांव जाने के लिए उत्सुक होंगे। एक ऐसी जगह जहां ताजी हवा मिले, मिट्टी की सोंधी खुशबू मिले, अलग तरह के जायके से रूबरू हो सकें। कच्चे घरों में रहने और पारंपरिक चूल्हों पर रोटी पकते देखने का एक अलग ही आनंद देगा। और यही सब कुछ आर्थिक गतिविधियों में तब्दील होकर ग्रामीणों की जिंदगी बदलने में कामयाब होगा।

वर्ष 2018 के पहले 11 महीनों (जनवरी–नवंबर) के दौरान कुल 93,67,424 लाख विदेशी सैलानी हमारे देश आए जिनसे 1,58,846 करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा हासिल हुई। इसी तरह 170 करोड़ के करीब घरेलू सैलानी देश के एक हिस्से से दूसरे हिस्से में गए। अब जरा सोचिए, अगर इन सब का दस प्रतिशत ही गांव के हिस्से आए तो कितना ज्यादा असर होगा। लेकिन कुछ सवाल हैं। सबसे पहले तो ये कि क्या ऐसा करना संभव हो सकेगा और दूसरा कि क्या गांवों में बुनियादी सुविधाएं और कुशल लोग हैं जो पर्यटन के मिजाज़ को समझते हुए उचित व्यवस्था कर सकें।

इन सवालों का जवाब जानने के पहले यहां पर दो गांवों का जिक्र करना होगा जिन्होंने ग्रामीण पर्यटन के मामले में अपनी अलग पहचान बनाई है। पहला गांव है, गुजरात में कच्छ जिले का होडका। भुज से करीब 60 किलोमीटर दूरी पर बसा ये गांव कहने को देश के करीब सात लाख गांवों में से एक है, लेकिन अपनी पारंपरिक कला, हस्तशिल्प और संस्कृति को मूल रूप में बचाए

रखने की कोशिश से भारी संख्या में देशी–विदेशी पर्यटकों को गांव तक लाने में मिली कामयाबी ने इसे औरों से अलग कर दिया है। गांव की हर युवती कशीदाकारी में दक्ष है। हर घर की एक अलग पहचान है। गांव में एक भी सीमेंट का घर नहीं है। कच्चे घर की रंगाई और उस पर की गई सज्जाकारी देखने लायक है। घर की बनावट कुछ इस तरह है कि गर्मी के दिनों में भी एसी की जरुरत नहीं पड़े। और तो और गांव के लोग ही मिलकर एक रिसॉर्ट चलाते हैं जिससे सैलानियों को बेहतरीन सुविधाएं मिल सकें और वो भी ग्रामीण माहौल में ही। रिसॉर्ट के लिए बकायदा एक वेबसाइट भी है। आज ये गांव ग्रामीण पर्यटन की पहचान के तौर पर देखे जाते हैं।

अब आइए आपको दूसरे गांव, हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिले में स्थित नग्गर ले चलते हैं। सांस्कृतिक विरासत और विशिष्ट वास्तुशैली के लिए मशहूर ये गांव कभी कुल्लू की राजधानी के तौर पर जाना जाता था। जहां यहां पर खास शैली में बने मंदिर हैं, वहीं रोमांचकारी खेलों जैसे ट्रैकिंग व पैरा ग्लाइडिंग में दिलचस्पी रखने वालों के लिए यहां काफी कुछ है। एक विशेष आर्ट गैलरी भी है। गांव में स्थित प्राचीन किले को होटल में तब्दील कर दिया गया है। हर साल अप्रैल में मेला लगता है जो देसी–विदेशी सैलानियों के लिए खास आकर्षण का केंद्र होता है।

पर्यटन ने दोनों ही गांवों की तस्वीर बदल दी है। स्थानीय कला–संस्कृति को बढ़ावा मिला है तो हस्तकला से बने सामान की बिक्री ने अतिरिक्त आय का इंतजाम कर दिया है। गांव के भीतर और आसपास होम स्टे, बेड–ब्रेकफास्ट, छोटे–छोटे गेस्टहाउस और रिसॉर्ट ने स्थानीय लोगों को रोजगार के साधन मुहैया करा दिए हैं। हस्तकारी ने ग्रामीण महिलाओ को अलग पहचान दे दी है। बड़ी बात ये है कि इन गांवों में किसानी तो चल ही रही है, अतिरिक्त माध्यमों से उन किसानों की जिंदगी बेहतर हुई है। ये दो गांव ग्रामीण पर्यटन के बस उदाहरण ही नहीं हैं, बल्कि कृषि–आधारित ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए नई उम्मीद हैं।

अब इस उम्मीद को व्यापक–स्तर पर कामयाब बनाने के लिए जरूरी है कि ग्रामीण पर्यटन के अर्थशास्त्र को समझा जाए। ये अर्थशास्त्र, दूसरे विषयों से जुड़े अर्थशास्त्रों से अलग नहीं है। यहां भी बात संसाधन की है, संसाधनों के उचित इस्तेमाल की है, मांग व आपूर्ति के बीच के संतुलन की है, आर्थिक गतिविधियों के लिए उचित पुरस्कार देना है, और वर्तमान में पूंजी का इस्तेमाल कर भविष्य में और पूंजी तैयार करनी है। इन सब के साथ ही विपणन का समुचित इंतजाम करना होगा, नहीं तो गांव–गांव में पसरी सांस्कृतिक विविधताओं के बारे में लोग जानेंगे कैसे!

हम सभी इस बात से वाकिफ हैं कि गांवों में रहने वाले जी–तोड़ मेहनत कर चुनौतियों को पार पाने की कोशिश करते हैं। कहते हैं कि किसानी तो उनके डीएनए में होता है, लेकिन बात जब किसानी के इतर कुछ अलग करने की हो तो उसे सीखना जरूरी है। पर्यटन के मामले में तो ये बात और भी अहम है। छोटे–बड़े शहरों में कई निजी संस्थाएं हैं जहां से होटल मैनेजमेंट का कोर्स पूरा किया जा सकता है। साथ ही, कुछ खास सरकारी संस्थाएं हैं जहां पर इस तरह के विशेष पाठ्यक्रम पूरे किए जा सकते हैं। मसलन, नेशनल काउंसिल ऑफ होटल मैनेजमेंट एंड कैटरिंग टेक्नोलॉजी की ओर से मान्यता प्राप्त देशभर में स्थित संस्थाओं से बारहवीं की पढ़ाई के बाद होटल मैनेजमेंट और पाक कला से जुड़ी विभिन्न विधाओं में डिप्लोमा व डिग्री कोर्स किया जा सकता है। इसी तरह पाक कला के लिए विशेष संस्थान हैं इंडियन कलनरी इंस्टीट्यूट, जो तिरुपति के साथ–साथ नोएडा में भी मौजूद है। इसी तरह इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रैवल एंड टूरिज्म मैनेजमेंट से एमबीए की पढ़ाई की जा सकती है। ऐसे संस्थानों से प्रशिक्षण हासिल करने के बाद पेशेवर रुख अपनाने में मदद मिलेगी। यही नहीं, आतिथ्य सत्कार के नए तौर–तरीकों को स्थानीय संस्कृति में रंग कर पर्यटकों को बेहतर सुविधाएं मुहैया कराना संभव हो सकेगा।

कौशल व उद्यमिता के बाद जरूरत होती है पूंजी की। वैसे तो कर्ज के लिए गिरवी रखना पड़ता है, लेकिन कई बैंक बगैर गिरवी के 10 से 50 लाख रुपये तक का कर्ज मुहैया कराते हैं। इन योजनाओं पर ब्याज की दर भी कम है। अब बात आती है ज़मीन की। ये बात किसी से छिपी नहीं है कि गांवों में जोत का आकार छोटा होता जा रहा है और उस छोटे से जोत पर खेती करना आसान नहीं। ऐसे में उन छोटे जोत पर रिहाइश की सुविधा विकसित की जा सकती है। हां, इसके पहले ज़मीन के व्यावसायिक इस्तेमाल के लिए सरकारी मंजूरी ले लेना बेहतर होगा।

पुरानी कहावत है, जंगल में मोर नाचा, किसने देखा। यही बात ग्रामीण पर्यटन के साथ भी लागू होती है। गांव में सब कुछ है लेकिन जब लोगों को पता चलेगा, तभी तो वो वहां जाएंगे। और यहीं पर भूमिका है विपणन यानी मार्केटिंग की। खास पहल के तहत देश–विदेश में मेलों का आयोजन किया जाता है जिसके जरिए जहां पर्यटकों को गांवों तक लाने के लिए विशेष प्रदर्शनी लगाई जाती है। वहीं ग्रामीण हस्तशिल्प और हस्तकला के लिए शहरों में बाजार विकसित करना है जिसके जरिए पर्यटक ग्रामीण पर्यटन की ओर आकर्षित हो सकें। देश–विदेश की प्रदर्शनियों में ग्रामीण दस्तकारों को रियायती दर पर जगह मुहैया कराई जाती है।

सच पूछिए तो ग्रामीण शिल्पकार, दस्ताकार ग्रामीण पर्यटन के ब्रांड एंबेसेडर होते हैं। शहरों में ये अपने गांव की संस्कृति–कला की नुमाइंदगी कर लोगों को अपने यहां आने के लिए न्यौता दे सकते हैं। लेकिन इसके लिए जरुरी है कि इस तरह की प्रदर्शनी के लिए सस्ती–सहज सुविधाएं मुहैया कराई जाएं। ऐसी ही सुविधा मिलती है राष्ट्रीय राजधानी स्थित दिल्ली हाट में।

दिल्ली पर्यटन की ओर से राष्ट्रीय राजधानी में तीन जगहों पर दिल्ली हाट विकसित किए गए हैं। इन हाटों में पंजीकृत शिल्पकारों, दस्तकारों को 15–15 दिन के लिए रियायती दरों पर

किराए पर स्टॉल मुहैया कराया जाता है। इससे दो फायदे होते हैं– एक ओर जहां हस्तकला की लागत नहीं बढ़ती, वहीं देश के विभिन्न हिस्सों से आए लोगों को अपना सामान बेचने में मदद मिलती है। खास बात ये है कि दिल्ली हाट में केवल हस्तकला या दस्तकारी के सामान ही नहीं बिकते, अलग–अलग प्रांतों के भोजन भी मिलते हैं। समय–समय पर सांस्कृतिक आयोजन भी किए जाते हैं। ये सब कुछ केवल ग्रामीण कारीगरों को जीविका का साधन मुहैया कराने के लिए ही नहीं किया जाता है, बल्कि उसका एक मकसद लोगों को गांवों तक खींच लाना भी है।

अर्थतंत्र की अहम कड़ी है विपणन। सामान चाहे कितना भी अच्छा क्यों ना हो, जब तक लोगों को जानकारी नहीं होगी, तब तक उस अच्छाई का कोई फायदा नहीं। ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए डिजिटल माध्यमों का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल करना फायदेमंद होगा। वेबसाइट तो विकसित करनी ही चाहिए, साथ में मोबाइल एप भी हो तो और भी फायदेमंद। गुजरात के होडका और हिमाचल प्रदेश के नग्गर के अलावा बातें चाहे मेघालय के मावलिनोंग, (एशिया के सबसे साफ गांव) की हो या फिर ओडिशा के पीपली, सिक्किम के लाचूंग व लाचेन, राजस्थान के बिश्नोई, जम्मू–कश्मीर के धाव हनु या फिर पंजाब के किला रायपुर गांव की, अगर इन सभी ने अपनी अलग पहचान बनाई है तो उसमें डिजिटल माध्यमों के इस्तेमाल का बड़ा योगदान रहा है।

ये बात ठीक है कि देश में ग्रामीण पर्यटन के प्रति ललक बढ़ी है और सैलानी गांव जा रहे हैं, लेकिन अभी कोई आधिकारिक अनुमान नहीं है कि ग्रामीण पर्यटन का आकार कितना बड़ा हो चुका है। यहां पर वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम की एक रिपोर्ट (इंक्रेडिबल इंडिया 2.0 इंडियाज़ $20 बिलियन टूरिज़्म अपॉर्च्युनिटी) के जरिए ग्रामीण पर्यटन की संभावनाओं को समझा जा सकता है। रिपोर्ट कहती है कि ग्रामीण पर्यटन और पारिस्थितिकी पर्यटन की संभावनाओं का अभी तक दोहन नहीं किया जा सका है। इन दोनों को एक साथ 'इंपेक्ट टूरिज्म' के तौर पर पेश किया जा सकता है।

रिपोर्ट के मुताबिक, करीब छह लाख गांवों में से हर गांव के पास अपनी कहानी, विरासत व संस्कृति साझा करने के लिए है। 'इंपैक्ट टूरिज्म' का मॉडल 25 अरब डॉलर (यानी करीब पौने दो लाख करोड़ रुपये से कुछ ज्यादा) का कारोबार मुहैया करा सकता है जिसके तहत 1.5 करोड़ सैलानियों का सत्कार होगा और ग्रामीण–स्तर पर एक लाख से ज्यादा उद्यमी तैयार होंगे। इस तरह का मॉडल अफ्रीका में मसाई कबीले ने अपनाया। अपनी विरासत और संस्कृति में उन्हें आमदनी की संभावना दिखी और इस तरह वो शहर जाने के बजाए गांवों में ही टिके रह सके।

कुछ इसी तरह की कामयाबी भारत में दिख सकती है और इसकी जरुरत भी है। 2011 की जनगणना के शुरुआती नतीजों पर रजिस्ट्रार जनरल और सेंसस कमिश्नर की ओर से पेश ब्यौरे के मुताबिक कुल आबादी में ग्रामीण आबादी की हिस्सेदारी 2001 के 72.19 फीसदी से घटकर 68.84 हो गई। दूसरी ओर, शहरीकरण का स्तर 27.81 फीसदी से बढ़कर 31.16 फीसदी हो गया। यह भी नहीं भूलें कि 68 फीसदी से ज्यादा आबादी गांवों में रहने के बावजूद कृषि व उससे जुड़ी गतिविधियों की सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में हिस्सेदारी 13.14 फीसदी है। जाहिर है कि ग्रामीण पर्यटन का अर्थशास्त्र पूरे देश के अर्थशास्त्र में कुछ हद तक तो बदलाव ला ही सकता है।

अंत में एक कहानी लद्दाख के सुदूर गांव सुमदा चेनमो की। गांव हजार वर्ष से भी पुराना है और ये उम्र गौतम बुद्ध की लकड़ी से बनी मूर्तियों के जरिए तय की गई। कुछ साल पहले की बात है। तंग रास्तों पर पैदल चल कर सैलानी इस गांव तक पहुंच तो जाते थे। लेकिन वो गांव के बाहर ही कैम्प में रात काटते थे और बहुत ही सीमित मात्रा में स्थानीय संसाधनों का इस्तेमाल करते थे। गांव में बिजली नहीं थी। सुविधाएं भी ऐसी नहीं जिनका इस्तेमाल सैलानी कर सकें। 2014 में ग्लोबल हिमालयन एक्सपिडिशन नाम की संस्था ने सौर ऊर्जा के माध्यम से गांव के हर घर में एलईडी लगवाया। सड़कों पर रोशनी का इंतजाम हुआ। टीवी चलने की व्यवस्था बनी। मोबाइल व कैमरा चार्जिंग प्वाइंट लगाए गए। गांव में सुविधाएं विकसित की गई। होम स्टे की व्यवस्था लागू की गई। जब सैलानियों को इन सबके बारे में पता चला तो वो गांव में आकर ठहरने लगे और ग्रामीणों के लिए आमदनी का माध्यम बने।

(लेखक 'द हिंदू' बिजनेस लाइन में सीनियर डिप्टी एडिटर हैं।)
ई–मेल : hblshishir@gmail.com

ग्रामीण क्षेत्रों में विकसित होता पर्यटन उद्योग

–डॉ. नरेन्द्रपाल सिंह

ग्रामीण पर्यटन ग्रामीण क्षेत्र के सर्वांगीण विकास में योगदान देता है। यह दस्तकारी, मनोरंजन, कुटीर उद्योग आदि क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर पैदा करता है। ग्रामीण पर्यटन, संस्कृति की रक्षा और उसका पोषण करता है और स्थानीय कलाकारों, दस्तकारों, नृतकों और रंगकर्मियों को बढ़ावा देता है। यह अंतर्राष्ट्रीय–स्तर पर भी सद्भावना और मैत्री विकसित करने के साथ–साथ राष्ट्रीय एकता को भी मजबूत बनाता है।

आज पर्यटन पूरे विश्व में एक बहुआयामी प्रदूषणरहित तथा तेजी से बढ़ने वाले उद्योग के रूप में देखा जा रहा है जिसमें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार की अनेक संभावनाएं मौजूद हैं। पर्यटन उद्योग धन कमाने की दृष्टि से ही उपयोगी नहीं है बल्कि यह एक जनोपयोगी व्यवसाय भी है। हमारा देश प्राकृतिक सौंदर्य, धार्मिक तथा सांस्कृतिक महत्व के पर्यटन स्थलों तथा परंपरागत महोत्सवों की वजह से पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र रहा है। भारत की लगभग 74 प्रतिशत जनसंख्या करीब सात लाख गांवों में रहती है (जनगणना 2011) लेकिन उनके लिए जीविका के साधन सीमित होते जा रहे हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि मात्र किसानी के भरोसे गांव में जीविका चलाना आसान नहीं रह गया है। ऐसी स्थिति में क्या कुछ किया जाए जिससे गांव, गांव रह सके और गांव वालों के लिए अच्छी आमदनी का इंतजाम हो सके। यह 'ग्रामीण पर्यटन' को बढ़ावा देकर ही संभव हो सकता है।

ग्रामीण पर्यटन को कुछ इस तरह से परिभाषित किया गया है– "पर्यटन का वह रूप जो ग्रामीण जीवन, कला, संस्कृति और ग्रामीण स्थलों पर धरोहर को प्रदर्शित करता है जिससे स्थानीय समुदाय को आर्थिक और सामाजिक लाभ प्राप्त होता है और जो सुखद पर्यटन अनुभव के लिए पर्यटकों और स्थानीय लोगों के बीच विचार–विनिमय में मदद करता है उसे 'ग्रामीण पर्यटन' कहा जा सकता है।" ग्रामीण पर्यटन अनिवार्य रूप से एक ऐसी गतिविधि है जो देश के देहाती इलाकों में संचालित होती है। यह बहुआयामी है जिसमें कृषि पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, प्रकृति पर्यटन, साहसिक पर्यटन और पर्यावरण पर्यटन आदि शामिल हैं। ग्रामीण पर्यटन उद्योग उस व्यवस्था को कहा जाता है जिसके माध्यम से पर्यटकों को ग्रामीण जीवनशैली, कला–संस्कृति, अर्थव्यवस्था, ग्रामीण अंचलों की धरोहर आदि से रूबरू होने का अवसर मिलता है। इन अवसरों को प्रदान करने

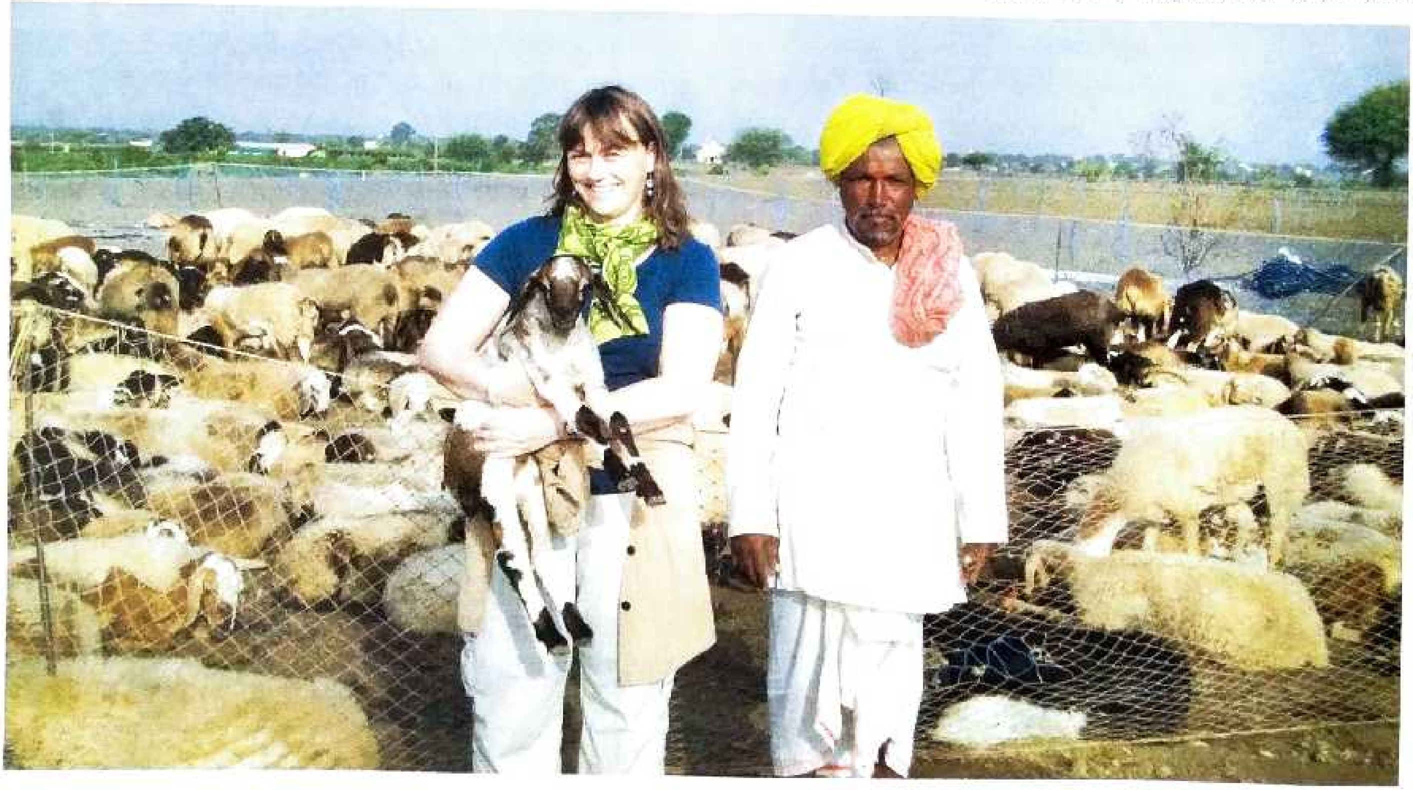

अथवा उन तक पहुंचने में सहायता प्रदान करने वाले व्यक्तियों एवं संस्थाओं को इस सेवा के बदले आय की प्राप्ति होती है। ग्रामीण पर्यटन अनुभव–उन्मुखी होता है, इसके पर्यटन स्थलों पर आबादी बिखरी हुई होती है, प्राकृतिक वातावरण की प्रमुखता होती है, यह त्यौहारों और स्थानीय उत्सवों से सराबोर होता है और संस्कृति, धरोहर व परंपरा के संरक्षण पर आधारित होता है। ग्रामीण पर्यटन में कृषि, संस्कृति, प्रकृति, साहसिक, भोजन, समुदाय, पारिस्थितिकी एवं नृजातीय पर्यटन शामिल हैं।

ग्रामीण पर्यटन को विकसित करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं का विकास सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। भारत ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए समय–समय पर योजनाएं चलाई जाती हैं, जिनमें उन ग्रामीण क्षेत्रों को तलाशा जाता है जहां पर्यटन की काफी संभावनाएं हैं। ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने का उद्देश्य जहां एक ओर ग्रामीण क्षेत्र में ग्रामीण जीवन, संस्कृति, कला और विरासत को प्रदर्शित करना है, वहीं दूसरी ओर ऐसे गांव को प्राकृतिक माहौल में संपत्ति के रूप में विकसित करना है जो कला, संस्कृति, हस्तकला और आभूषण एवं वस्त्रों के मामले में विशेष स्थान रखते हैं। इसका उद्देश्य ग्रामीणों को हर तरीके की मदद एवं सुविधाएं पहुंचाना है।

ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन स्थल विकसित करने से पर्यटकों और स्थानीय लोगों के बीच संवाद होने से दोनों को ही कुछ न कुछ नया सीखने को मिलता है। साथ ही, सामाजिक और आर्थिक तौर पर भी लाभ पहुंचता है। इससे गांव से शहरों की ओर पलायन रूकता है, स्थानीय हस्तकला व हस्तशिल्प को भी बढ़ावा मिलता है। पर्यटकों के लिए ग्रामीण संस्कृति, कला और गीत–संगीत, नृत्य आदि से परिचित होने का अवसर मिलता है जो कलाकारों को बढ़ावा देने एवं उन्हें दक्ष बनाने के लिए अति आवश्यक है।

ग्रामीण पर्यटन उद्योग का विशेष महत्व इस बात में भी है कि यह ग्रामीण क्षेत्र के सर्वांगीण विकास में योगदान देता है। यह दस्तकारी, मनोरंजन, कुटीर उद्योग आदि क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर पैदा करता है। ग्रामीण पर्यटन उद्योग में लगी पूंजी से कृषि और निर्माण उद्योग में लगी पूंजी की तुलना में प्रति रुपया अधिक लोगों को रोजगार मिलता है जो गरीबी उन्मूलन में सहायक है। ग्रामीण पर्यटन, संस्कृति की रक्षा और उसका पोषण करता है जो स्थानीय कलाकारों, दस्तकारों, नृतकों और रंगकर्मियों को बढ़ावा देता है। यह अंतर्राष्ट्रीय–स्तर पर भी सद्भावना और मैत्री विकसित करने के साथ–साथ राष्ट्रीय एकता को भी मजबूत बनाता है।

ग्रामीण पर्यटन का सर्वाधिक प्रभाव हमारे ग्रामीण समाज पर पड़ता है जिसमें गांव के लोग बाहरी पर्यटकों से जुड़ते हैं। जब शहरों और विदेशों से पर्यटक ग्रामीण पर्यटन स्थलों पर आते हैं तो वे अपनी सभ्यता और संस्कृति की छाप छोड़कर जाते हैं। जब ग्रामीण लोग इन पर्यटकों से मिलते हैं तो इन ग्रामीणों का सामाजिक और सांस्कृतिक दायरा भी बढ़ता है। साथ ही, पर्यटक भी उस क्षेत्र की भाषा, संस्कृति, रहन–सहन और सोच से प्रभावित होकर वापिस लौटते हैं। ग्रामीण पर्यटन का केंद्र बनाने हेतु गांव में एक स्वस्थ और सुविधायुक्त जीवन के लिहाज से बुनियादी ढांचा विकसित करना होता है जिसमें अच्छी सड़कें तैयार करना, पीने का शुद्ध पानी और बिजली की सप्लाई सुनिश्चित करनी होती है, जिससे उस पूरे इलाके को इसका फायदा होता है। अच्छी सड़कें बनने से वह पर्यटन क्षेत्र बड़े शहरों से सीधे तौर पर जुड़ता है और बिजली की बेहतर आपूर्ति सुनिश्चित होने से क्षेत्र में लघु एवं कुटीर उद्योग विकसित होते हैं। ग्रामीण पर्यटन के विकसित होने से उस क्षेत्र पर आर्थिक प्रभाव भी पड़ता है क्योंकि वहां लोगों के पास आय बढ़ाने के साधन सीमित होते हैं। आर्थिक प्रभाव के अंतर्गत सेवा क्षेत्र में जुड़े अनेक रोजगार पैदा होते हैं। साथ ही, ग्रामीण उद्यमी थोड़े निवेश में ही अपना कारोबार खड़ा कर अच्छा लाभ कमाते हैं। ग्रामीण पर्यटन के अंतर्गत पर्यटकों के लिए यातायात की बुनियादी सुविधा विकसित करने से लेकर उनके भोजन, निवास और मनोरंजन तक के प्रबंध में अनेक छोटे–बड़े रोजगार के अवसर उत्पन्न हो जाते हैं जिससे क्षेत्र के ग्रामवासी जुड़कर अपनी आय बढ़ा सकते हैं। साथ ही, जहां भारी विनियोग की जरूरत होती है वहां बाहरी पूंजी, नए व्यवसायी एवं नए–नए विचार भी आते हैं जिससे रोजगार के अवसर नई दक्षता के साथ विकसित होते हैं। ग्रामीण पर्यटन से जुड़े लोगों के प्रशिक्षण एवं जागरूकता के कारण उनकी क्षमता एवं योग्यता में बढ़ोतरी होती है।

जहां तक महिला सशक्तीकरण का प्रश्न है, महिलाएं भी ग्रामीण पर्यटन में पुरुषों के बराबर अथवा अधिक भागीदारी करती हैं जिससे उन्हें सामाजिक प्रतिष्ठा भी प्राप्त हो जाती है। ग्रामीण पर्यटन में किसी भी स्थान के परंपरागत हथकरघा और हस्तशिल्प स्थानीय लोगों के लिए गौरव का विषय होते हैं क्योंकि ग्रामीण पर्यटन के माध्यम से पर्यटकों को स्थानीय लोगों से तैयार वस्तुएं सीधे खरीदने का लाभ प्राप्त होता है। पर्यटक स्थानीय, धार्मिक और परंपरागत अनुष्ठानों में शामिल होकर भी लाभ उठा सकते हैं।

ग्रामीण पर्यटन के प्रोत्साहन हेतु सबसे बड़ी समस्या पर्यटकों के लिए आधुनिक सुविधाओं का अभाव है। ग्रामीण पर्यटन का बाजार संगठित नहीं है और उसका प्रचार–प्रसार भी बहुत अधिक प्रभावी ढंग से नहीं किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त, उपयुक्त भोजन की अनुपलब्धता, प्रशिक्षित एवं सुसभ्य गाइडों की कमी, सुविधाजनक एवं तीव्र यातायात साधनों का अभाव, वायु एवं रेल सुविधाओं में समन्वय का अभाव, ग्रामीण इलाकों में होटलों एवं कमरों की कमी, हवाई यात्रा की अनिश्चितताएं एवं प्रतिवर्ष यात्रा दर वृद्धि, सुंदर एवं साफ–सुथरे आवासों की कमी, अनियमित विद्युत व्यवस्था, पर्यटकों के साथ दुर्व्यवहार एवं सुरक्षा की समस्या, दिन–प्रतिदिन बदलते एवं परेशान करने वाले कायदे–कानून, पूछताछ एवं सूचना केंद्रों की कमी, इस क्षेत्र में पूंजी विनियोग का अभाव तथा ढांचागत सुविधाओं में कमी, प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति में लगातार होता

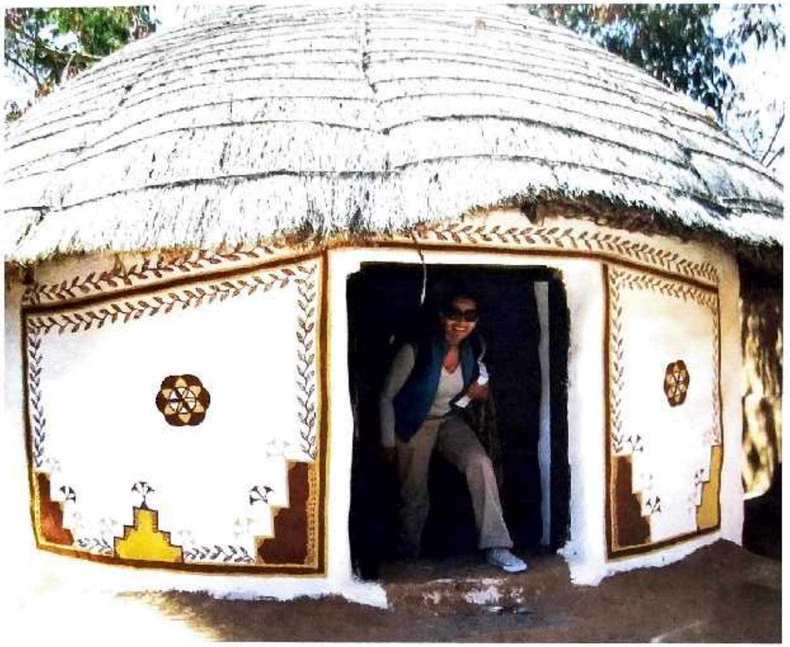

ह्रास, ऐतिहासिक स्थलों की उचित देखरेख न होना आदि अनेक ऐसी समस्याएं हैं जिनके चलते ग्रामीण पर्यटक आकर्षित नहीं हो पाते हैं।

देश में ग्रामीण पर्यटन उद्योग न केवल विदेशी मुद्रा कमाने में सहयोग कर रहा है बल्कि बड़ी मात्रा में रोजगार उपलब्ध कराने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस दृष्टि से ग्रामीण पर्यटन उद्योग में विकास की आज भी पर्याप्त संभावनाएं विद्यमान हैं। ग्रामीण पर्यटन संबंधी योजनाएं तैयार करते समय पर्यटन के कारण होने वाली प्रदूषण की समस्या और उसके रोकथाम के उपायों पर भी विचार किया जाना चाहिए। अनियंत्रित पर्यटन पर्यावरण को दूषित करने के साथ–साथ यौन शोषण, बाल वेश्यावृत्ति जैसी बुराइयों को भी जन्म देता है। अनियंत्रित पर्यटक पर्यटन स्थलों पर कूड़ा–कचरा फेंकते हैं और नदियों, सरोवरों, राष्ट्रीय उद्यानों, ऐतिहासिक स्मारकों और समुद्री सैरगाहों को प्रदूषित करते हैं। अतः यह आवश्यक है कि ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के साथ–साथ पर्यटकों हेतु समुचित व्यवस्था भी की जाए। ग्रामीण पर्यटकों की निरंतर बढ़ती संख्या को देखते हुए पर्यटन स्थलों पर विश्राम स्थलों की संख्या में समुचित वृद्धि की जाए क्योंकि पर्यटक उन्हीं स्थानों पर विशेष रूचि लेते हैं जहां ठहरने और आवागमन के अच्छे साधन सुलभ होते हैं। ग्रामीण पर्यटन स्थलों पर पहुंच के लिए वातानुकूलित बसें अथवा रेल की सुविधा में भी विस्तार किया जाना चाहिए। प्रत्येक दस किमी. की दूरी पर पर्यटन सूचना केंद्र, मुख्य मार्ग से जुड़े गांव में अतिथि गृह तथा इनमें खान–पान की व्यवस्था की उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए।

ग्रामीण पर्यटन को प्रोत्साहन देने के लिए पर्यटन अनुसंधान केंद्रों की स्थापना की जानी चाहिए जो ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन– स्थलों और ग्रामीण पर्यटन से संबंधित क्या–क्या विकास के कार्य हो सकते हैं, का पता लगाएं। ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए दूरदर्शन, रेडियो, समाचार–पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से क्षेत्र विशेष के पर्यटन की जानकारी उपलब्ध कराई जा सकती है। ग्रामीण पर्यटन के व्यवसाय में लगे उद्यमियों को आसान किस्तों पर ऋण उपलब्ध कराया जाना चाहिए ताकि वे आधारभूत सुविधाओं का विस्तार कर सकें।

पर्यटकों की सुरक्षा को ध्यान में रखकर पर्यटन पुलिस फोर्स का गठन किया जा सकता है। पर्यटन स्थलों पर फोन संबंधी समस्याओं को दूर करने के लिए टेलीफोन टॉवर लगाए जाने चाहिए। साथ ही, आवास गृहों में प्राथमिक चिकित्सा उपकरणों तथा आवश्यक दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए, बिजली संकट को देखते हुए बिजली के वैकल्पिक साधनों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाए, ग्रामीण पर्यटन स्थलों पर वहां के पुश्तैनी व्यवसाय को संरक्षण दिया जाए ताकि पर्यटकों को आकर्षित किया जा सके और वस्तुएं भी कम कीमत पर उपलब्ध हो सकें।

आज आवश्यकता इस बात की है कि ग्रामीण पर्यटन के उच्च–स्तरीय मूल्यों का विकास किया जाए ताकि पर्यटक ग्रामीण क्षेत्रों में आकर अपने आप को ठगा हुआ महसूस न करें। इसके लिए विभिन्न भागीदारों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विकसित की जाए। वास्तव में, आज ग्रामीण पर्यटन में निवेश की व्यापक संभावनाएं हैं। अगर ग्रामीण पर्यटन को सुनियोजित ढंग से विकसित किया जाए तो कुशल एवं प्रशिक्षित ग्रामीणों को उनके गांव में ही रोजगार के अवसर उपलब्ध हो सकेंगे। साथ ही, गांव से शहरों की ओर होने वाला पलायन भी रुकेगा और ग्रामीणों के जीवन–स्तर में भी सुधार होगा। यदि यह मूलभूत सुविधाएं ग्रामीण पर्यटन को प्राप्त हो जाती हैं तभी हम ग्रामीण पर्यटन को एक टिकाऊ व्यवसाय के रूप में विकसित कर पाएंगे।

(लेखक साहू जैन कॉलेज, नजीबाबाद, बिजनौर (उत्तर प्रदेश) के वाणिज्य विभाग में सहायक प्रोफेसर हैं।)

ई–मेल : drnps62@gmail.com

पूर्वोत्तर भारत में ग्रामीण पर्यटन की संभावनाएं

–डॉ. मुकेश कुमार श्रीवास्तव

पूर्वोत्तर क्षेत्र के राज्यों में ग्रामीण विकास की संभावनाओं के दोहन के उद्देश्य से पर्यटन के सिद्धांत के इर्द–गिर्द एक मजबूत समेकित विकास रणनीति निश्चित तौर पर उपयोगी होगी। क्षेत्र के सभी आठ राज्यों ने पर्यटन और खासतौर से ग्रामीण पर्यटन के महत्व को समझा है। इन सब ने राज्य पर्यटन नीतियां बनाई हैं जिनमें ग्रामीण पर्यटन को समुचित स्थान दिया गया है। राज्य पर्यटन नीति का बुनियादी उद्देश्य ग्रामीण पर्यटन और बहुरंगी ग्राम्य जीवन को बढावा देकर गांववासियों के विकास और उनके जीवन की स्थितियों में सुधार लाने के अलावा उनकी आमदनी को बढाना है।

पर्यटन के प्रमुख स्वरूपों में ग्रामीण पर्यटन भी शामिल है। यह पर्यटन क्षेत्र के प्राथमिक स्वरूप के तौर पर विकसित हो रहा है। अब इसकी पहचान ग्रामीण आर्थिक विकास के महत्वपूर्ण संवाहक और गांवों में वैकल्पिक आजीविका और रोजगार के स्रोत के रूप में की जा रही है। इसमें ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले युवाओं समेत कुशल और अकुशल दोनों तरह के कामगारों के लिए बडे पैमाने पर रोजगार पैदा करने की अपार क्षमता है। लिहाजा, ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देना गांवों में रोजगार के अतिरिक्त अवसर पैदा करने में काफी मददगार साबित हो सकता है। यह न्यायपूर्ण ढंग से और संवहनीयता के साथ विकास हासिल करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

ग्रामीण पर्यटन का अर्थ पर्यटन का कोई भी ऐसा स्वरूप है जो गांवों के जीवन, कला, संस्कृति और विरासत को उनके परिवेश में ही प्रदर्शित करता हो। इससे स्थानीय समुदाय आर्थिक और सामाजिक तौर पर लाभान्वित होता है। यह पर्यटन के ज्यादा समृद्ध अनुभव के लिए पर्यटकों और स्थानीय लोगों के बीच संवाद को मुमकिन बनाता है। ग्रामीण पर्यटन अनिवार्य तौर पर गांवों में होने वाली गतिविधि है। इस बहुआयामी गतिविधि में खेत/कृषि पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, प्राकृतिक पर्यटन, साहसिक पर्यटन और ईको पर्यटन शामिल हैं। पारंपरिक पर्यटन के विपरीत इसकी कुछ अपनी विशिष्टताएं हैं। मसलन, यह अनुभव–आधारित है और इसके स्थल कम आबादी वाले हैं। यह ज्यादातर प्राकृतिक परिवेश में होने के अलावा मौसम और स्थानीय घटनाओं पर निर्भर होता है। इसके अलावा, यह संस्कृति, विरासत और परंपराओं के संरक्षण पर आधारित है।

क्यों महत्वपूर्ण है ग्रामीण पर्यटन

1. भारत अपने गांवों में बसता है।
2. देश की अधिकतम आबादी गांवों में है। इस आबादी का ज्यादातर हिस्सा अपनी जिंदगी बसर करने के लिए खेती पर निर्भर है। उसके पास आजीविका का कोई भी वैकल्पिक जरिया मौजूद नहीं है।
3. ग्रामीण पर्यटन में गांवों में रहने वाले युवाओं समेत कुशल

ग्रामीण पर्यटन स्थल और उनकी विशिष्टताएं (31 मार्च, 2011 की स्थिति)

राज्य	गांव और जिला		विशिष्टता
अरुणाचल प्रदेश	1.	गांव रेंगो, जिला पूर्वी सियांग	संस्कृति और बांस–बेंत हस्तशिल्प
	2.	गांव लिगू, जिला अपर सुबंसिरी	संस्कृति
	3.	गांव इगो निकते, जिला सियांग	संस्कृति
	4.	गांव नामपोंग, जिला जिला चांगलांग	संस्कृति
	5.	गांव डेके, जिला पश्चिमी सियांग	जनजातीय संस्कृति
असम	6.	दुर्गापुर, जिला गोलाघाट	बांस शिल्प और खानपान
	7.	देहिंग पटाकाई क्षेत्र, जिला तिनसुकिया	संस्कृति और ईको पर्यटन
	8.	सुआलकुची, जिला कामरूप	पट्टा और मोगा रेशम बुनाई
	9.	अशरीकांडी, जिला धुबरी	टेराकोटा कला
मणिपुर	10.	खोंगियोन, जिला थोउबल	मणिपुर नृत्य
	11.	गांव नोनी, जिला तामेंगलांग	मणिपुर नृत्य
	12.	आंद्रो, जिला पूर्वी इंफाल	बांस शिल्प
	13.	गांव लियाई, जिला सेनापति	संस्कृति
मेघालय	14.	गांव लालौंग, जिला जैंतिया हिल्स	साहसिक पर्यटन
	15.	गांव सासातग्रे, जिला पश्चिमी गारो हिल्स	बांस शिल्प
	16.	गांव मावलिननौंग, जिला पूर्वी खासी हिल्स	ईको पर्यटन
मिजोरम	17.	गांव थेनजॉल, जिला सेरछिप	हथकरघा और संस्कृति
नगालैंड	18.	मोपुनचुपकेत, जिला मोकोकचुंग	शॉल बुनाई
	19.	अवाचेखा, जिला जुन्हेबोतो	जनजातीय संस्कृति
	20.	चांगतोंगिया, जिला मोकोकचुंग	जनजातीय संस्कृति
	21.	लेशुमी, जिला फेक	जनजातीय संस्कृति
	22.	थेतसुमी, जिला फेक	साहसिक पर्यटन
	23.	कुकीदुलौंग, जिला दिमापुर	साहसिक पर्यटन
	24.	लौंगसा, जिला मोकोकचुंग	जनजातीय संस्कृति
सिक्किम	25.	मितिखू, जिला फेक	जनजातीय संस्कृति
	26.	चुंगली यिमती, जिला त्वेनसांग	जनजातीय संस्कृति
	27.	गांव लौंगजाम, जिला जुन्हेबोतो	कला और काष्ठ शिल्प, हथकरघा
	28.	गांव शेना ओल्ड, जिला जुन्हेबोतो	
	29.	गांव लौंगीदांग, जिला वोखा	ट्रेकिंग और पक्षी अवलोकन
	35.	गांव जौबारी, जिला दक्षिणी सिक्किम	साहसिक और ईको पर्यटन
	36.	गांव तुमिन, जिला पूर्वी सिक्किम	संस्कृति
	37.	गांव श्रीजंगा मार्तम, जिला पश्चिमी सिक्किम	संस्कृति
	38.	गांव दरप, जिला पश्चिमी सिक्किम	ईको पर्यटन
	39.	गांव मारतेंगा गौरवरण, जिला पूर्वी सिक्किम	संस्कृति और पारंपरिक जीवनशैली
	40.	गांव पेंदम गादीबुदांग, जिला पूर्वी सिक्किम	संस्कृति
त्रिपुरा	41.	कमला सागर, जिला पश्चिमी त्रिपुरा	ऐतिहासिक पर्यटन
	42.	जंपुई हिल्स, जिला उत्तरी त्रिपुरा	ईको पर्यटन
	43.	दुर्गाबाड़ी, जिला पश्चिमी त्रिपुरा	चाय बागान
	44.	देवीपुर, जिला पश्चिमी त्रिपुरा	कृषि
	45.	मलयानगर, जिला पश्चिमी त्रिपुरा	जनजातीय संस्कृति और ईको पर्यटन
	46.	गांव वनबीथी, जिला पश्चिमी त्रिपुरा	ईको पर्यटन और चाय बागान
	47.	गांव हरिजुला, जिला दक्षिण त्रिपुरा	ईको पर्यटन
	48.	गांव कालापनिया, जिला सोनामारा सब–डिवीजन	धार्मिक पर्यटन
	49.	गांव सरसिमा, जिला बेलोनिया	ईको पर्यटन
	50.	गांव बागबाड़ी, जिला सदर सबडिवीजन	ईको पर्यटन

और अकुशल दोनों तरह के कामगारों के लिए बड़े पैमाने पर रोजगार पैदा करने की अपार क्षमता है।

4. ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देकर गांवों से शहरों की ओर पलायन को घटाया जा सकता है।
5. यह महिलाओं को अर्थव्यवस्था की मुख्यधारा में योगदान करने का बेहतरीन अवसर देकर उनके सशक्तीकरण को बढ़ावा देता है।
6. यह ग्राम–स्तर के संसाधनों और परिसंपत्तियों के अधिकतम उपयोग का अवसर मुहैया कराता है।
7. यह ग्रामीणों के बनाए कला और हस्तशिल्प उत्पादों के लिए राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय मंच मुहैया कराता है।
8. यह ग्रामीण खानपान, त्यौहारों और पोशाकों का प्रचार–प्रसार करता है।
9. ग्रामीण पर्यटन आदिवासियों और अन्य समुदायों की सांस्कृतिक पहचान को भी बढ़ावा देता है।
10. यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बल देने के अलावा इसे वैश्विक अर्थव्यवस्था से जोड़ता है।

पूर्वोत्तर राज्यः प्राकृतिक सुंदरता और सांस्कृतिक विविधता का खजाना

हिमनदों, जलाशयों, दर्रों, घने जंगल वाली पर्वत शृंखलाओं और नदियों से परिपूर्ण भारत के पूर्वोत्तर कोने के राज्य प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर हैं। हिमालय की पूर्वी शृंखला और उसकी तराई तथा कई अन्य पर्वत शृंखलाओं ने इन राज्यों को वनस्पतियों और जंतुओं का खजाना बना दिया है। इस क्षेत्र में रहने वाले समुदायों के रीति–रिवाजों, संस्कृतियों, परंपराओं और भाषाओं ने इस प्राकृतिक खजाने में चार चांद लगाए हैं। आठ राज्यों वाले इस क्षेत्र की नैसर्गिक और सामाजिक सुंदरता ने इसे अंतर्राष्ट्रीय और भारतीय सैलानियों के लिए विशिष्ट और सम्मोहक पर्यटन क्षेत्र बना दिया है। मानव निर्मित पार्कों, अभयारण्यों तथा नेपाल, भूटान, चीन, म्यांमार और बांग्लादेश से लगती अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं की वजह से भी यह क्षेत्र पर्यटन के 'हॉटस्पॉट' में तब्दील हो गया है।

2016 में भारतीय सैलानियों के लिए चोटी के पांच पर्यटन राज्य–तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश और कर्नाटक रहे। उसी साल अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के लिए चोटी के पांच गंतव्य राज्य तमिलनाडु, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, दिल्ली और पश्चिम बंगाल थे। पूर्वोत्तर राज्यों में भारतीय और विदेशी सैलानियों के आगमन में वृद्धि का रुझान मिला–जुला रहा है। कुछ राज्यों में सैलानियों के आगमन में बढ़ोतरी संतोषजनक रही है। लेकिन असम, मणिपुर और नगालैंड समेत कुछ राज्यों में यह बढ़ोतरी अपेक्षाकृत नहीं है।

पूर्वोत्तर भारत के राज्यों में ग्रामीण पर्यटन

मुख्य तौर पर ग्रामीण परिवेश वाले पूर्वोत्तर क्षेत्र के आठ राज्यों का देश के क्षेत्रफल में 7.98 प्रतिशत और आबादी में 3.76 प्रतिशत हिस्सा है। क्षेत्र की 81 प्रतिशत से अधिक आबादी ग्रामीण इलाकों में रहती है। इस क्षेत्र के राज्यों के निवासियों का रहन–सहन आमतौर पर ग्रामीण है। पूर्वोत्तर क्षेत्र में बुनियादी तौर पर ग्रामीण पर्यटन के लिए ही संभावनाएं हैं। ये संभावनाएं क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता और इसके जातीय समूहों के सामाजिक–सांस्कृतिक रीति–रिवाजों में अंतर्निहित हैं। प्राकृतिक और सांस्कृतिक संसाधन ही इस क्षेत्र की मुख्य विशेषताएं हैं।

पूर्वोत्तर क्षेत्र के राज्यों में ग्रामीण विकास की संभावनाओं के दोहन के उद्देश्य से पर्यटन के सिद्धांत के इर्द–गिर्द एक मजबूत समेकित विकास रणनीति निश्चित तौर पर उपयोगी होगी। क्षेत्र के सभी आठ राज्यों ने पर्यटन और खासतौर से ग्रामीण पर्यटन के महत्व को समझा है। इन सब ने राज्य पर्यटन नीतियां बनाई हैं जिनमें ग्रामीण पर्यटन को समुचित स्थान दिया गया है। वास्तव में राज्य पर्यटन नीति समूचे प्रांत के लिए ही होती है। मगर इन राज्यों में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच लकीर खींचना बहुत मुश्किल है। इसलिए उनकी पर्यटन नीति मूलतः ग्रामीण पर्यटन

पूर्वोत्तर राज्यों में समुदाय-आधारित ईको पर्यटन

प्रकृति के अद्भुत सौंदर्य और जनजातीय संस्कृति एवं सभ्यता की धरोहरों से अगर आप रूबरू होना चाहते हैं तो आपको भारत के पूर्वोत्तर राज्यों की सैर को निकलना होगा।

पूर्वोत्तर क्षेत्र में 'सेवन सिस्टर्स' कहलाने वाले सात राज्यों के साथ फूलों के प्रदेश सिक्किम को भी जोड़ा जाता है। इस प्रकार पूर्वोत्तर राज्यों की कुल संख्या आठ है। पूर्वोत्तर क्षेत्र में आने वाले आठ राज्य हैं– असम, मणिपुर, त्रिपुरा, सूर्योदय का प्रदेश अरुणाचल, सुहानी जलवायु के लिए प्रसिद्ध मिजोरम, मेघों का घर कहलाने वाला मेघालय तथा अनूठी संस्कृति का धनी नगालैंड। वैसे तो इन सभी पूर्वोत्तर राज्यों की अपनी–अपनी विशिष्ट संस्कृति एवं सभ्यता है, लेकिन मेघालय के बारे में खास बात यह है कि सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में यह राज्य तेजी से विकास कर रहा है।

कुल 2,65,000 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल में फैला आठ राज्यों वाला पूर्वोत्तर क्षेत्र तरह–तरह के जीव–जंतुओं और पेड़–पौधों के अलावा लोक संस्कृति तथा कलाओं से भरपूर है। सौ से अधिक जनजातियों एवं उपजातियों का निवास इस क्षेत्र में है।

अपने अछूते सौंदर्य तथा जैव–विविधता एवं सांस्कृतिक विविधतायुक्त पूर्वोत्तर क्षेत्र देशी एवं विदेशी पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र यहां आदिवासी संस्कृति के रूप में परंपरागत त्योहारों, नृत्यों एवं लोककलाओं का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। यहां अनेक प्राचीन प्रासाद एवं मंदिर भी हैं। बौद्ध संस्कृति के परिचायक बौद्ध मठ भी यहां बहुतायत में देखने को मिलते हैं। परंपरागत शिल्प यानी दस्तकारी व कारीगरी का अनूठा कौशल भी इन राज्यों में दृष्टिगोचर होता है। इन राज्यों में अनेक संग्रहालय तथा ग्राम संस्कृति केंद्र (विलेज कल्चर सेंटर) भी हैं। पिछले कुछ वर्षों से इन राज्यों में पारिस्थितिकी ग्रामों यानी ईको विलेजेस की अवधारणा भी जोर पकड़ती जा रही है।

पूर्वोत्तर क्षेत्र में समुदाय–आधारित ईको पर्यटन का चलन भी हाल ही में देखने को मिल रहा है। हालांकि इस क्षेत्र के लिए फिलहाल एक नई संकल्पना है लेकिन स्थानीय एवं जनजातीय लोगों में अपने–अपने राज्यों की जैवविविधता एवं सांस्कृतिक विविधता के संरक्षण की भावना बलवती होती जा रही है। तभी अपने गांवों एवं पवित्र समझे जाने वाले वनों (सैक्रेड फॉरेस्ट) के संरक्षण में ये लोग विशेष रूचि ले रहे हैं। खासकर मेघालय, नगालैंड, अरुणाचल प्रदेश एवं असम में कुछ आदिवासी गांवों का विकास किया गया है। इन गांवों में उनकी परंपरागत संस्कृति व शिल्प, खानपान और रहन–सहन तथा आवास के विभिन्न प्रकारों को प्रदर्शित किया जाता है ताकि पर्यटक इनकी तरफ आकर्षित हों तथा यहां रहकर उनकी परंपरागत संस्कृति एवं सभ्यता से परिचित हो सकें। इस प्रकार ईको पर्यटन को बढ़ावा मिलने के साथ–साथ इससे समुदायों की दायित्वपूर्ण भागीदारी भी सुनिश्चित होती है जो समुदाय–आधारित ईको पर्यटन की सफलता के लिए आवश्यक हैं।

नगालैंड में ऐसे ही कुछ ईको–परिसर हैं जिनमें किसामा विलेज' तथा 'ट्योप्लेमा टूरिस्ट विलेज' का विशेष उल्लेख किया जा सकता है। इसी प्रकार मेघालय जो अपनी पहाड़ियों, झरनों तथा विश्व के सर्वाधिक वर्षापात वाले राज्य के रूप में प्रसिद्ध है, के दक्षिणी पठार (चेरापूंजी के पास) के अंचलों, जैसेकि मॉलिमॉन्ग तथा लैटकिन्सन में भी ऐसे ही ईको या पर्यटक गांवों का विकास किया गया है। इन गांवों का एक विशेष, आकर्षण है पौधों की जीवित जड़ों से बना पुल, जिसे 'डबल डैकर' या लिविंग रूट ब्रिज' भी कहते हैं। इस ब्रिज का निर्माण रबड़ प्रजाति के फाइटा इलास्टिका नामक कुछ विशेष पौधों, जो मेघालय में पाए जाते हैं, की जीवित जड़ों से हुआ है। इस पुल को पिछले सौ से भी अधिक वर्षों से संरक्षित रखा गया है। यहां यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि इस परंपरागत प्राचीन 'रूट ब्रिज' के अलावा मेघालय के विकास के लिए नए पुलों का निर्माण भी किया जा रहा है। बिल्डर्स अब स्टील रोप एवं आधुनिक टेक्नोलॉजी से मेघालय की जलधाराओं एवं नदियों के ऊपर ब्रिज बना रहे हैं।

लोकटक झील, मणिपुर

मणिपुर अपनी विशिष्ट लोकटक झील के लिए प्रसिद्ध है। यह विशेष झील, जो लगभग 300 वर्गमीटर के क्षेत्रफल में फैली हुई है, इम्फाल से करीब 53 किलोमीटर दूर विशुपुर जिले में स्थित है। अपनी तैरती प्रकृति के कारण इसे 'फ्लोटिंग लेक' भी कहते हैं। यह झील पुनः बिजली (हाइड्रो पावर) के उत्पादन, सिंचाई तथा आसपास के क्षेत्रों में पेयजल की आपूर्ति तथा मछुआरों के लिए आमदनी का स्रोत है। लोकटक झील जैवविविधता की दृष्टि से अत्यंत संपन्न है। यह जलीय पक्षियों एवं जीव–जंतुओं के लिए विशेष आश्रय प्रदान करती है। यहीं मणिपुरी संगाई हिरण का भी निवास है।

दो राय नहीं कि जैव–विविधता एवं सांस्कृति विविधता से ओत–प्रोत पूर्वोत्तर राज्यों में समुदाय–आधारित ईको पर्यटन की असीम संभावनाएं हैं। लेकिन, स्थानीय एवं जनजातीय लोगों की भागीदारी को सुनिश्चित करने के लिए उनमें जागरूकता उत्पन्न किए जाने की आवश्यकता है। साथ ही पर्यटन से प्राप्त आर्थिक लाभों को उन तक पहुंचाया जाना भी आवश्यक है ताकि उनके जीवन–स्तर में सुधार हो और वे खुशहाली की जिंदगी जिएं।

नीति ही है। राज्य पर्यटन नीति का बुनियादी उद्देश्य ग्रामीण पर्यटन और बहुरंगी ग्राम्य जीवन को बढ़ावा देकर गांववासियों के विकास और उनके जीवन की स्थितियों में सुधार लाने के अलावा उनकी आमदनी को बढ़ाना है।

पूर्वोत्तर राज्यों के ग्रामीण पर्यटन स्थल और उनकी विशिष्टताएं

क्षेत्र के राज्यों में ग्राम जीवन, कला, संस्कृति और विरासत के ग्रामीण क्षेत्रों में ही प्रदर्शन के मकसद से कुछ गांवों का चयन किया गया है। इन गांवों में कला और शिल्प तथा हथकरघा और वस्त्र की विशिष्टताओं के अलावा मोहक प्राकृतिक परिवेश भी है। इस पहलकदमी का उद्देश्य पर्यटन और उसके सामाजिक–आर्थिक फायदों को गांववासियों तक फैलाना है। इसके तहत ग्रामीण पर्यटन को प्राथमिक पर्यटन उत्पाद के तौर पर बढ़ावा दिया जा रहा है।

अरुणाचल प्रदेश में रोजगार सृजन और आर्थिक विकास हेतु ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा दिया जा रहा है। स्थानीय समुदायों की आजीविका को मजबूत कर तथा गांवों की संस्कृति के संरक्षण और विकास के जरिए समुदाय प्रबंधित ग्रामीण पर्यटन का मॉडल तैयार करने की कोशिश की जा रही है। ग्रामीण पर्यटन का उद्देश्य गांवों से हस्तशिल्पियों के पलायन की समस्या से निपटना और पर्यटन उद्योग में लैंगिक समानता को बढ़ावा देना है। ग्रामीण पर्यटन से महिलाओं को काफी रोजगार मिलता है और यह उन्हें आय की गतिविधियों के स्वतंत्र अवसर मुहैया कराता है।

असम में विशाल प्राकृतिक और सांस्कृतिक संसाधनों के उपयोग पर ध्यान केंद्रित किया गया है। ये संसाधन शहरी केंद्रों के अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में भी रोजगार और आमदनी पैदा करने वाले बेहद आकर्षक पर्यटन उद्योग का आधार बनेंगे। मेघालय में राज्य की सपन्न सांस्कृतिक विरासत और प्राकृतिक सौंदर्य पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इसके अनुसार ग्रामीण पर्यटन यह सुनिश्चित करेगा कि पर्यटक शहरों से गांवों की ओर जाएं। इससे वे राज्य की अनूठी संस्कृति और विरासत से परिचित होंगे जो उन्हें तरोताजा और सांस्कृतिक तौर पर समृद्ध बनाएगी।

मणिपुर में स्मारकों और पुरातात्विक अवशेषों समेत सांस्कृतिक आकर्षण के केंद्रों, कला, हथकरघा और हस्तशिल्प तथा रंगारंग मेलों और त्यौहारों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। पर्यटन तथा उसके सामाजिक–आर्थिक लाभों के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रसार के लिए अतिथि गृह आवास के सिद्धांत सहित गांवों पर केंद्रित प्राकृतिक पर्यटन को मणिपुर के एक महत्वपूर्ण पर्यटन उत्पाद के तौर पर प्रोत्साहित किया जा रहा है।

मिजोरम में अनूठी प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत स्थानीय लोगों के लिए आजीविका को बढ़ाने के विकल्पों के अवसर प्रदान करती है। नगालैंड में स्थानीय संसाधनों, सामाजिक और आर्थिक साधनों तथा अन्य विशेषताओं की व्यापक समझ के आधार पर राज्य में ग्रामीण, जातीय, सांस्कृतिक, ईको और साहसिक पर्यटन को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इसी तरह सिक्किम में जीवंत और विविधतापूर्ण संस्कृति के प्रदर्शन के लिए ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसके जरिए पर्यटकों को शहरी केंद्रों से गांवों की ओर मोड़ कर पर्यटन क्षेत्र के लाभों का ज्यादा लोगों तक विस्तार हेतु प्रयास किया जा रहा है। त्रिपुरा में प्राकृतिक सुंदरता की भरमार है। इसलिए राज्य में ईको पर्यटन और प्राकृतिक पर्यटन के विकास पर जोर दिया गया है।

निष्कर्ष

पर्यटन क्षेत्र के एक प्राथमिक स्वरूप के तौर पर ग्रामीण पर्यटन का उदय हो रहा है। इसमें ग्रामीण क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर रोजगार पैदा करने की व्यापक क्षमता है। भारत ग्रामीण क्षेत्रों में बसता है और इनका विकास किए बिना वह विकरित देश नहीं बन सकता। यही बात देश के पूर्वोत्तर क्षेत्र पर भी लागू होती है। अब तक दुनिया की नजरों से दूर रहा यह क्षेत्र प्राकृतिक और सांस्कृतिक संसाधनों से संपन्न है। ग्रामीण पर्यटन के जरिए स्थानीय निवासियों के हित में इन संसाधनों की संभावनाओं का उपयोग किया जा सकता है। ग्रामीण पर्यटन को प्रोत्साहन देना इन क्षेत्रों में रोजगार के अतिरिक्त अवसर पैदा करने, जीवन की स्थितियों में सुधार लाने और ग्रामीणों की आय बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

(लेखक राष्ट्रीय ग्रामीण विकास और पंचायती राज संस्थान, पूर्वोत्तर क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी में सहायक प्रोफेसर हैं।)
ई–मेल : **mkshrivastava.nird@gov.in**

ग्रामीण पर्यटन के विकास हेतु आधारभूत ढांचा

–डॉ. सुरभि गौड़

भारतीय ग्रामीण पर्यटन असीम संभावनाओं का क्षेत्र है क्योंकि इसका अधिकांश भाग अभी पर्यटन उदेश्य से अनावरित ही है। ग्रामीण पर्यटन के विकास में सहकारी संस्थाएं व्यापक भूमिका निभा सकती हैं। इसकी सफलता का उदाहरण केरल तथा उत्तराखंड के ग्रामीण पर्यटन में सफलतापूर्वक देखा गया है। अवसंरचना विकास एक बड़ी चुनौती है जिसे सरकारी व निजी सहभागिता से अधिक प्रभावी तरीके से पूरा किया जा सकता है।

कोई भी ऐसा पर्यटन जो ग्रामीण जीवन, कला, संस्कृति और ग्रामीण स्थलों की धरोहरों को दर्शाता हो, जिसमें स्थानीय समुदाय को आर्थिक और सामाजिक लाभ पहुंचता हो, साथ ही पर्यटकों एवं स्थानीय लोगों के संवाद से पर्यटन अनुभव के अधिक समृद्ध बनने की संभावना हो तो उसे 'ग्रामीण पर्यटन' कहते हैं। ग्रामीण पर्यटन का अनुभव प्राकृतिक, सांस्कृतिक, पूंजी और मानव के माध्यम से बनाया जा सकता है। इसके लिए ग्रामीण क्षेत्रों में स्वदेशी संसाधनों को पर्यटकों के लिए आकर्षक बनाना होगा।

भारतीय गांवों का फैलाव महान हिमालय से लेकर थार रेगिस्तान, हरे–भरे जंगलों और सुंदर समुद्र तटों तक फैला हुआ है। इस प्राकृतिक विविधता के साथ विभिन्न जाति, समुदाय के लोगों ने उदासीन तरीकों से पर्यावरण के साथ आत्मसात करते हुए समृद्ध संस्कृति और परंपराओं का विकास किया जोकि वास्तव में भारत को एक 'अविश्वसनीय' गंतव्य बनाती है। ग्रामीण पर्यटन अनिवार्यतः एक ऐसी गतिविधि है जो ग्रामीण इलाकों में संचालित होती है। भारत ग्रामीण सांस्कृतिक रंगों एवं विरासतों से धनी राष्ट्र है। साथ ही, यह ग्रामीण भौगोलिक व आर्थिक विविधता के चलते आंचलिक विशिष्टताओं से समृद्ध है। ग्रामीण परिवेश, क्षेत्रीय तीज–त्यौहार, उत्सव, पूजा पद्धतियां, पाक कलाएं, नृत्य–गान आदि ग्रामीण पर्यटन में व्यापक एवं विविधतापूर्ण संभावनाएं हैं।

विश्व भ्रमण और पर्यटन परिषद की रिपोर्ट के अनुसार देश की जी.डी.पी. योगदान के संदर्भ में भारत दुनिया की सातवीं सबसे बड़ी पर्यटन अर्थव्यवस्था है। आज वैश्वीकरण व लोकतंत्र के विश्वव्यापी विस्तार ने भी पर्यटन को और अधिक समावेशी बनाया है। साथ ही, भौतिकवादी, उपभोक्तावादी प्रकृति के शहरी क्षेत्र में बढ़ते प्रभाव ने शांत, सामंजस्यपूर्ण एवं सहयोगात्मक ग्रामीण परिवेश की पर्यटन संभावनाओं को और बढ़ा दिया है। ऐसे में ग्रामीण अर्थव्यवस्था को विस्तार देने एवं पर्यटन उद्योग को नए आयाम देने हेतु आधारभूत संरचना का ग्रामीण क्षेत्रों में विस्तार एक बड़ी आवश्यकता है।

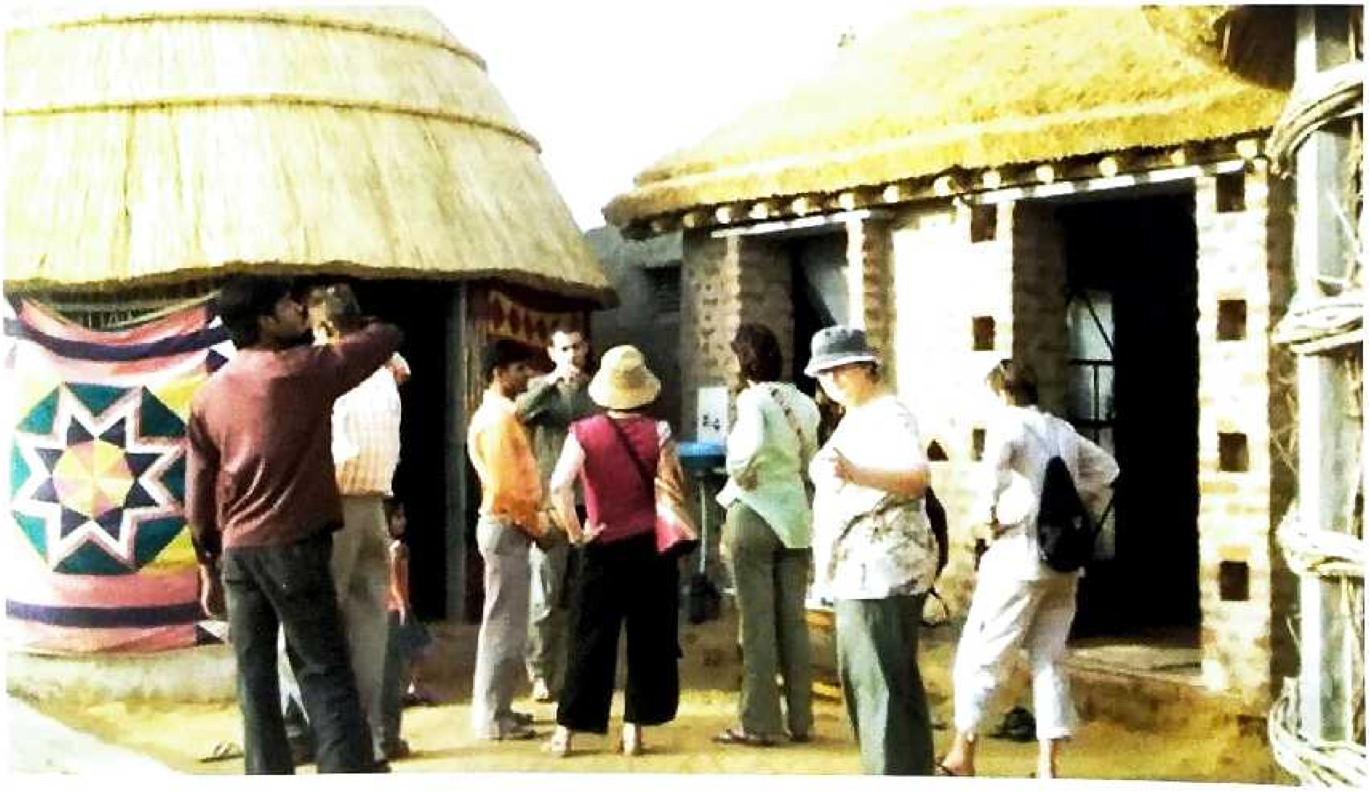

ग्रामीण पर्यटन हेतु आधारभूत ढांचे के महत्वपूर्ण आयाम

शैक्षणिक ढांचाः ग्रामीण शिक्षा का विस्तार ताकि मेहमान व मेजबानों में व्यापक सांस्कृतिक संवाद स्थापित हो सके।

संचार ढांचाः टेलीफोन, मोबाइल, टी.वी., इंटरनेट आज अनिवार्य आवश्यकता बन चुकी है। ग्रामीण क्षेत्रों में इनकी सुचारू उपलब्धता पर्यटकों को आगमन, ठहराव व प्रस्थान सभी स्तरों पर सहायता करती है।

यातायात एवं परिवहन ढांचाः सड़क, यातायात साधनों की उपस्थिति, अर्थव्यवस्था के सुचारू प्रवाह हेतु धमनियों के समान होती है तथा ग्रामीण क्षेत्र की समृद्ध विरासत का व्यापक उपयोग इनके अभाव में अधूरा ही है।

विद्युत जलापूर्ति ढांचाः पर्यटक अधिकांशतः उपभोक्तावादी मानसिकता के साथ दूसरे क्षेत्रों की यात्रा करते हैं। अतः सूखा–प्रभावित ग्रामीण क्षेत्र, दूरस्थ व दुर्गम ग्रामीण क्षेत्रों में जलापूर्ति एवं विद्युतापूर्ति सभी पर्यटन आवश्यकताओं की पूर्ति का आधार होते हैं।

संस्थागत ढांचाः सरकारी व प्रशासनिक पहल का अभाव ग्रामीण पर्यटन के समक्ष बड़ी चुनौती रहा है। अतः ग्रामीण पर्यटन के विकास हेतु संस्थागत ढांचे की उपस्थिति अति–महत्वपूर्ण है जैसे, पृथक अधिकारी, बजट, वेबसाइटों की स्थापना आदि पर्यटन को नए आयाम दे सकते हैं। सरकार द्वारा विशिष्टता के आधार पर प्रचार व प्रमोशन करना, पृथक चिंह वितरण, भौगोलिक संकेतक, व्यापार चिंह आदि प्रदान कर ग्रामीण पर्यटन के तहत सांस्कृतिक व हथकरधा, शिल्प आदि को अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिलाने के प्रयास इस क्षेत्र में 'मील का पत्थर' साबित हो सकते हैं।

पर्यावरण संरक्षण एवं स्वच्छता उपाय

पर्यटन स्थलों पर पर्यावरण की सुरक्षा एवं विकास के लिए विशेष ध्यान देना जरूरी है। शुद्ध पर्यावरण पर्यटकों को आकर्षित करता है। आबोहवा की शुद्धता के लिए बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण किया जाना चाहिए। कहीं पर भी जल प्रभाव और गंदगी ना हो, इस पर ध्यान दिया जाए। स्वास्थ्य एवं स्वच्छता की दृष्टि से भी स्वीकृत मानदंडों का पालन करते हुए ही निर्माण कार्य किए जाएं।

ग्रामीण पर्यटन की ढांचागत चुनौतियां

- आधारभूत अवसंरचनाओं का अविकसित होना;
- शिक्षा, स्वास्थ्य, विद्युत जैसी आधारभूत आवश्यकताओं की अनियमित आपूर्ति;
- आर्थिक ढांचों जैसे बैंक, ए.टी.एम आदि का अभाव;
- संचार ढांचा अपर्याप्त होने से संवाद की समस्या;
- बाजार का अविकसित होना।

उपर्युक्त आधारभूत चुनौतियों के चलते पर्यटन की असीम संभावनाओं के क्षेत्र 'ग्रामीण पर्यटन' का अभी पर्याप्त विकास नहीं हो पाया है। साथ ही, प्रशासन व सरकार के लिए ग्रामीण क्षेत्र आय के स्रोत के स्थान पर विकास की चुनौतियों वाला क्षेत्र बना हुआ है।

ग्रामीण पर्यटन के लाभ

- ग्रामीण पर्यटन क्षेत्र में रोजगार के नए अवसरों का सृजन, समावेशी आर्थिक विकास और विदेशी खजाने की आवक को बढ़ावा देता है।
- कृषि का वैज्ञानिकीकरण करने में सहायता तथा हस्तशिल्प व कृषि उत्पादों को पहचान व बाजार मिलता है।
- देश की सांस्कृतिक प्रभुता का विस्तार होता है।
- सरकारी कर के माध्यम से सरकारी आय में वृद्धि होती है।
- गांवों से शहरों की ओर पलायन में कमी आती है जिससे शहरों की सारणीय क्षमता का विस्तार होता है।
- आर्थिक जीवन–स्तर में वृद्धि से लोगों की जागरूकता व सहभागिता का विस्तार अंतिम व्यक्ति तक हो पाता है।
- सांस्कृतिक व प्राकृतिक धरोहरों का आर्थिक महत्व समझ आने पर उनका संरक्षण करने की जागरूकता बढ़ती है।
- सांस्कृतिक समागम होता है जिससे संस्कृति और अधिक पोषित एवं समृद्ध होती है।

सामाजिक उत्तरदायित्व एवं ग्रामीण पर्यटन

गांधी जी के अनुसार कोई भी धनी व्यक्ति अपनी संपत्ति का मालिक ना होकर उसका ट्रस्टी होता है। चूंकि वह लाभ, जो वह कमाता है उसमें समाज के हर वर्ग की एक भूमिका होती है। इसी संकल्पना ने सामाजिक उत्तरदायित्व की संकल्पना को जन्म दिया। साथ ही, आज यह विश्व–स्तर पर स्वीकार किया गया कि निजी क्षेत्र को अपनी संपत्ति का कुछ अंश समाज के उत्थान में सहायक गतिविधियों में निवेश करना चाहिए।

भारत में कंपनी एक्ट 2013 की धारा 135 में यह अनिवार्य प्रावधान किए गए हैं कि कंपनी को अपने लाभांश का 2 प्रतिशत अनिवार्यतः सामाजिक निजी उत्तरदायित्व के तहत खर्च करना चाहिए। कंपनी ग्रामीण विकास के क्षेत्र को इस हेतु चुन सकती है; पर्यावरण संरक्षण भी एक महत्वपूर्ण पक्ष है। ऐसे में ग्रामीण क्षेत्र पर्यटन विस्तार एक बड़ा आयाम बन सकता है। कंपनी ग्रामीण आधारभूत संरचना यथा, रोड, संचार, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि की दशा में सुधार कर सकती है; साथ ही, कंपनी ग्रामीण हथकरधा व हस्तशिल्प उद्योगों के उत्पादों की ब्रांडिंग, प्रदर्शनी आयोजन, प्रचार आदि पक्षों में निवेश कर सकती है; निजी कंपनियां वृक्षारोपण, वन–संवर्धन कर ग्रामीण पर्यावरणीय गुणवत्ता में सुधार कर उसे और अधिक पर्यटन–उन्मुखी बना सकती हैं।

निजी क्षेत्र के दायित्व

- ग्रामीण पर्यटन को एक लाभकारी उद्योग बनाने हेतु अपने अनुभवों का प्रयोग निजी उद्योग करे तथा लाभ में स्थानीय समुदाय को सहभागी बनाएं।
- पर्यटकों की अपेक्षाओं व सुविधाओं से ग्रामीणों को अवगत कराएं व इस दिशा में प्रशिक्षित करें।
- स्थापित पर्यावरणीय व सांस्कृतिक मूल्यों में अनावश्यक हस्तक्षेप ना करें बल्कि विशिष्टता का संरक्षण व संवर्धन करने का प्रयास करें।

- निजी क्षेत्र वेबसाईट विकास, पर्यटकों हेतु विशेष पैकेज जैसे प्रचार एवं प्रमोशन से ग्रामीण पर्यटन को एक नई ऊंचाई प्रदान कर सकते हैं।
- निजी क्षेत्र, सिविल समाज, अलाभकारी सामाजिक संगठन ग्रामीणों को मेजबानी प्रशिक्षण, संवाद, प्रबंधन आदि का प्रशिक्षण दे ग्रामीण पर्यटन को स्थिरता व आकर्षण प्रदान कर सकते हैं।
- निजी क्षेत्र हेतु गावों को गोद लेकर उन्हें आदर्श पर्यटन गांव बना सकते हैं।
- निजी क्षेत्र विलुप्त होती लोक संस्कृति के संरक्षण हेतु विविध उपाय कर सकता है।
- उत्तरी पर्वतीय क्षेत्रों, दूरस्थ ग्रामों, दुर्गम जंगल व रेगिस्तानी क्षेत्र के गांवों, जहां की पर्यावरणीय खूबसूरती, सांस्कृतिक सौंदर्य कहीं अधिक व्यापक हैं, लेकिन अभी तक भुनाया नहीं गया है, नक्शे पर लाकर इस क्षेत्र के संभावना संवर्धन में निजी क्षेत्र की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है।
- हाल ही में हिंडालको कंपनी ने इस क्षेत्र में बहुत ही सराहनीय कदम उठाए हैं, इसी के समान अन्य निगमों को भी संपोषणीयता के साथ पर्यटन का प्रशिक्षण ग्रामीणों को देना चाहिए।
- पर्यटन के क्षेत्र में अपनी विशिष्टताओं को भुना कर अग्रणी रहे ग्रामों को पर्यटन मैप पर प्रदर्शित करना, उनकी केस स्टडी करना, उनको पुरस्कृत एवं प्रचारित करना ग्रामीण पर्यटन उद्योग हेतु संजीवनी का कार्य कर सकते हैं।

लोकप्रिय ग्रामीण पर्यटन केंद्र

- कच्छ एडवेंचर्स इंडिया (कच्छ में एक सामुदायिक पहल) कारीगरों के गांव व साल्ट डेजर्ट देखने की सुविधा; इत्मिनान लॉजेज पंजाबियत (ग्रामीण पंजाब से कृषि); हुडको ग्राम (शाम–ए–सरहद रिजोर्ट); चोखी धानी (राजस्थान) क्षेत्रीय सांस्कृतिक कलाएं एवं व्यंजन; केरल (ग्रामीण चिकित्सा पर्यटन); माझुली (असम); पुत्तुर (आंध्र प्रदेश) – कृषि, मैंग्रोव एवं रेशम उद्योग हेतु; चित्रकुट (छत्तीसगढ़), श्याम गांव (जोरहाट, असम); पिपली (ओडिसा); लाचेन सिक्किम, सुंदरवन ग्रामीण जीवन (पश्चिम बंगाल), बल्लभपुर डांगा (पश्चिम बंगाल) आदि महत्वपूर्ण पर्यटन गंतव्य के रूप में अपनी अंतर्राष्ट्रीय पहचान बनाने में सफल रहे हैं।
- पुष्कर, सूरजकुंड जैसे मेले, दिल्ली हाट, ट्राइबल हाट आदि से ग्रामीण व सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सकता है।
- उत्तर–पूर्व में हार्नबिल उत्सव की तरह सरकारी व निजी सहभागिता से स्थानीय त्यौहारों, मेलों, रंगों से सराबोर ग्रामीण पर्यटन को अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन नक्शे पर स्थापित किया जा सकता है।

निष्कर्ष

भारतीय ग्रामीण पर्यटन असीम संभावनाओं का क्षेत्र है क्योंकि इसका अधिकांश भाग अभी पर्यटन उदेश्य से अनावरित ही है। ग्रामीण पर्यटन के विकास हेतु प्रसार एवं संरक्षण के एकीकृत उपागम को अपनाने की आवश्यकता है। स्थानीय क्षेत्र के आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए स्थानीय लोगों का समावेश और उचित प्रशिक्षण जरूरी है। ग्रामीण पर्यटन के विकास में सहकारी संस्थाएं व्यापक भूमिका निभा सकती हैं। इसकी सफलता का उदाहरण केरल तथा उत्तराखंड के ग्रामीण पर्यटन में सफलतापूर्वक देखा गया है। अवसंरचना विकास एक बड़ी चुनौती है जिसे सरकारी व निजी सहभागिता से अधिक प्रभावी तरीके से पूरा किया जा सकता है। ग्रामीण पर्यटन का प्रभाव उस क्षेत्र के पर्यावरण व विशिष्टता पर नकारात्मक प्रभाव भी डाल सकता है। साथ ही, लाभ की चाह में वह अपना मूल स्वरूप भी खो सकता है। अतः इस संदर्भ में स्थानीय लोगों को व्यापक जागरूक करने की आवश्यकता है। सरकार व निजी क्षेत्र स्थानीय भाषा जैसी चुनौतियों से निपटने हेतु सॉफ्टवेयर विकास जैसे समाधान निकाल सकते हैं। भारतीय ग्रामीण पर्यटन एक भविष्य का उद्योग है जिसकी सफलता का आधार आज के प्रयास होंगे।

(लेखिका भारतीय सामाजिक विज्ञान शिक्षा परिषद, नई दिल्ली में अनुसंधान सहयोगी हैं।)

ई–मेल : **surbhi.gaur66@gmail.com**

ग्रामीण विरासत के विविध रंग

–नवीन कुमार, पवन कुमार

जब भारतीय संस्कृति, उसके रंगों, विविधता एवं सहजता की बात आती है तो हमारा ध्यान बरबस भारत की 'आत्मा' अर्थात गांवों की ओर चला जाता है। गांवों में आज भी भारतीय संस्कृति मूर्त–अमूर्त कलाओं के रूप में, जीवनशैली के रूप में संयोजित हैं। जो ना सिर्फ विदेशी बल्कि भारतीय शहरी जीवनशैली में जीवनयापन कर रहे यायावरों के लिए भी एक बड़ा आकर्षण है। ऐसे में जब पर्यटन विश्व अर्थव्यवस्था में एक बड़ा उद्योग बन चुका है, ग्रामीण पर्यटन एक संभावनाओं से परिपूर्ण विकल्प के रूप में सामने आया है।

जार्ज बर्नाड शॉ के अनुसार "भारतीय जीवनशैली प्राकृतिक और असली जीवनशैली की दृष्टि देती है। हम खुद को अप्राकृतिक मास्क से ढक कर रखते हैं। भारत के चेहरे पर हल्के निशान रचियता के हाथों के हैं।" उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है कि भारतीय संस्कृति का कैनवास ना सिर्फ विशाल है बल्कि विविधतापूर्ण रंगों एवं संकल्पों–विकल्पों का संयोजित रूप है जहां कई सदियों से सहिष्णुता, सहयोग और अहिंसा पुष्पित–पल्लवित होकर इसे विशिष्ट बनाती है।

पर्यटन की नई शाखा जिसे 'ग्रामीण पर्यटन' कहते हैं, धीरे–धीरे अपना खास स्थान बना रही है। न केवल सरकार के लिए बल्कि निजी क्षेत्र के लिए भी। लेकिन यह संकल्पना कहीं अधिक संवेदनशीलता रखती है क्योंकि इसका जुड़ाव पारंपरिक उपभोक्तावादी संस्कृति के बजाय संरक्षणवाद, प्रकृतिवाद, समावेशन, संप्रेषणीयता, संयोजन, सहिष्णुता व संवाद जैसे उच्च मूल्यों से है।

"भारत की आत्मा भारत के गांवों में बसती है", महात्मा गांधी जी का यह कथन अन्य पक्षों की भांति पर्यटन के क्षेत्र में भी सारगर्भित एवं सार्थक प्रतीत होता है। भारत के गांव संस्कृति की पोटली है; यही नहीं यहां की मूर्त–अमूर्त संस्कृति सहजता से ग्रामीण जीवन में घुलमिल गई। भारतीय अमूर्त–मूर्त संस्कृति के संयोजन का लाभ उठाने हेतु यह आवश्यक है कि इसकी भली प्रकार से पहचान की जाए।

आखिर है क्या हमारी ग्रामीण मूर्त–अमूर्त संस्कृति

मार्टिन लूथर किंग जूनियर के अनुसार 'दूसरे देश में, मैं पर्यटक के तौर पर जा सकता हूं, लेकिन भारत में, मैं तीर्थयात्री के रूप में आना चाहता हूं'। ग्रामीण मूर्त–अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर में शामिल हैं– ग्रामीण जीवन को सरस बनाते लोकगीत, लोकनृत्य, लोककलाएं, तीज–त्यौहार, मेले, उत्सव आदि। साथ ही, ग्रामीण आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु तैयार किए नवाचार; स्थापत्य कलाएं जैसे बावड़ी, जोहड़, झोपड़ियां, हवेलियां; ललित कलाएं जैसे ग्रामीण चित्रकलाएं, रंगोली, मेहंदी, पोशाकें आदि। ये सभी संयुक्त रूप से जुड़ी हुई एवं एकाकार हैं इन्हें पृथक कर नहीं देखा जा सकता है। इसका एक छोटा–सा उदाहरण है, राजस्थान के गांवों में पानी लेने जाती पनिहारी जिसके सिर इण्डणी, माण्डणों से सजे मटके होते हैं, लहरिया, हाथी दांत की चूड़ी और चमड़े की मोजड़ी पहने ये महिलाएं 'पणिहारी' 'इण्डणी' जैसे लोकगीत गाते हुए पानी लेने के मीलों के कष्टप्रद सफर को एक आनंदोत्सव में बदल देती हैं।

यही मूर्त–अमूर्त सांस्कृतिक विरासत ग्रामीण लोगों को कर्मठ, सहज, सरल, पर्यावरण प्रेमी एवं सहयोगी प्रकृति जैसे मूल्यों से सुशोभित करती है।

क्या कारण है इस इतनी रंगीन विरासत के

भारत के बारे में कहा जाता है ''कोस–कोस पर बदले पानी और चार कोस पर वाणी''। जोकि यहां के सांस्कृतिक सौंदर्य एवं विविधता को इंगित करता है। भारत के उत्तर में उदार हिमालय, संयमी तहजीब वाला गंगा का मैदान, रंगों से सराबोर रेगिस्तान, जीवन की हठ को संजोए दक्कन का पठार, हौसलों–सी डाडी पर्वतमालाएं, संभावनाओं से पूर्ण समृद्ध ऐसी भौगोलिक विशिष्टताएं हैं जहां एक ही शैली से जीवनयापन असंभव है।

प्रकृति–प्रदत्त इन चुनौतियों को सहज बनाने के प्रयास में समायोजन के स्थानीय तरीके विकसित हुए। फलस्वरूप क्षेत्रीय कृषि पद्धतियां, जल संरक्षण की पद्धतियां, भवन सामग्री विकसित हुई। इन्हीं भौगोलिक व जलवायु विविधताओं ने भारत की संस्कृति को गुलदस्ता बना दिया।

गांवों में इस संस्कृति को हम स्वाभाविक रूप में देखते हैं। लेकिन ग्रामीण संस्कृति की यह विरासत धीरे–धीरे अपना स्वरूप खो रही है जिसका बड़ा कारण आर्थिक ही है। बदलते आर्थिक परिवेश, शहरों की ओर पलायन, ग्रामीण संस्कृति के प्रति पूर्वाग्रह आदि अनेक पक्ष हैं जिससे आज इसके संरक्षा व संवर्धन की आवश्यकता महसूस होती है।

भारतीय ग्रामीण सांस्कृतिक विरासत एवं पर्यटन

''पृथ्वी पर कहीं स्वर्ग है तो यहीं है, यहीं है...'' यह कथन मानव मन की अमाप्य तलाश और भारत की अतुल्य खूबसूरती को बयां करता है। मानव की तलाश की यह प्रवृत्ति आज पर्यटन के रूप में एक बड़ा उद्योग बन चुकी है तथा भारतीय ग्रामीण सांस्कृतिक विरासत इसके लिए महत्वपूर्ण गंतव्य बन कर उभर रही है।

ग्रामीण संस्कृति क्यों है पर्यटकों का आकर्षण

- एक संस्कृति का मानव हमेशा दूसरी संस्कृति के बारे में जानना चाहता है तथा भारतीय ग्रामीण संस्कृति विदेशी पर्यटकों के साथ–साथ शहरी भारतीय पर्यटकों के लिए भी एक बड़ा आकर्षण है।
- आज की उपभोक्तावादी व शोरशराबे से परिपूर्ण संस्कृति से ऊबा हुआ पर्यटक शांत, सहज, सरल ग्रामीण संस्कृति के प्रति सहजता से आकृष्ट होता है।
- स्थानीय विशिष्टताएं जैसे हिमालय का सौंदर्य प्राकृतिक पर्यटन, शोध पर्यटन का एक बड़ा केंद्र बनकर उभरा है।
- स्थानीय रंग, हस्तकलाएं व कलाएं भी पर्यटकों को आकर्षित करते हैं तथा बहुत से पर्यटक इन्हें सीख कर अन्यत्र बड़ा आर्थिक लाभ भी कमाते हैं।
- स्थानीय जड़ी–बूटियां, चिकित्सा पद्धतियों ने चिकित्सा पर्यटन को बढ़ावा दिया है तथा केरल के अनेक गांव चिकित्सा पर्यटन का बड़ा केंद्र बनकर उभरे हैं।

कुछ महत्वपूर्ण ग्रामीण विरासतें

उत्तर भारत के गांव, उत्तर हिमालयी क्षेत्र के गांव अपने प्राकृतिक सौंदर्य, औषधियों व जड़ी–बूटियों के ज्ञान, आनंदमय जलवायु व रोमांचक पहाड़ी रास्तों के साथ अपनी भवन निर्माण शैली, ढलानों पर कृषि, पहाड़ी चित्रकला (कांगड़ा शैली) आदि के कारण पर्यटकों के लिए बड़ा आकर्षक बन कर उभरे हैं। साथ ही यहां पर्यावरण एवं स्वच्छता हेतु जागरूकता, 'होम स्टे', स्थानीय पेय व भोजन जैसे प्रयास पर्यटकों को काफी भा रहे हैं तथा वहां के लोगों को आजीविका का सतत विकल्प भी प्रदान कर रहे हैं।

उत्तर–पूर्व के गांव– उत्तर–पूर्व के लोग पूर्णतया प्रकृति के साथ साहचर्य के साथ जीवन जीते हैं। यहां की 'बम्बू आर्ट्स', भवन निर्माण, खिलौने, बर्तन, शिकार आदि में बांस का वैज्ञानिक प्रयोग, सिंचाई की बंबू विधि, पेड़ों की जड़ों से सेतु निर्माण, मणिपुरी, असमिया नृत्य, मार्शल आर्ट्स, हार्नबिल जैसे उत्सव यहां के गांवों की संस्कृति को अद्वितीय बनाते हैं जो पर्यटकों का न भूलने वाला अनुभव प्रदान करते हैं।

गंगा मैदान के गांव– गंगा का मैदान उर्वरता व अधिक बसाव वाला क्षेत्र है। यहां के गांवों जैसे हरियाणा में रागनी, पंजाब में भंगड़ा, उ.प्र. में नौटंकी, बिहार में मधुबनी की चित्रकला, मिथिला चित्रकला, बंगाल में मिठाइयां, कठपुतली, कालीघाट (शुद्ध ग्रामीण) चित्रकला स्वरूप आदि से पर्यटन को जोड़ा जा सकता है।

पश्चिम रेगिस्तान के गांव– यहां के गांवों में पर्यटन का विकास हुआ भी है तथा यहां असीम संभावनाएं भी हैं। यहां डेजर्ट सफारी, स्थानीय जल संरक्षण की विधियां, हवेलियां, छत्रियां, बावड़ियां, हस्तशिल्प जैसे डोरिया–लहरिया, प्रिंट, थेवा एवं उस्ता कला, कालबेलिया, घूमर, तेरहताली, अग्नि नृत्य, पशु मेले, ऐसे अनेक आकर्षण विदेशी व देशी पर्यटकों को बार–बार आकर्षित करते हैं।

दक्षिण भारत की पाक कलाएं– चिकित्सा की स्थानीय पद्धतियां, लोकनाट्य व गीतों की विशिष्ट द्रविड़ शैली, उत्तर भारत से पृथक भाषा, गीत, पहनावा, चावल व नारियल प्रधान व्यंजन, मार्शल आर्ट्स आदि यहां के गांवों में रची–बसी हैं। केरल–गोवा–महाराष्ट्र ने इस दिशा में सराहनीय कार्य भी किया है तथा भविष्य हेतु भी यहां अनेक संभावनाएं हैं। केरल की रंगोली, आंध्र प्रदेश के लकड़ी के खिलौने, केरल के स्थानीय रंगमंच, कर्नाटक के दालों की कृषि व बागवानी, तमिलनाडु के लोकनृत्य व कठपुतलियां यहां के ग्रामीण पर्यटन को एक नई ऊंचाई प्रदान कर सकते हैं।

जनजातीय ग्रामीण भारत : जनजातीय लोक संस्कृति पूर्णतः प्राकृतिक व विशिष्टतयामयी है। साथ ही, अनेक त्यौहार, कृषि, आवास सभी पर्यटकों के लिए पृथक अनुभव होता है। साथ

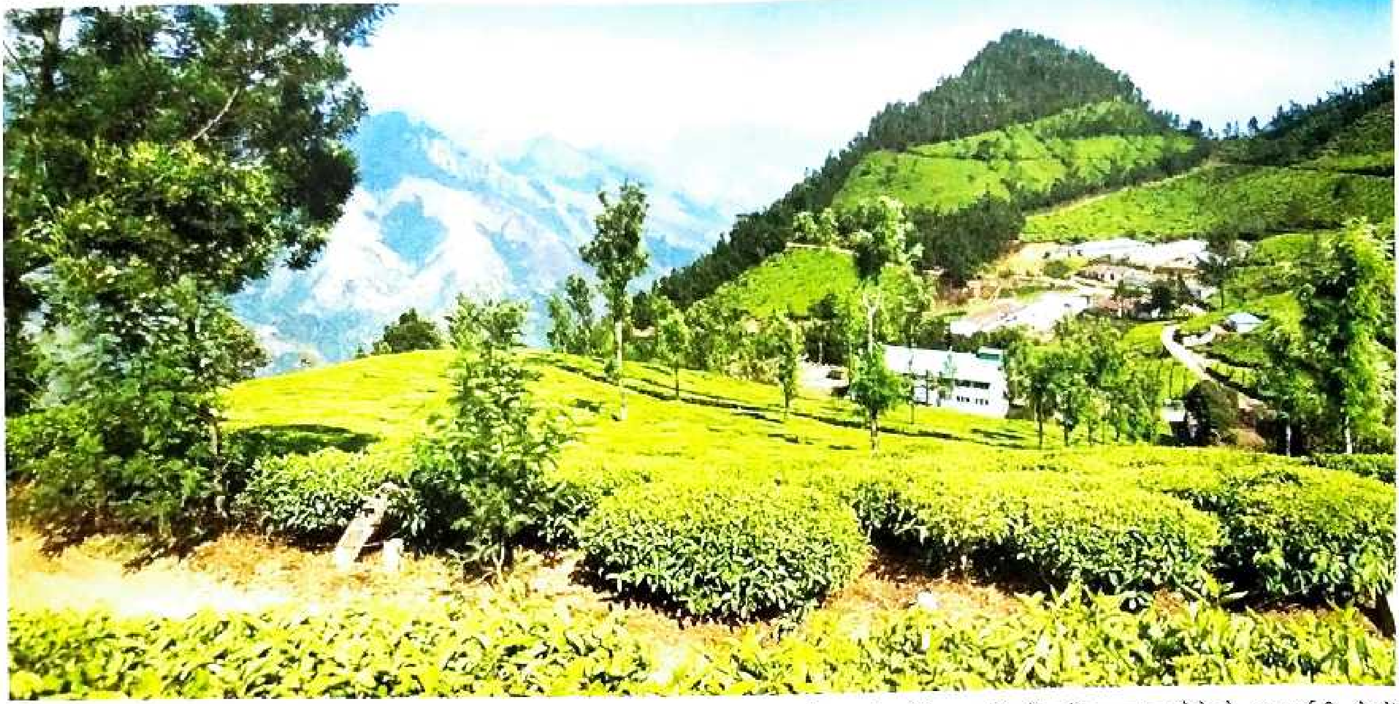

ही, वनोत्पादों का उपयोग कर रहना–पहनना–खाना, प्राकृतिक ध्वनियों से संबद्ध संगीत व लोकगीत पर्यटकों को मंत्रमुग्ध कर देता है। कालबेलिया जनजाति, भोण जनजाति ने काफी हद तक पर्यटन से खुद को जोड़ा भी है।

सफलता की कहानियां

- राजस्थान के पुष्कर, जैसलमेर, जोधपुर के ग्रामीणों ने स्वयं को पर्यटन से जोड़ा ही नहीं बल्कि ये सर्वाधिक लोकप्रिय पर्यटन (खासतौर से विदेशियों के लिए) गंतव्य स्थल बन गए हैं। साथ ही, इन्होंने सफलतापूर्वक ढांचागत विकास भी किया है जहां पर्यटकों को स्थानीय व्यजंन, लोकगीत, लोकनृत्य व संगीत के साथ हस्तशिल्प आदि एक ही स्थान पर मिल जाता है।
- हिमालयी क्षेत्र में हिमाचल व उत्तराखंड के गांवों में भी 'होम स्टे' की संकल्पना ने सफल पर्यटन की कहानी लिखी है। कुल्लू, कांगड़ा घाटी के गांव, मलाना आदि ने पर्यटन नक्शों पर अपनी प्रभावी उपस्थिति दर्ज करवाई है।
- केरल के कुमारकोम, बायनाड़ जैसे गांवों ने उत्तरदायी पर्यटन शुरू कर पर्यटन में खुद को मॉडल बनाकर प्रस्तुत किया है। साथ ही, पर्यटकों को लोककथाओं, गीतों द्वारा संस्कृति से पूर्णतः अवगत करवाया जाता है।

कुछ सुझाव

- बड़े शहरों के बाहर चयनित गांवों के सांस्कृतिक वृत्त बना कर ग्रामीण पर्यटन केंद्र बनाने चाहिए। ग्रामीणों को प्रशिक्षित करना चाहिए तथा इस क्षेत्र में सहकारिता को बढ़ावा देना चाहिए।
- ग्रामीण सांस्कृतिक धरोहरों को पहचान देने हेतु प्रदर्शनी, मेलों का आयोजन करना चाहिए जैसे पुष्कर, सूरजकुंड, दिल्ली हाट आदि।
- सफलतापूर्वक कार्य करने वाले गांवों को पुरस्कृत किया जाना चाहिए।
- ग्रामीण पर्यटन हेतु सार्वजनिक–निजी भागीदारी व कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व में सशक्त प्रयास करने चाहिए।

ग्रामीण पर्यटन के विस्तार से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गति मिलेगी; ग्रामीण अवसंरचना का विकास होगा जो भविष्य में स्मार्ट गांव, पर्यावरण पर्यटन, स्मार्ट टूरिज़्म, सांस्कृतिक पर्यटन का आधार बनेगा; ग्रामीण संस्कृति का संरक्षण एवं संवर्धन होगा; पर्यटकों के पास विकल्प बढ़ेंगे व विशिष्ट अनुभव प्राप्त होंगे, भारतीय सांस्कृतिक प्रभुता का विस्तार होगा; अनेक कलाओं का संरक्षण होगा; शहरों की ओर पलायन रुकेगा; पर्यटकों को प्रकृति के साथ रहने का अनूठा अनुभव मिलेगा।

संक्षेप में, ग्रामीण सांस्कृतिक विरासत अनंत है लेकिन अभी तक इसके महत्व को पूरी तरह से आंका नहीं गया है। ग्रामीण तौर–तरीकों में सब स्वाभाविक एवं विशिष्ट है। अभिवादन व स्वागत तिलक से लेकर, विदाई गीत के साथ विदा होने तक पर्यटन एक नई संस्कृति में भाव–विभोर रहेगा। भारतीय ग्रामीण सांस्कृतिक विरासत जहां संभावनाओं के क्षितिज खोलती है वहीं अगर इसका संरक्षण व संवर्धन नहीं हुआ तो यह अपने स्वरूप को खो देगी।

(लेखक द्वय क्रमशः राजस्थान विश्वविद्यालय में शोधार्थी एवं सहायक प्रोफेसर, चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय, भिवानी हैं।)

ई–मेल : kadiandse@gmail.com